श्रीगणेशाय नमः ॥

श्री रामरसामृतसागर नाटक ॥

सप्तम भाग ॥

छन्द ॥ (नैपथ्य)

जय जय जग बन्दन जय जलजा जय जानकी पति जगदीश हरिं । सुमिरौं श्री शारद शेष शिवा संकर्षण शंकर श्वेत बरं ॥ गाऊँ गुण गिरिधर गौरि गिरा गिरिजासुत गणपति सिद्धि करं । दामोदर दानौ दुष्ट दलं जय जय जय दारिद दोष दरं ॥

चौपाई ॥

रघुपति चित्रकूट बसि नाना । किये चरितशुचि सुधासमाना ॥
बहुरि राम अस मन अनुमाना । ह्वैहै भीर सबहि मोहिं जाना ॥
सकल मुनिनसन बिदाकराई । सीता सहित चलेदोउ भाई ॥
अत्री के आश्रम प्रभु गयऊ । सुनतमहामुनि हर्षितभयऊ ॥

प्रथमाङ्क * (दृश्य बन)

(अत्रि मुनि शिष्यों सहित बिराजमान हैं रामचन्द्र का सहित लक्ष्मण जानकी प्रवेश मुनि का बिनय पूर्बक सत्कार करि स्तुति करना)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सोरठा॥ (नैपथ्य)

प्रभु आसन आसीन, भरि लोचन शोभा निरखि।
मुनि बर परम प्रबीन, जोरि पाणि अस्तुति करत॥

अत्रि- पद॥

रघुनन्दन रूप निधान हरी॥ सुर मेदिनि कष्ट निहारो जबै। धरि रूप अनेक उबारो तबै॥ रघुनन्दन रूप निधान हरी॥ प्रभु वेद चुराय गयो जबहीं। सब देवन दुःख भयो तबहीं॥ तुम मीन रूप धरि आन हरी। रघुनन्दन रूप निधान हरी॥ लै धरणि पताल हृणाक्ष गयो। सब सृष्टि बिधाता नाश भयो॥ ह्वै सूकर ताकर प्राण हरी। रघुनन्दन रूप निधान हरी॥ सुर असुर मथ्यो जब सिन्धु जाय। मंद्राचल कोउ नहि सक उठाय॥ भये कमठ रूप बलवान हरी। रघुनन्दन रूप निधान हरी॥ प्रह्लाद भक्ति पर दुःख भार। हिरणाकुश मारेव खम्भ फार। धरि नरहरि रूप महान हरी॥ रघु०॥ जब इन्द्र भयातुर भयोबल से। तुम बांधि लियो बलि को छल से॥ जय २ बावन भगवान हरी। र०॥ अब सुरन पुकारेव धरणि हेत। धारेउ तनु असुरन दलन हेत॥ भक्तन हित लियो धनु बान हरी। र०॥

दोहा॥

बुद्धिहीन केहि बिधि करौं, प्रभु मैं अस्तुति तोरि।
चरण सरोरुह नाथ जनि, कबहुं तजै मति मोरि॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

अनसूया के पद गहि सीता। मिलीबहोरिसो शीलबिनीता॥

(जानकी जी का अनसूया के चरण स्पर्श करि समीप बैठना और अनसूया का जानकी को आशीर्बाद दै बस्त्र भूषण पहिराना)

अनसूया— चौपाई ॥

सुनहुसियाजगअतिहितबानी। नारिधर्म कछुब्याज बखानी॥
मातु पिता भ्राता हितकारी। मित सुखप्रद सुनुराजकुमारी॥
अमित दान भरता बैदेही। अधमसोनारिजो सेव न तेही॥
धीरज धर्म मित्र अरु नारी। आपत काल परखिये चारी॥
बृद्ध रोग बश जड़ धन हीना। अन्धबधिर क्रोधीअतिदीना॥
ऐसेहु पति कर किय अपमाना। नारि पाव यमपुर दुखनाना॥
एकै धर्म एक ब्रत नेमा। काय बचन मन पति पद प्रेमा॥
जगपतिब्रताचारिबिधिअहहीं। बेद पुराण सन्तअसकहहीं॥

दोहा ॥

उत्तम मध्यम नीच लघु, सकल कहौं समुझाय।
आगे सुनै ते भव तरैं, सुनौ सीय चित लाय॥

चौपाई ॥

उत्तम के अस बस मन माहीं। सपने आन पुरुष जगनाहीं॥
मध्यम परपति देखैं कैसे। भ्राता पिता पुत्र निज जैसे॥
धर्म बिचार समुझि कुल रहई। ते निकृष्टतिय श्रुतिअसकहई॥
बिन अवसर भय ते रह जोई। जानेहु अधम नारि जगसोई॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रथमाङ्क * (दृश्य बन)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

पुनि आये जहँ मुनि शरभङ्गा। सुन्दर अनुज जानकी सङ्गा॥

(शिष्यों युत शरभङ्ग मुनि बिराजमान हैं राम लषण जानकी का प्रबेश मुनि का सत्कार पूर्बक बैठाय पूजन करना)

शरभङ्ग— सवैया ॥

धाम बिरञ्चि के जात रह्यों जब जान्यो आप को कानन आवन। बाट निहारि रह्यों तबसे कब धौं मिलि हैं हियके हुलसावन॥ आज लखे पद पङ्कज नाथ मिटे मनके सबही दुख दावन। योग न ज्ञान औ ध्यान किहौं प्रभु कीन्ह कृपा मोहिं जानि अपावन॥

चौपाई ॥

सो कछु देव न मोर निहोरा। निज प्रण राखहु जन मन चोरा॥
तबलगिरहौ दीन हित लागी। जबलगि मिलौं तुम्हैं तन त्यागी॥

राम—एवमस्तु.

शरभङ्ग—(चिता रचि)

दोहा ॥

सीता अनुज समेत प्रभु, नील जलद तन श्याम।
मम हिय बसौ निरन्तर, सगुण रूप श्री राम॥

(योगाग्निसे मुनि का शरीर भस्म करना राम लषण जानकी का प्रस्थान)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रथमाङ्क * (दृश्य मार्ग)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

पुनि रघुनाथ चले बन आगे।मुनिबर बृन्द बिपुल संग लागे॥

(मुनि मण्डली युत राम लषण जानकी चले जातेहैं)

राम–(अस्थियों के ढेर देखि) हे मुनीश्वर ! यह ठावँ २ पर अस्थि कैसे ढेर हैं.

मुनि–महाराज ! आपको तो सब बिदित है यह राक्षसोंने मुनि लोगोंको खाकर हाड़ोंके ढेर लगादियेहैं.

राम–(आंसू भरि) "हाय" मैं भुजा उठाकर प्रण करता हूँ कि निशाचरोंका नाश करदूंगा.

(आकाश से पुष्पवृष्टि होना)

(सबका प्रस्थान)

प्रथमाङ्क * (दृश्य बन)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

मुनि अगस्त्य कर शिष्य सुजाना।नाम सुतीक्षणरत भगवाना ॥
प्रभु आगमन श्रवण सुनि पावा।करत मनोरथ आतुर धावा॥

(सुतीक्ष्णमुनि भगवद्भजन में मग्न बैठे हैं एक मुनि का प्रवेश)

मुनि–महात्माजी ! आज तो अपूर्व बात सुनी है श्री रामचन्द्र श्रीशरभङ्ग जी को दर्शन देते हुये इसी ओर आ रहे हैं.

सुतीक्ष्ण–हां महात्माजी ! ऐसीही बातहै तो मैं जाताहूं.

(सुतीक्ष्णका मग्न हो बिवश चलना)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रथमाङ्क * (दृश्य मार्ग)

सुतीक्ष्ण— पद दानलीला का ढंग॥

बिधि मोसे शठन पर दाया।करिहैं कि नहीं रघुराया॥
मैं हूं पतित अपावन पापी।वह तो पार ब्रह्म परितापी॥
सिय लछिमन रामगोसाईं।मिलिहैं मोहिं दास कि नाईं॥
सत्संग न योग न यागा।नाहीं चरण कमल अनुरागा॥

छन्द॥

मैं दीनहूं वह दीन बन्धू दीना नाथ दयालु हैं।
दारिद्र दुख मोचन दयानिधि दानवान कृपालु हैं॥
अवलोकि हौं मैं रूप परम अनूप धनु शायक धरे।
दुष्टन बिदारन खल सँहारन भक्त हित प्रभु अवतरे॥

पद॥

ह्वैहैं नयन सुफल मम आजू। लखिहौं जब कौशल राजू॥
मोहिं दौड़ि मिलैं सुरस्वामी।वहतो घट घट अन्तर्यामी॥
पर कीन्ह कछू नहिं सेवा। ताते होत भरोस न देवा॥
अहै एकहि बान सदाहीं। जाके दूसरकी गति नाहीं॥

छन्द॥

सोउ परम प्रिय अति पातकी जिन कबहुँ नहिं सुमिरन करो। ते आजु मैं निज नयन देखौं पूरि पुलकित हिय भरो॥ जे पद सरोज अनेक मुनि उर ध्यान कबहुँ कि आवहीं। ते राम श्री रघुबंशमणि प्रभु प्रेम ते सुख पावहीं॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

दिशि अरु बिदिशि पन्थ नहिं सूझा।को मैं कहां चल्यों नहिं बूझा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कबहुँक फिर पाछे पुनि जाई। कबहुँक नृत्य करै गुणगाई॥
अबिरल प्रेम भक्ति मुनि पाई। प्रभु देखैं तरु ओट लुकाई॥
मुनि मग माँझ अचल है वैसा। पुलक शरीर पनस फल जैसा॥

(सुतीक्ष्ण का रामके प्रेममें मस्त हो पृथ्वीपर गिरना लक्ष्मण जानकी युत रामका प्रवेश राम का मुनिको उठाना मुनि का न उठना)

चौपाई॥ (नैपथ्य)

भूप रूप तब राम दुरावा। हृदय चतुर्भुज रूप देखावा॥
मुनि अकुलाय उठा तब कैसे। बिकल हीन फणि मणि बिन जैसे॥

(रामका मुनिके हृदयमें चतुर्भुज रूप देखाना मुनि का नेत्र खोल चरणों पर गिर पड़ना और आसनपर लाय पूजन करि स्तुति करना)

प्रथमाङ्क * (दृश्य सुतीक्ष्णाश्रम)

सुतीक्ष्ण— छन्द॥

जय परमोदारं दीन दयालं कारण रहित कृपालं।
जय पाप नेवारं खल संहारं भगवानं भूपालं॥
तव गुण आगारं रमा बिहारं मानस शम्भु मरालं।
गो द्विज हितकारं देव उबारं गोबिंदं गोपालं॥

चौपाई॥

जो कौशलपति राजिव नयना। करहुसो राम हृदय मम अयना॥
अस अभिमान जाय जनि भोरे। मैं सेवक रघुपति पति मोरे॥

राम— चौपाई॥

परम प्रसन्न जान मुनि मोहीं। जो बर माँगु देउँ मैं तोहीं॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुतीक्ष्ण—　　चौपाई ॥

हे प्रभु मैं बर कबहुँ न यांचा। समुझि न परै झूठ का सांचा ॥
तुम्हैं नीक लागै रघुराई। सो मोहिं देव दास सुखदाई ॥

राम—　　चौपाई ॥

अबिरल भक्ति बिरति बिज्ञाना। होहु सकल गुण ज्ञान निधाना ॥

सुतीक्ष्ण—　　चौपाई ॥

प्रभु जो दीन सो बर मैं पावा। अब सो देहु मोहिं जो भावा ॥

दोहा ॥

अनुज जानकी सहित प्रभु, चाप बाण धरि राम।
मम हिय गगन इन्दु इव, बसौ सदा निष्काम ॥

राम—एवमस्तु, हे मुनिवर! अब हम अगस्त्य मुनि के दर्शनों को जायँगे.

सुतीक्ष्ण—हे नाथ! वह तो मेरे गुरु हैं और बहुत दिनों से मैंने उनके दर्शन नहीं पाये.

चौपाई ॥

अब प्रभु संग जाउँ गुरु पाहीं। तुम कहँ नाथ निहोरा नाहीं ॥

राम—चलो.

(सहित सुतीक्ष्ण के राम का प्रस्थान)

प्रथमाङ्क　　*　　(दृश्य स्थान अगस्त्य)

चौपाई ॥　　(नैपथ्य)

पन्थ कहत निज भक्ति अनूपा। मुनि आश्रम पहुँचे सुरभूपा ॥

(अगस्त्य जी सहित शिष्यों विराजमान हैं सुतीक्ष्ण का प्रवेश)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुतीक्ष्ण— चौपाई॥

नाथ कौशिलाधीश कुमारा। आये मिलन जगतआधारा॥
राम अनुज समेत वैदेही। निशि दिन देव जपत हौ जेही॥

(अगस्त्य का राम से मिलने चलना राम का सहित लक्ष्मण जानकी प्रवेश अगस्त्य का राम को हृदय लगाय पूजन करना)

राम—स्वामी आप तो जानते हैं मैं जिस कारण यहां आया हूं आप से तो कुछ दुराव है नहीं.

चौपाई॥

अब सो मन्त्र देहु प्रभुमोही। जेहि प्रकारमारौं मुनि द्रोही॥

अगस्त्य—(हँसकर) चौपाई॥

संतत दासन देहु बड़ाई। ताते मोहिं पूछौ रघुराई॥
है प्रभु परम मनोहर ठाऊँ। पावन पञ्चबटी तेहि नाऊँ॥

सवैया॥

शीतल मन्द सुगन्ध सौं दैविक दैहिक भौतिक ताप हटी है। कानन सुन्दर चारु सुहावन पावन गङ्ग कि धार सटी है॥ फूले फले तरु मोद भले अवलोकतही सब शोक कटी है। लायक़ बास सुपास सबै बिधि आनँददायक पंचबटी है॥

चौपाई॥

बास करौ तहँ रघुकुल राया। कीजै सकल मुनिन पर दाया॥
दण्डक बन पुनीत प्रभु करहू। उग्र शाप मुनिबर कर हरहू॥

(मुनि को प्रणाम करि राम का प्रस्थान)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौपाई॥ (नैपथ्य)

चले राम मुनि आयसु पाई। तुरतहि पञ्चबटी नियराई॥

प्रथमाङ्क * (दृश्य पञ्चबटी)

(राम लषण जानकी युत विराजमान हैं दिव्यरूप से सूर्पणखा का प्रवेश)

चौपाई॥ (नैपथ्य)

सूर्पणखा रावणकी बहिनी। दुष्ट हृदय दारुण जिमि अहिनी॥
रुचिररूप धरि प्रभुपहँ जाई। बोली बचन बहुत मुसकाई॥

सूर्पणखा— सवैया॥

काम अनङ्ग सअङ्ग भयो कि धौं सुन्दरता धरि रूप लसे हौ। चन्द्र धरे नर देह कि धौं रबि छोड़ अकाश धरा निकसे हौ॥ मन्द करौ द्युति दामिनि की मम कामिनि के मन धाय धसे हौ। मार लजावन हार दोऊ तुम कौन हौ आनि कहां से बसे हौ॥

राम—तुमको इस पूछने से क्या प्रयोजन? हम कोई हैं तुम अपने समाचार बतावो.

सूर्पणखा— ठेठर॥

रची मेरे प्यारे जोड़ी विधाता रची॥ तुम हौ सुन्दर रूप उजागर, मैं भी हूँ कैसी नयनागर, शील सनेह रूप की आगर, देखि लजात शची॥ रची मेरे प्यारे॥ ढूँढ़ फिरी मैं त्रिभुवन धाई, बर निज रूप कतहुँ नहिं पाई, हमरी तुम्हरी होय सगाई, अब लौं मैं हूँ बची॥ रची मेरे प्यारे॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

राम–(सीता ओर देखि) सवैया ॥

कामिनि भामिनि संग लिये हम दूसरी नारि को नाहिं गुजारो। (लषन ओर देखि) छैल छबीलो नुकीलो बली सुखमा सों सनो वर योग तुम्हारो ॥ गौर शरीर धरे धनु तीर है मार लजावन हार बिचारो। रूप अपार निहारहु नारि कुमार अबै लघु बन्धु हमारो ॥

सूर्पणखा–(लक्ष्मण समीप जाय)

कुमार इधर निहारिये, देखो तो मैं कैसी रूपकी अपार हूँ तुम मुझको अपने योग्य विचार कर अङ्गीकार करो "क्यों बात तो मन की कही ना."

लक्ष्मण– चौपाई ॥

सुन सुन्दरि मैं उन कर दासा। पराधीन नहिं तोर सुपासा ॥
प्रभु समरथ कोशल पुर राजा। जो कछु करहिं उनहिं सब छाजा ॥

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

पुनि सो राम निकट फिरि आई। प्रभु लछिमन पहँ बहुरि पठाई ॥

सूर्पणखा–(राम निकट आय) अहो राजकुमार! क्या इस नारी पर मरते हो मुझे क्यों नहीं बरते हो.

राम–(हँस कर) तुम तो वहां से जल्दी चली आई वह तुम्हारा प्रेम देखते थे अबकी फिर जाकर समझावो तो मानैंगे.

सूर्पणखा–(लक्ष्मणके पास जाकर) प्यारे! तुम्हारे भाई तो कहते हैं कि ब्याह करलो अब क्यों मुझे अङ्गीकार कर अर्द्धाङ्गिनी नहीं बनाते क्या कहीं मुझसे सुन्दर स्त्री आपको धरी है.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लक्ष्मण–तू बड़ी निर्लज्जहै.

चौपाई ॥

अरीकुटिलमतितोहिंसोबरई। जो तृण तोरि लाजपरिहरई॥

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

तब खिसियानि राम पहँ गई। रूप भयंकर प्रकटत भई॥

सूर्पणखा–(राम समीप जाय भयंकर रूपसे) अरे तू बड़ा दुष्ट है मुझसे हंसी करताहै नहीं जानता कि मैं रावणकी भगिनी हूं हाय अब मैं इस नारी को सारी निगले जाती हूं और तुमको भी आटे दालका भाव बतातीहूं.

(राम का लक्ष्मणजी की ओर देखि उसके नाक कान काटनेकी संज्ञा देना लक्ष्मणजी का उसके नाक कान काट लेना और सूर्पणखाका चिल्लाकर भागना).

प्रथमाङ्क * (दृश्य बन)

(खरदूषण का मन्त्रियों सहित विराजमान होना रोते हुये सूर्पणखा का प्रवेश)

सूर्पणखा– ठेठर ॥

धिकार मेरे भाइयों तेरे बलों को धिकार॥

ख-दूषण–पुकार कहो तूने कैसी लगाई पुकार॥

सूर्पणखा–राज कुँवर कोई द्वै आये, सँगमें सुन्दरि नारी लाये। तापै तिलाकी निसार॥ निसार मेरे॥ सुनी अवध दशरथ यक भूपा, तिनके सुत मोहिं कीन कुरूपा,

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लाये न नेकौ अबार ॥ पञ्चबटीमें कुटी बनाये, मुनिन बेष धनु बाण सजाये, कीनी ये गतियाँ हमार ॥ देखत में हैं अतिही छोटे, अपराधी कर्मन के खोटे, लागौ हमारी गोहार ॥

खर—अच्छा मैं अभी सहसेन जाताहूँ और दोनों भाइयोंको इसका स्वाद चखाताहूँ. (सेन से)

ठेठर ॥

मेरे बहादरो उठो बाँधो सनाह तीर सब ॥ काटीहै नाक बहिनकी कैसा कियाहै ये ग़ज़ब ॥ काँपते मेरे डर से हैं चौदा भवनके सब बली ॥ कैसे हैं ढीठ येह कुँवर देख लो इनको चलिके अब ॥

(सबका प्रस्थान)

प्रथमाङ्क * (दृश्य पञ्चबटी)

(राम लषण जानकी युत विराजमानहैं खरदूषण का सेनयुत प्रवेश)

राम—(लक्ष्मण से)

चौपाई ॥

लै जानकी जाहु गिरिकन्दर। आवा निशिचर कटक भयंकर॥

लक्ष्मण—बहुत अच्छा स्वामी.

(लक्ष्मणजी का जानकीजी को एक कन्दरा में लेजाना रामका धनु टंकोर समरारूढ़ होना)

सोरठ ॥ (नैपथ्य)

आय गये बगमेल, धरहु २ धावहु सुभट।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यथा विलोकि अकेल, बाल रबिहि घेरत दनुज॥

चौपाई॥

प्रभु बिलोकि शर सकहिं न डारी। थकित भये रजनीचर झारी॥

खर–(मन्त्रियोंसे) मन्त्रियो! यह तो कोई राजाके लड़के जान पड़ते हैं देखो कैसे सुन्दर लगते हैं.

चौपाई॥

हम भरि जन्म सुनहु रे भाई। देखी नहिं अस सुन्दरताई॥
यद्यपि भगिनी कीन्ह कुरूपा। बध लायक नहिं पुरुष अनूपा॥

मन्त्री–हां जी हैं तो बड़े सुघर भला एक काम न कीजिये एक निडर चर भेजिये अगर वह अपनी सुन्दर स्त्री देकर सिरपर पाँव धर अपने घर चले जाँय तो समर करने से क्या लाभ और हमारा कार्य भी सुधर जावै.

खर–(दूत से) जाव और राजकुमारोंसे कहो कि.

सवैया॥

कीन्ह कुरूप सही भगिनी पर देखिके रूप दया मोहिं आई। बालक हैं नहिं मोहिं सुन्यो बिन जान जो कीन सो कीन ढिठाई॥ देहिं हमैं निज नारि पठाय तो जीवित जाहिं चले दोउ भाई। नाहिं तो बाँधिके बन्धु दोऊ क्षण एक में सुन्दरि लेउँ छिनाई॥

दूत–अच्छा जी जाता हूं.

चौपाई॥ (नैपथ्य)

दूतन कहा राम सन जाई। सुनत राम बोले मुसकाई॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दूत–(राम समीप जाय)

हे बक तपी! तूने हमारे स्वामी का अपराध तो बहुत बड़ा किया है परन्तु हमारी सरकार को तेरा चन्द्रवत् मुख निहार कुछ दया का बिचार आया है इस से इसी में भलाई है कि जो तेरे साथ सूर्यमुखी स्त्री आई है उस को हमारे हवाले कर और इस बन को त्याग चुपके से कहीं भाग जा नहीं तो तेरे प्राण बचना कठिन हैं.

राम–(हँसकर) वाह २ आपके स्वामी का बिचार तो हमारे शिरोधार है परन्तु–

कबित्त ॥

मुनि कुल रखवार खलन सँहार करैं, मार निशा-
चार भुव भार को उतारहीं। क्षत्री तनु धार बन घू-
मत शिकार हेतु, ऐसे मृग यूथनको हेरि हेरि मारहीं॥
रिपु को बली निहार उर में न शङ्क लाय, एक बार
कालहू को युद्ध में प्रचारहीं। जो न बलकार होहिं तौ
पधार जायँ भौन, कादर पै बीर कहूँ तीर ना प्रहारहीं॥

दूत–"अच्छा यह घमण्ड" रहु तो सही (खर समीप जाय) स्वामी! वह तो बड़ा दुष्ट है कहता है कि हम शिकारी हैं और तुम सरीखों का बध करते हैं शीघ्रही चलिये.

खर–(कोप कर) हाँय धावो मारो खावो ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(सब का युद्ध करना और आपसमें एक दूसरे
से लड़कर राम राम कहि मर जाना
देवताओंका दुन्दुभी बजाना लक्ष्मण
का सहित जानकी के आय राम
के चरणों पर गिरना.)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

धुवाँ देखि खरदूषण केरा। जाय सूर्पणखा रावण प्रेरा ॥

द्वितीयाङ्क * (दृश्य रावण सभा)

(रावण मंत्रियों सहित विराजमान है रोती
हुई सूर्पणखा का प्रवेश)

सूर्पणखा-(रोदन करि) पद ठेका ॥

कौनसी नींद में सोवै है रे भैया मेरे। करासि पान मद सुधि नहिं तोहीं कौन हँसै को रोवै हैरे भैया मेरे॥ कौनसी नींदमें सोवै हैरे भैया मेरे। देश कोशको क्यों है नाशत काहेको राजये खोवै हैरे भैया मेरे ॥ रिपुचढ़ि आयो तौ शिर ऊपर तोकों खबर नहिं होवै हैरे भैया मेरे। कौनसी ॥ देखि दशा अपनी भगिनी की अपने रुधिर मुख धोवै है रे भैया मेरे ॥

रावण-क्यों रोती हो यह दशा किसने की.

सूर्पणखा- सवैया ॥

बालक द्वै अवधेश नरेशधरे मुनिबेष बसे बनमाहीं। जाके भुजानन पाय दशानन घूमें अभै मुनि कानन माहीं ॥ संग में नारि स्वरूप अपार निहारतही रति

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कोटि लजाहीं। राम है नाम बड़े बलधाम निशाचर नाश करैं क्षण माहीं॥

चौपाई॥

तासु अनुजकाटी श्रुतिनासा। सुनितव भगिनीकरिउपहासा॥

रावण–तो क्या खरदूषण नहीं थे.

सूर्पणखा– चौपाई॥

खरदूषण सुनि लाग गोहारा। क्षणमहँ सकल कटकउनमारा॥

रावण–अच्छा तुम धैर्य धरो क्या मेरे बलके सामने वह अड़ सकते हैं मैं कलही तो इसका बदला लूँगा और उनकी स्त्री को लाऊँगा.

(सूर्पणखा का प्रस्थान)

दोहा॥ (नैपथ्य)

सूर्पणखा समुझाय कर, बल बोलिस बहु भाँति।
गयो भवन अति शोच बश, नींद परी नहिं राति॥

द्वितीयाङ्क * (दृश्य शयनागार)

(रावण तकियों के सहारे पड़ा है)

रावण–(स्वतः) पद॥

मेरे सम कौन अहै जग में बलधारी। देवन दीन्ह्यों निकार, जीत्यों त्रैलोक झार, कांपत सब मेरे एक दास को निहारी॥ मेरे॥ दूषण खर बल आप, ताहि कौन सकत मार, जो न पारब्रह्म लेत मनुज रूप धारी। मेरे॥ जो पै औतार लीन, देव धरा जानि दीन, तौ मैं हठ करहुँ जाय बैर भाव रारी॥ मेरे॥ प्रभु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शर लगि तन गँवाय, जैहौं बैकुंठ धाय, छूटि जायँ पाप जौन कीन्ह्यों मैं भारी। मेरे॥ जो वै कोउ भूप आहिं, तब तो कछु शङ्क नाहिं, छीन लेहुँ तुरत जाय सुन्दर वह नारी॥ मेरे॥

(अच्छा तो मारीच की सहायतासे काम करूं)

द्वितीयाङ्क * (दृश्य बन)

चौपाई॥ (नैपथ्य)

चला अकेल यान चढ़ि तहवां। बस मारीच सिन्धु तट जहवां॥
दशमुख गयो जहां मारीचा। नाय माथ स्वारथ रत नीचा॥

(मारीच विराजमान है रावण का अकेले जाय दण्डवत् करि बैठि जाना मारीच का सादर पूजन करि बैठना)

मारीच— दोहा॥

अहहि कुशल तव लङ्कपति, तन कछु मलिन लखात।
कौन हेतु मन व्यग्र अति, अकसर आयहु तात॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

दशमुख सकल कथा तेहि आगे। कही सहित अभिमान अभागे॥

रावण— पद॥

काह कहूँ कछु कहत न आवै लगत लाज अति भारीहै।
राम लखन कोई दशरथ सुत आये बिपिन मँझारी है॥
काटी नाक कान भगिनीकी खरदूषण बध डारी है।
हरिहौं जाय महूँ तुम्हरे बल उनके सँग यक नारी है॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौपाई॥

होहु कपट मृग तुम छलकारी। जेहि बिधिहरि आनहुँ नृपनारी॥

मारीच— कबित्त॥

सुनिये सुजान लङ्क नायक बखान तुम, वै तो भगवान ब्रह्म नर रूप धारे हैं। बालक नदान मुनि मख दरबान भये, बिन फर बान एक तान मोहिं मारे हैं॥ आयों लैके जान शत योजन समुद्र पार, अर्ध राम नाम सुने प्राण ना हमारे हैं। जो पै नर मान लेहु तौहू बलवान बड़े, उनसे तो बैरठान खैर ना तुम्हारेहैं॥

दोहा॥

जे ताड़ुका सुबाहु बधि, भञ्ज्यो हर को दण्ड।
खर दूषण त्रिशिरा बध्यो, मनुज कि अस बरबण्ड॥

चौपाई॥

जाहु भवन कुल कुशल बिचारी। भजहु सदा रघुपति धनुधारी॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

अस कहि जब मारीच पुकारी। सुनत जरा दीन्हेसिबहु गारी॥

रावण—(क्रोधकर) चुप रहु दुष्ट मैंने जानि लिया कि तेरी मृत्यु आ गई मैं तो अपना काम करने आया था कुछ तेरा शिष्य होने नहीं आया था भला कहु तो मेरे समान कौन बलवान् है जो तू मेरे सामने मनुष्यों का बल बखान करता है और मेरा अपमान कर हुकुम पर ध्यान नहीं देता.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौपाई॥ (नैपथ्य)

तब मारीच हृदय अनुमाना। नवहिं बिरोधे नहिं कल्याना॥
स्त्री मर्मी प्रभु शठ धनी। बैद बन्दि कबि कोबिद गुनी॥
उभयभाँतिदेखिसिनिजमरणा। तबताकेसि रघुनायक शरणा॥

मारीच–(स्वतः) इस दुष्ट से बैर करना अच्छा नहीं है क्योंकि जो न जाऊँगा तो यह मुझे अवश्य मार डालेगा और जाने से वहां भी तो माराही जाऊंगा फिर रामशर से क्यों न मरूं (प्रकट) महाराज! क्रोध न कीजियेमैं जाताहूं.

रावण–भाई मारीच तुमतो मेरे मित्रहौ ले जल्दी जावो.

(मारीच का स्वतः रामकी स्तुति करते प्रस्थान)

छन्द॥

निज परम पीतम देखि लोचन सफल कर सुख पाइहौं। श्रीसहित अनुज समेत कृपानिकेत पद मन लाइ हौं॥ निर्बाण दायक क्रोध जाकर भक्त अबसहि बस करी। निज पान शर सन्धान सो मोहिं बधैं सुख सागर हरी॥

दोहा॥

मम पाछे धरि धावत, धरे शरासन बान।
फिर २ प्रभुहिं बिलोकिहौं, धन्य न मो सम आन॥

द्वितीयाङ्क * (दृश्य पञ्चबटी)

चौपाई॥ (नैपथ्य)

तेहि बन निकट दशानन गयऊ। तब मारीच कपटमृग भयऊ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अतिबिचित्र कछु बरणि न जाई। कनक रचित मणि देह बनाई ॥
सीता परम रुचिर मृग देखा। अंग अंग सु मनोहर भेखा ॥

(लक्ष्मण जानकी राम युत विराजमान हैं मृगरूप से मारीच का प्रवेश)

जानकी-(सुवर्ण मृग देखि राम से)

दोहा ॥

सुनहु प्राणपति अति रुचिर, यहि मृग चर्म बिशाल ।
निज कर बध कर हेतु मम, आनिय बेगि कृपाल ॥

राम-अच्छा प्रिये.

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

तब रघुपति जाना सब कारण। उठे हर्षि सुरकाज सँवारन ॥
मृग बिलोकि कटि परिकर बाँधा। करतल चाप रुचिर शर साँधा ॥

(राम का धनुष चढ़ाय लक्ष्मण से कहना)

राम-तात इस बन में राक्षस बड़ा उत्पात करते हैं तुम ख़बरदारी से जानकी की रखवारी करना.

लक्ष्मण-स्वामी जो आज्ञा.

(मृग का भागना राम का पीछे दौड़ना दूर जाय मृग का चिल्लाना)

नैपथ्य से-लक्ष्मण भाई हो. २

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

आरत गिरा सुनी जब सीता। कह लक्ष्मण सन परम सभीता ॥

जानकी-(घबराकर) लक्ष्मण जी देखो तुम्हारे भाई

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तुमको पुकारते हैं जान पड़ता है कि कोई भारी संकट में फँस गये हैं तुम जल्दी जावो.

लक्ष्मण—हे माता! आप धैर्य धरिये उनको संकट नहीं पड़ सक्ता.

चौपाई ॥

भृकुटि बिलास सृष्टि लय होई। स्वप्नेहु संकट परै किसोई ॥

जानकी—तुम मुझे समझाते हो परन्तु मेरा हृदय काँपता है. तुम जावो.

लक्ष्मण— सवैया ॥

सौंपिगयेमोहिं जातसमै प्रभु आयसु मेटि कलङ्क न लैहों। आवहिं ना जब लौं रघुनन्दन मातु मैं तेरे समीपहि रैहौं ॥ जाहुँ तुम्हैं तजि अन्त नहीं प्रभु पूँछहिं बैन तो काह बतैहौं। राकस घोर फिरैं बन में तोहिं छांड़ि अकेली न मैं कहुँ जैहौं ॥

जानकी—मैं तो पहिलेही से जानती थी कि तुम भरत के साथी हो अच्छा न जावो मैं जाऊँगी.

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

मर्म बचन सीता जब बोली। हरि प्रेरित लक्ष्मण मति डोली॥
चहुँदिशि रेखाखींच अहीशा। बार २ नायो पद शीशा॥
बनदिशदेखिसौंपि सबकाहू। चले जहां रावण शशि राहू॥

लक्ष्मण—(चारों ओर रेखा खींच जानकी से) अच्छा माता मैं जाता हूं परन्तु आप इस रेखा के बाहर किसी तरह न जाना. (बन ओर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देखि) अहो बनदेव! और बृक्षादि तुम सब जानकीजीकी रक्षा करना.

(लक्ष्मण का प्रस्थान)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

शून्य बीच दशकन्धर देखा। आवा निकट यती के बेखा॥

(जानकीजी रेखा के भीतर बिराजमान हैं यती रूप से रावण प्रवेश)

रावण- पद ॥

अलख खोलदे पलक झलक दिखला दे। मेरे लगी भूख है मातु मुझे कुछ लादे॥ खिला दे माता, अब तो भूख से नहीं रहा जाता, तेरा भला करेगा दाता॥

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

अतिथिजानसियकन्दमूलफल। लगीदेनतेहिकीन्हि बहुरिछल

(जानकी का कन्दमूल देना रावण का न लेना)

रावण- चौपाई ॥

सुमुखिसुलोचनि सुनु मम बानी। बाँधीभीख न लेवँसयानी॥

जानकी-अच्छा यती जी! मैं आप को बाहर निकल कर भिक्षा दूँगी.

(जानकी का रेखा के बाहर निकल आना और भिक्षा देना)

रावण-(हँसकर) अक्खाह तुम तो बड़ी स्वरूपवान् हो भला तपस्सियों के साथ तुमको क्या सुख होता होगा. अब मेरे साथ चलो.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जानकी–यतीजी! आप कैसे दुष्टों कीसी बातें करते हैं.

रावण–(जानकी को गोद में उठाकर और निज रूप धरि) वाह २ तुम अभी तक मुझ को यती ही जानती हो मैं लङ्का का राजा रावण हूं.

जानकी–(डर कर) खड़ा रहु दुष्ट तेरे काल रघुनाथ जी आ गये.

(रावण का सहम जाना और इधर उधर देख कर जानकी जी को उठाय रथ पर बैठाय चलना)

द्वितीयाङ्क * (दृश्य बन)

(एक स्थान पर जटायु का बैठना रावण जानकी को लिये आकाशमार्ग से चला जाता है)

जानकी–(बिलाप करि)

ठेठर ॥

अहे मुझे कैसी बिपति ने सताया ॥ हा आरति हरन कृपाला। हा रघुकुल दीन दयाला ॥ हाय कहाँ स्वामी मेरे रघुराया। अहे मुझे कैसी बिपति ने सताया ॥ हा लछिमन तौ नहिं दोषा। हा फल पायों करि रोषा ॥ हाय भयो कैकेई मन भाया। अहे मुझे कैसी ॥ हाय मेरा दुख कौन सुनावै। अहे यह देव भाग खर खावै ॥ हाय प्रभु कैसे बिसारेहु दाया। अहे मुझे कैसी ॥ मैं बिलपति तेरी प्यारी। क्यों मेरी सु-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रति बिसारी॥ हाय कौन क्रोध मन छाया। हाय मुझे कैसी॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

गीधराज सुनि आरतबानी। रघुकुलतिलक नारि पहिंचानी॥

जटायु–(स्वतः) अरे यह कौन बिलाप करता है (ऊपर देख) हाय २ यह तो जनकनन्दिनी जी हैं दुष्ट रावण लिये जाता है.

चौपाई॥

अहह प्रथम बल मम तन नाहीं। तदपि जाय देखों बलताहीं॥

(जानकी से)

सीतापुत्रि करसि जनि त्रासा। करिहौं जातुधान की नासा॥

(रावण से)

रेरे दुष्ट ठाढ़ किन होई। निर्भयचलेसि न जानेसिमोहीं॥

कबित्त॥

एरे दशकन्ध मूढ़ मंद नयन बीस अंध, छाँड़ दुष्ट या तो रघुनन्द प्राणप्यारी है। जानत जहान राम का तैं नहिं सुने कान, एक बाण तान प्राण ताड़ुका सँहारी है॥ त्याग अभिमान बात मान सह जानजाहु, जानकी के साथ लंक खैर ना तुम्हारी है। चोंचन सों मार देहुँ डारिहों बिदार फार, पैग ना अगार धारेव मेरी रखवारी है॥

चौपाई॥

राम रोष पावक अति घोरा। है है शलभ सकल कुल तोरा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

उतर न देत दशानन योधा। तबै गृद्ध धावा करि क्रोधा॥

जटायु–खड़ा हो चाण्डाल कहाँ जाता है.

रावण–आ बे तेरा भी काम तमाम करते चलैं.

(जटायु का युद्ध करना रावण का अग्निबाण से जटायु के पक्ष काटि कर जानकी को ले चलना)

जानकी–गृद्धराज जब तक मेरे प्राणनाथ न मिलैं तब तक प्राण न छोड़ना.

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

मन में गृद्ध परम सुख माना। राम काज लाग्यो मम प्राना॥
करतविलापजातनभ सीता। व्याघ्रविवश जनु मृगीसभीता॥

जानकी–हा प्राण प्यारे! हा प्यारे लक्ष्मण! इस दुष्टसे मुझ को बचावो यह पापी मुझे लिये जाताहै.

(बानरों का एक पर्वत पर बैठे निहार जानकी का राम राम कहि वस्त्राभूषण छोड़ना। बानरों का उठा लेना)

तृतीयाङ्क * (दृश्य अशोक बाटिका)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

यहि बिधि सो सीतहि लैगयऊ। बनअशोकमहँ राखतभयऊ॥

रावण–(जानकी को अशोक बाटिका में बैठाय राक्षसियों से) देखो मैं यह सूर्यमुखी लाया हूँ अच्छी प्रकार इस का सम्हार करना यदि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कुम्हला जायगी तो एक एक को यमद्वार देखाऊँगा.

(रावण का प्रस्थान)

तृतीयाङ्क * (दृश्य बनमार्ग)

(रामचन्द्र आते हैं लक्ष्मण का प्रवेश)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

रघुपति अनुजहि आवत देखी। मनमहँचिन्ताकीन्हबिशेखी॥

राम—(लक्ष्मण से)

चौपाई॥

जनकसुता परिहरेव अकेली। आयहु तात बचन ममपेली॥
निशिचरनिकर फिरैं बन माहीं। मम मन सीता आश्रमनाहीं॥
अहह तात भल कीन्हेउ नाहीं। सियबिहीन मम जीवनकाहीं॥
यहि ते कवन बिपति बड़ि भाई। खोयहु सीय काननहि आई॥

लक्ष्मण—स्वामिन्! जनकदुलारी ने कुछ ऐसे बाणइव कटु बचन कहे जिनके लगने से हृदय बिदीर्ण हो आपकी आज्ञा निकल गई.

(दोनों भाइयों का प्रस्थान)

तृतीयाङ्क * (दृश्य पञ्चबटी)

चौपाई॥ (नैपथ्य)

अनुज समेत गयो प्रभु तहवां। गोदावरि तट आश्रम जहवां॥

(राम लक्ष्मण का कुटी समीप जाय और शून्य देखि राम का ब्याकुल हो जाना)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

राम--(रोकर) चौपाई ॥

हा गुणखानि जानकी सीता । रूप शील व्रत नेम पुनीता ॥

लक्ष्मण–स्वामी ! धैर्य्य धारण कीजिये जनकदुलारी बेगही मिलेंगी चलिये कहीं खोजैं ॥

राम–चलो.

(राम लक्ष्मण सब से पूँछते जाते हैं)

राम– चौपाई ॥

हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी । तुम देखी सीता मृगनैनी ॥
खञ्जन शुककपोत मृगमीना । मधुपनिकर कोकिला प्रबीना ॥
कुन्दकली दाड़िम दामिनी । शरदकमलशशिअहिभामिनी ॥
बरुण पाश मनोज धनु हंसा । गज केहरि निज करत प्रशंसा ॥
श्रीफलकनककदलिहरषाहीं । नेक न शंक सकुच मन माहीं ॥
सुनु जानकी तोहिंबिनआजू । हरषे सकल पाय जनु राजू ॥
किमिसहिजातअनखतोहिंपाहीं । प्रियाबेगिप्रकटतकसनाहीं ॥
जोपै जियत प्रियानाहिं पैहौं । त्रिभुवन सब क्षणमाहिं नशैहौं ॥

लक्ष्मण–(काँपकर) हे जगदाधार ! आपको ऐसा प्रण न चाहिये.

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

यहिबिधिखोजतबिलपतस्वामी । मनहुमहाबिरहीअतिकामी ॥
आगे परा गृद्धपति देखा । सुमिरत रामचरण की रेखा ॥

तृतीयाङ्क– * (दृश्य मार्ग)

(जटायु का बिकल पड़ा हुआ देखि पड़ना राम लक्ष्मण का प्रवेश)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

राम–हे गृद्धराज ! तुम्हारी यह दशा किसने किया.

जटायु– सवैया ॥

नाथ लखो सब गात हमार करी गति ये दशकन्ध भुजानकी। सोइ छली छलि कै दिशि दक्षिण जान चढ़ाय के लै गयो जानकी॥ घोर बिलाप करै कुररी जिमि लाग रही रट राम सुजान की। देखन की प्रभु चाह रही अब बेर नहीं कछु जान के जानकी॥

राम–(जटायु के ऊपर हाथ धरि) हे तात ! आप प्राण रखिये मैं अभी आप को अमर किये देताहूं.

जटायु–(हँस कर) वाह २ आप मुझे धोखा देते हैं.

चौपाई ॥

जाकर नाम मरत मुख आवा। अधमौ मुक्तहोय श्रुति गावा॥
सो मम लोचनगोचर आगे। राखौं देह नाथ केहि लागे॥

राम–(नेत्रों में जल भरि) अच्छा जो आप प्राण नहीं रखते तो.

चौपाई ॥

तन तजि तात जाहु मम धामा। देहुँ कहा तुम पूरण कामा॥

दोहा ॥

सीताहरण पिता सन, कह्यो तात जनि जाय।
जो मैं राम तो सहित कुल, कही दशानन आय॥

(जटायु का दिब्यरूप धरि स्तुति करना)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जटायु— छन्द ॥

जय राम रूप अनूप निर्गुण सगुण गुण प्रेरक सही। दशशीश बाहु प्रचण्ड खण्डन चाप शर मण्डन मही ॥ पाथोदगात सरोज मुख राजीव आयत लोचनं। नित नौमि राम कृपाल बाहु बिशाल भव भय मोचनं ॥ जो अगम सुगम स्वभाव निरमल असम सम शीतल सदा। पश्यंत यं योगी यतन करि कर्म मन गोपद मुदा ॥ सो राम रमानिवास संतत दास बश त्रिभुवन धनी। मम उर बसौ सो शमन संसृत जासु कीरति पावनी ॥

राम—एवमस्तु.

(जटायु का प्रस्थान)

दोहा ॥ (नैपथ्य)

अबिरल भक्ति माँगिबर, गृद्ध गयो हरिधाम।
तेहि की क्रिया यथोचित, निज कर कीन्ही राम ॥

तृतीयाङ्क * (दृश्यस्थान शबरी)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

ताहि देय गति राम उदारा। शबरी के आश्रम पगु धारा ॥

(शबरी भगवत् भजन कररही है और दोने में कन्द मूल फलादि चुनि रही है राम लखन का प्रवेश)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

शबरी दीख राम गृह आये। मुनिके बचन समुझि सुखपाये ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रेम मगन मुख बचन न आवा। पुनि २ पद सरोज शिरनावा॥

(राम लखन को देखि शबरी का जल लाय पाँय धोय पूजनकरि फल आगे धरि नैवेद्य लगाना)

राम–वाह इन फलों के स्वाद में तो षट्रस व्यंजन भी बाद हैं और दो.

शबरी–(हाथ जोरि स्तुति करती है)

छन्द॥

केहिभाँतिस्तुति करहुँ स्वामी नीचजाति गवाँरिहौं।
मतिमन्द औ बुधि हीन नितहि मलीन अधमा नारिहौं॥
अधम ते अति अधम तिय मैं सकल बिधि पातकभरी।
सोइ आज सन्त समाज में सिरताज प्रभु मोकहँ करी॥

राम– चौपाई॥

कहौं सत्य सुनुभामिनि बाता। मानौं एक भक्ति कर नाता॥
जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई। धन बल परिजन गुणचतुराई॥
भक्ति हीन नर सोहैं कैसे। बिनजलबारिद देखियजैसे॥
नवधा भक्ति कहौं तोहिं पाहीं। सावधान सुनुधरिमन माहीं॥

कबित्त॥

सन्तन को संग प्रथम भक्ति मोर भामिनि सुनु दूसर मम कथा के प्रसंग चित्त लावई। तीसर सेवकाई पद पंकज गुरु मान त्यागि चौथो तजि कपट सदा मेरो गुण गावई॥ पंचम मम मंत्र जाप बेद भजन गान करै षष्ठम दम शील बिरति धर्म सुजन भावई। सप्तम सब

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मोहिं जानि मोते बड़ सन्त मानि अष्टम संतोष दोष और ना लगावई ॥

दोहा ॥

नवमि सरल सब छाँड़ि छल, मम भरोस नहिं आन ।
हीय हर्ष नहिं दीनता, ये नव भक्ति सुजान ॥

चौपाई ॥

नव महँ एकौ जाके होई । नारि पुरुष सचराचर कोई ॥
सोइ अतिशय प्रिय भामिनि मोरे । सकल प्रकार भक्ति दृढ़ तोरे ॥

दोहा ॥

सब प्रकार तव भाग बड़, मम चरणन अनुराग ।
तव महिमा जेहि उर बसै, तासु परम बड़ भाग ॥

और हे प्रिये ! यदि तुमने कहीं हमारी
प्राण प्यारी जनककुमारी की सुधि
पाई हो तो बतावो.

शबरी— पद ॥

मैं क्या बतलाऊं स्वामी तुमको तुम सब जानन हार । संतत दासन देहु बड़ाई, तासे मोहिं पूछव रघु-राई, सुनौ ठाँव अब कहत बुझाई, जाव तहाँ सरकार ॥ ऋष्यमूक यक शैल सोहावन, तेहि समीप पम्पा-सर पावन, सब प्रकार मुनिवर मन भावन, खग मृग करत विहार । ऋषि मतंग महिमा गुण भारी, जीव चराचर रहत सुखारी, बैर बिहाय प्रीति कर भारी, शोभा सबहि प्रकार ॥ तहँ सुग्रीव बालि कर भाई,

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तासों ह्वैहै नाथ मिताई, सो सब कहिहै कथा बुझाई, मिलिहैं प्रिया तुम्हार। मैं क्या बतलाऊँ स्वामी तुमको॰

(शबरी का हाल कहि प्रस्थान)

प्रथमाङ्क * (दृश्य ऋष्यमूक पर्वत)

चौपाई॥ (नैपथ्य)

चले राम त्यागा बन सोऊ। अतुलितबल नर केहरि दोऊ॥
कहत कथा निज भक्तिबड़ाई। ऋष्यमूक पर्वत नियराई॥
तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा। आवत देखि पुरुष बलसीवा॥
अति सभीत कह सुनु हनुमाना। पुरुषयुगलबलरूपनिधाना॥
धरि बटुरूप देखु तैं जाई। कहसि मोहिं जियसैन बुझाई॥

(एक पर्वत की शिखर पर सुग्रीवादि वानर बैठे हैं राम लखन का प्रवेश)

सुग्रीव–(राम को देखि हनुमान् से)

कबित्त॥

कोई युग बीर गौर साँवरो शरीर देखि, लीन्हे धनु तीर हाथ मेरी ओर आवहीं। बालि के पठाये इत आये मोहिं भ्रम होत, मम साल ताके उर हाल तो मँगावहीं॥ पवन के पूत खूब ह्वैके मज़बूत धार, ब्राह्मण को रूप आप वादिशि सिधावहीं। पाय समाचार नेक दीजियो निहार इतै, बेग यह शैल त्याग अन्त भाग जावहीं॥

हनूमान–जो आज्ञा॥

(बिप्र रूपधरि रामसमीप जाय माथ नाय पूछना)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हनूमान- कवित्त॥

सुन्दर सो गौरश्याम शोभा अभिराम धाम, बन में सहत पौन घाम केहि हेतहौ। घूमत अपावन हौ पावन करत महि, क्षत्री तनु धीर बीर सुखमा निकेत हौ॥ की धौं नररूप धरि लीन्ह्यो अवतार हरि, की धौं भगवान ब्रह्म शंकर समेत हौ। जटा जूट धारे कौन भूप के दुलारे इत, काज का सिधारे मनमारे क्यों अचेत हौ॥

दोहा॥

जग कारण तारण भवहिं, भञ्जन धरणी भार।
की तुम अखिल भुवन पति, लीन्ह मनुजअवतार॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

हँसि बोले रघुबंश कुमारा। बिधि कर लिखा को मेटनहारा॥

राम- कवित्त॥

कौशलेश जाये राम लखन कहाये हम, पितु के पठाये बिप्र बन माहिं आये हैं। संग नारि लाये बहु भूमि घूमि आये ऋषि, कुम्भज बताये कुटी पञ्चबटी छाये हैं॥ मृग के लोभाये हम मृगया को धाये पुनि, तामें छल खाये निज सुन्दरी गँवाये हैं। खोज बहु लाये सुधि कतहूँ न पाये कर्म, रेख के भ्रमाये आज इत को सिधाये हैं॥

चौपाई॥

आपन चरित कहा हम गाई। कहौ बिप्र निज कथा बुझाई॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

प्रभु पहिंचान परेव गहि चरणा। सो सुख उमा जाय नहिं वरणा॥

हनूमान-(स्वतः) ऐं यह तो ईश्वर का अवतार हैं मैं भूलगया (प्रकट) चरणों पर गिर.

चौपाई ॥

मोर न्याव मैं पूछौं साईं। तुम कस पूछौ नर की नाईं॥
तव माया बश फिरहुँ भुलाना। ताते मैं नहिं प्रभु पहिंचाना॥

दोहा ॥

एक मन्द मैं मोह बश, कीश हृदय अज्ञान।
पुनि प्रभु मोहिं बिसारेऊ, दीनबन्धु भगवान॥

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

असकहि परेउ चरण अकुलाई। निज तन प्रकट प्रीति उरछाई॥
तब रघुपति उठाय उर लावा। निज लोचन जल सींचि जुड़ावा॥

राम-हे कपि! आप उदास न हों आप मुझे लक्ष्मण से अधिक प्रिय हो.

हनुमान-(हाथ जोरि)

चौपाई ॥

नाथ शैलपर कपिपतिरहई। सो सुग्रीव .दास तव अहई॥
तासन नाथ मयत्री कीजे। दीन जान तेहि अभय करीजे॥
सो सीताकर खोज कराइहि। जहँ तहँ मरकट कोटि पठाइहि॥

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

यहि विधि सकल कथा समुझाई। लिये दोउजन पीठ चढ़ाई॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(दोनों भाइयों को कन्धे पर चढ़ाय
सुग्रीव समीपजाना)
(सुग्रीव का दोनों भाइयों के चरणों पर
गिरि आसन पर बैठाना)

सुग्रीव-(स्वतः) हे ईश्वर! हम से इन से प्रीति हो जाय तो मनोरथ पूर्ण हो.

हनूमान-(सुग्रीव से) कपिराज! यह कौशलेश कुमार साक्षात् ईश्वर का अवतार हैं यदि ये चाहें तो आपका कार्य सिद्ध होजावे (रामसे) हे नाथ! कपिपति आपकी सेवा में सदैव तत्पर हैं यदि आप इनसे सच्ची मिताई करें तो ये आपके कार्य को सहर्ष करेंगे.

राम-हम अग्नि को साक्षी देते हैं.

सुग्रीव-नाथ मैं भी अग्निदेव को साक्षी देता हूँ.

चौपाई॥ (नैपथ्य)

कीन्ह प्रीति कछुबीच न राखा। लक्ष्मण राम चरितसब भाखा॥

लक्ष्मण-कपिराज! पिता की आज्ञा मान रघुनाथ जी बन को आये रहे जनकदुलारी भी संग आई थीं कोई राक्षस उनको हर लेगया उन्हीं के खोज में हमदोनों भाई घूमते हैं.

सुग्रीव-(नेत्रों में जल भरि)

चौपाई॥

जनि कीजै मननाथ दुखारी। मिलहिं अवशि मिथिलेशकुमारी॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दोहा ॥

एक समय सचिवन सहित, बैठे करौं बिचारि।
गगन पन्थ परबश परी, दीख जात यक नारि॥
राम राम हा राम रटि, बिलखत बारम्बार।
मोहिंनिहारि पुनि रामकहि, दीन्ह्यो कछु पट डार॥

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

माँगा राम तुरत सोइ दीन्हा। पट उरलाय शोच बड़ कीन्हा॥

राम—वह पट मँगाइये.

(सुग्रीव का पट लाना राम का पट देखि शोकित हो लक्ष्मण से कहना. तात! इन पटों को आप पहिचानते हैं.)

लक्ष्मण—स्वामी मैंने तो सेवाय चरण सेवा के कभी जानकीजीके और किसी अंग व पट पर दृष्टि नहीं किया अगर नूपुरादि भूषण होते तो मैं बतला सक्ता था.

(राम का शोकबश हो जाना)

सुग्रीव—(हाथ जोरि) नाथ! आप धैर्य धरें मैं सब प्रकार से सेवा करूंगा.

दोहा ॥ (नैपथ्य)

सखा बचन सुनि हर्षे, रघुपति करुणासींव।
कारण कौन बसहु बन, मो सन कहु सुग्रीव॥

राम—सुग्रीव! तुम बन में क्यों बास करते हौ.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुग्रीव— पद ॥

हाल जो कुछ है सच उसको कहता हूं मैं, बालि थे मुझको प्राणों से प्यारे प्रभू ॥ मय सुवन दुंदुभी नाम दानो काथा आया यक दिन नगर वो हमारे प्रभू। अर्धनिशि आ पुकारा भवन में मेरे बालि पीछे उसी के पधारे प्रभू ॥ हाल० ॥ देख कर बन्धु को वह भगा मैं था सँग वह गया खोह में यक समारे प्रभू। पाख भर जो न आऊँ तो मम आसतजि यह कहा मैं रहा मास सारे प्रभू ॥ हाल० ॥ तब बही रक्त धारा बिचारा कि मारा मुझे भी वो आकर सँहारे प्रभू। उसको डरकर शिला द्वार धर आया घर राज हठकर मेरे सर पड़ारे प्रभू ॥ हाल० ॥ ताहि संहार कर बालि आये नगर देखकर मुझको कर कोप मारे प्रभू। नारि हरि लीन्ह सर्वस्व बश कीन्ह निजमार गहि बाहँमेरी निकारे प्रभू॥ हाल जो कुछ है सच उसको कहताहूँ मैं ॥

चौपाई ॥

ताके भय रघुबीर कृपाला। सकल भुवन मैं फिरों बिहाला ॥
इहाँ शाप बश आवत नाहीं। तदपि सभीत रहौं मन माहीं ॥

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

सुनिसेवक दुख दीनदयाला। फरकिउठे दोउ भुजा बिशाला॥

राम— दोहा ॥

सुनहु सखा मैं मारिहौं, बाली एकै बान।
ब्रह्म रुद्र शरणागतौ, गये न उबरैं प्रान ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौपाई ॥

सखा शोक त्यागौ बल मोरे। सबबिधि करब काज मैं तोरे ॥

सुग्रीव- चौपाई ॥

सुनिये कृपासिन्धु रघुबीरा। बालि महाबल अतिरणधीरा ॥
सप्त ताल ये परत लखाई। गोलाकार अहैं रघुराई ॥
बेधै इन्हैं एक ही साथा। बाली कर बध ताके हाथा ॥

राम-मित्र ताल मिस परीक्षा लेते हो.

सुग्रीव-स्वामी बालि का बल जानताहूँ इस्से डरताहूं.

(राम का एक बाण से सप्तताल बेधन करना सुग्रीव का प्रसन्न ह्वै चरणों पर गिरना)

राम-सखा अब तो तुम को भरोसा हुआ.

सुग्रीव-नाथ ये जो बड़ा भारी सरोवर देख पड़ता है यह दुन्दुभी राक्षस की खोपड़ी का अर्धभाग है यदि आप इसको बाण से उड़ा देवैं तो मुझे बालिबध का निश्चय हो.

(राम का एक बाण से उस अस्थिको उड़ा देना)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

देखि अमित बल बाढ़ी प्रीती। बालि बधनकर भइ परतीती॥

सुग्रीव-(कुछ बिचारि)

सवैया ॥

नाथ न चाहिय मोहिं कछू सुख सम्पति औ परिवार बड़ाई। ये सब भक्ति के बाधक हैं इनको तजिके करिहौं सेवकाई ॥ बालि हमार हितू अतिशय जेहिके

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मिसु मोहिं मिल्यो प्रभुआई । कीजे कृपा वर दीजे तजौं सब नेह बिषादि भजौं रघुराई ॥

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

सुनि बिराग संयुत कपि बानी । बोले बिहँसि राम धनुपानी ॥

राम– चौपाई ॥

जो कछु कह्यौं सत्य सब सोई । सखा बचन मम मृषा न होई ॥

मैं बालि को मारि तुम को राज्य देने की प्रतिज्ञा करचुका हूं वह अवश्य करना होगा ले अब उठो चलो बालि से युद्ध करो कुछ दिन राज्य करके फिर जैसा चाहना करना.

सुग्रीव–जो आज्ञा.

(सब का प्रस्थान)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

लै सुग्रीव संग रघुनाथा । चले चापशायक धनु हाथा ॥

प्रथमाङ्क * (दृश्य बालि भवन)

(रामचन्द्र का सुग्रीव के साथ एक वृक्ष तले खड़ा होना)

राम–सुग्रीव अब जावो और बालि से लड़ो.

सुग्रीव–बहुत अच्छा स्वामी.

(बालि का तारा सहित देखाई देना सुग्रीव की गर्जन सुनि बालि का युद्ध के वास्ते च-लना तारा का पद गहि समझाना)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तारा- पद ॥

पति कहां चले तुम जात बात तो लेव बिचारी जी।
मिलिगयो जिन्हें सुग्रीव तेज बल सींवँ खरारी जी ॥
पति० ॥ कौशलपति दशरथ पुत्र राम लछिमन भय
हारी जी। हैं कालहु के काल समर किये मौत तुम्हारी
जी ॥ पति० ॥ मानो पति मेरा कहा रूप सोइ मन में
धारी जी। तजि देव मोह भ्रम जाल भजौ सुरपति अ-
सुरारी जी ॥ पति० ॥

बालि- दोहा ॥

डरत कहा हो भीरु प्रिय, समदर्शी रघुनाथ।
जो कदापि मोहिं मारि हैं, तो पुनि होब सनाथ ॥

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

असकहि चला महाअभिमानी। तृणसमान सुग्रीवहि जानी ॥

प्रथमाङ्क * (दृश्यबन)

(राम का एक वृक्ष के ओटमें खड़ा होना बालि
सुग्रीव दोनों का युद्ध करना बालि का
एक मुष्टिक सुग्रीव के मारना सुग्रीव
का बिकल ह्वै राम समीप जाना)

सुग्रीव- चौपाई ॥

मैं जो कहा रघुबीर कृपाला। बन्धु न होय मोर यह काला ॥

राम-(सुग्रीव के ऊपर हाथ धरि एक पुष्पमाला प-
हिना कर) हे सखा! तुम दोनों भाई एक रूप
के थे इस कारण मैंने नहीं मारा अब मैंने चिह्न

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

के लिये तुम्हारे गले में पुष्पमाल डाल दिया है जावो फिर लड़ो.

सुग्रीव–जो आज्ञा.

(सुग्रीव का फिर जाय बालि से युद्ध करना राम का वृक्ष की ओट से बालि के बाण मारना बालि का पृथ्वी पर गिर पड़ना राम के समीप सुग्रीव का आय चरणों पर गिरना राम का वृक्ष ओट से निकल बालि के समीप जाना)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

पराबिकल महि शरके लागे। पुनि उठि बैठ दीख प्रभुआगे॥
हृदय प्रीति मुख बचन कठोरा। बोला चितै राम की ओरा॥

बालि– चौपाई ॥

धर्म हेतु अवतरेहु गोसाईं। मारेहु मोहिं ब्याध की नाईं॥
मैं बैरी सुग्रीव पियारा। कारण कौन नाथ मोहिं मारा॥

राम– सवैया ॥

बन्धु बधू भगिनी सुत बाम को वेद पुराण बखान करो रे। जानि सुता के समान कुदृष्टिहि पाप न मान हतै तेहिको रे॥ चाहत प्राण हतो कपिराज को आश्रित जानि भुजान के मोरे। नारि की बान को कान न कीन्ह बड़ो अभिमान बढ़ो शठ तोरे॥

दोहा ॥

बन्धु बधू को ग्रहण करि, शठ चाहसि कल्यान।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तोहिं बधे नहिं दोष कछु, तो सम अधम को आन ॥

बालि— दोहा ॥

सुनहु राम स्वामी सुभग, चलन चातुरी मोर।
प्रभु अजहूँ मैं पातकी, अन्त काल गति तोर ॥

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

सुनत राम अति कोमल बानी। बालि शीशपरसा निजपानी॥

राम—(बालि के मस्तक पर हाथ फेरि)

चौपाई ॥

अचल करौं तन राखौ प्राना। अहहु बत्स मम भक्त सुजाना॥

बालि— चौपाई ॥

प्रभु तुम दीनबन्धु भगवाना। दीनजानिअस बचन बखाना॥
जन्म जन्म मुनियतन कराहीं। अन्त राम कहि आवत नाहीं॥
सो मम लोचनगोचर आवा। बहुरिकि असप्रभुबनाहिबनावा॥

छन्द ॥

सो नैन गोचर जासु गुण नित नेति कहि श्रुति गावहीं। जिमि बचन मन गो निरस करि मुनि ध्यान कबहुँक पावहीं॥ मोहिं जानि अति अभिमान बश प्रभु कहत राखु शरीरहीं। अस कवन शठ हठ काटि सुरतरु बारि बवहिं बबूरहीं॥ अब नाथ करि करुणा बिलोकहु देहु यह बर माँगहूं। ज्यहि योनि जन्महुँ कर्म बश तहँ राम पद अनुरागहूँ॥

(अङ्गद का हाथ पकड़ि)

यह तनय मम सम बिनय बल कल्याण पद प्रभु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दीजिये। गहि बाँह सुर नर नाह अङ्गद दास आपन कीजिये॥

(बालि का अङ्गद को रामचन्द्र के हवाले करि प्राण त्याग करना)

चौपाई॥ (नैपथ्य)

राम बालि निज धाम पठावा। नगर लोग सब ब्याकुल धावा॥
नाना बिधि बिलापकरि तारा। छूटे केश न देह सम्हारा॥

(तारा का बिलाप करना)

तारा— लावनी॥

मैं पति बिलपति खड़ी गई पति सारी। सौंपति हो मोकों किसे बिपति में डारी॥ क्यों मुख से बोलत नहीं ख़ता क्या पाई। मैं समझाती रहि गई समुझ नहिं आई॥ क्या क्षिति में सोते पड़े छार लपटाई। नहिं चलकर करते शयन सेज कुम्हिलाई॥ डरपति थे सुरपति तुम्हें, लंकपति हारी। सौंपति हो मोकों किसे, बिपति में डारी॥ हा बिधनाने क्यों दिया जन्म था मेरा। जो उठी जवानी हुआ बिछोहा तेरा॥ नहिं किया सुबीता कछू हाय सुत केरा। करि लिया आपने जाय स्वर्ग में डेरा॥ पति सुख सम्पति तजि यहाँ कहाँ पगु धारी। सौंपति हो मोकों किसे बिपति में डारी॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

तारा बिकल देखि रघुराया। दीन्ह ज्ञान हरि लीन्हीं माया॥

राम—(तारा से)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कबित्त॥

रचि २ साँचो बिध झूठ मूठ राँचो तनु, पावक पवन जल नभ धूरि सों भरे। बहु बित्त वारे देहिं त्यागि कै सिधारे वेहू, मारे जिन काल ते पसारे पैरहैं परे॥ पञ्च तत्त्व वारो जो पियारो मन धारो धीर, हेतु कै निहारो तन आगे तौन हैं परे। तारा मम सीख मान जौन कहौं सत्य जान, जीव नित्य ताके हेत शोक कहो क्यों करे॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

उपजा ज्ञान चरण तब लागी। लीन्हिसि परमभक्तिबरमांगी॥

तारा–नाथ मेरा शोक नाश होगया मुझ को आप के चरणों में प्रीति हो.

राम–एवमस्तु.

चौपाई॥ (नैपथ्य)

तब सुग्रीवहिआयसु दीन्हा। मृतककर्म बिधिवतसबकीन्हा॥

राम–(सुग्रीव से) सखा अब शोक त्यागि बालि की क्रिया करो. (लक्ष्मण से) तात मैं पिता की आज्ञा उल्लङ्घन करि पुर नहीं जा सक्ता तुम जाकर सुग्रीव का राजतिलक करो.

लक्ष्मण–स्वामी जो आज्ञा.

(सुग्रीव का सहित लक्ष्मण जीके जाकर बालि की यथोचित क्रिया करना)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दोहा ॥ (नैपथ्य)

लछिमन तुरत बुलाये, पुर जन बिप्र समाज।
राज दीन्ह सुग्रीव कहँ, अङ्गद कहँ युवराज॥

लक्ष्मण—कपिराज अब आप सिंहासन पर बिराजिये

(सुग्रीव का सिंहासन पर बैठना लक्ष्मण का राजतिलक करना और सुग्रीव को लेकर राम समीप आना)

राम—हे कपीश! देखो राज्य पाय नीति को न भूलना और प्रजा को पुत्र के समान जानना और अब वर्षा आगई मैं यहीं प्रवर्षण गिरिपर रहूँगा तुम सहित समाज राज करो बर्षा बीतने पर जानकी का खोज कराना भूलि न जाना.

सुग्रीव—बहुत अच्छा स्वामी.

(सब का प्रस्थान)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

तब सुग्रीव भवन फिरि आये। राम प्रवर्षण गिरि पर छाये॥

इति श्रीरामरसामृतसागरनाटकेसकलकलिकलुषविध्वं-
सनेअत्रिमिलनादिसुग्रीवराजतिलकपर्यंत-
वर्णनो नाम सप्तमो भागः समाप्तः॥

इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

श्री रामरसामृतसागर नाटक

अष्टम भाग

बन्दना ॥ (नैपथ्य)

सवैया ॥

लैकर मुन्दरि लाँघि समुन्दर मारि अछय सिय शोक निवारो। शक्तिलगी तब आनिसजीवनि बेगिहि लक्षण प्राण उबारो॥ देखि बिहाल कपीश औ अङ्गद पैठि पताल निशाचर मारो। कौन को और पुकार करूँ मोहिं अंजनिनन्दन तेरो सहारो॥

चौपाई ॥

फटिक शिला अति शुभ्र सुहाई। सुख आसीन तहाँ दोउ भाई॥
कहत अनुज सन कथा अनेका। भक्तिबिरति नृपनीति बिबेका॥

प्रथमाङ्क * (दृश्य प्रबर्षण गिरि)

(राम लक्ष्मण एक चट्टान पर बिराजमान हैं)

राम–(लक्ष्मण से)

दोहा ॥

जल निर्मल नभ अमल अति, जहँ तहँ फूले काश।
बिकसे कमल सरोवरन, कीन्ह्यो शरद प्रकाश॥
निशि अगस्त प्रकटत भये, पन्थ पथिक सब जात।
अब लौं सुधि पाई नहीं, कछु सीता की तात॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सवैया ॥

हाल मिलै मोहिं कैसेहु ताल सों काल को जीति निकाल के आनूँ। जाल निहारो सुकंठ भुवाल को टाल दियो मम ख्याल नदानूँ ॥ गाल बढ्यो सुख सम्पति पाय निकालौं सो प्रातहिकाल गुमानूँ। बाल को घालक शायक जो शर सोइ कराल कमानपै तानूँ॥

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

लक्ष्मण क्रोधवन्त प्रभु जाना। धनुष चढ़ाय गहे कर बाना ॥

लक्ष्मण-(क्रोध से धनुष चढ़ाय)

दोहा ॥

कौनकार्य प्रभु कोप कर, कहा बापुरो कीश।
हतौं मूढ़ कहँ एक शर, जो आयसु जगदीश ॥

राम- दोहा ॥

जाहु चले मारेहु नहीं, लषण अतुल बल सीव।
भय देखाय लै आवहू, सखा समुझि सुग्रीव ॥

लक्ष्मण- स्वामी जो आज्ञा.

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

यहाँ पवनसुत हृदय बिचारा। रामकार्य सुग्रीव बिसारा ॥
निकटजायचरणन शिरनावा।चारिहु बिधिते कहिसमुझावा॥

प्रथमाङ्क * (दृश्य सुग्रीव सभा)

(सुग्रीव अङ्गदादि बिराजमानहैं हनूमान्का प्रवेश)

हनूमान्-(सुग्रीव से हाथ जोरि)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पद बिहाग ॥

क्या तुम भूले पड़े कपिराज ॥ क्या था करार किये तुम प्रभु सों बिसरि गये सोइ काज । कोपहिंगे जब दशरथनन्दन छुटि जैहैं सुख साज ॥ बालि बध्यो जेहि शायक रघुबर है निषङ्ग वह आज । चेत उपाय करो कछु चित सों नाहीं तो जात है राज ॥ क्या तुम भूले पड़े ॥

सुग्रीव–(काँपि कर) हनूमान्‌जी बड़ी भूल हुई.

चौपाई ॥

अब मारुतसुत दूत समूहा । पठवहु जहँ तहँ बानर जूहा ॥
कह्यो पक्ष महँ आव न जोई । मोरे कर ताकर बध होई ॥

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

तब हनुमन्त बोलाये दूता । सब कर करि सन्मान बहूता ॥
भय अरु प्रीति नीति दिखराई । चले सकल चरणन शिर नाई ॥

हनूमान्–(बानरों से) भाइयो! यह कार्य श्रीरामचन्द्र का है तन मन धन से करना चाहिये और राजा की आज्ञा पालने से आप लोगों की भलाई है इस हेतु आप लोग चारों ओर नदी बन पहाड़ कन्दरादि में जाइये और सब बानरयूथपों को सेना सहित एक पाख में बुलाकर लौटि आइये और जो एक पक्ष में न आया वह राजा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुग्रीव के कर अपनी मृत्यु जानै.

(बानरों का प्रस्थान)

चौपाई॥ (नैपथ्य)

तेहि अवसर लक्ष्मणपुरआये। क्रोध देखि जहँ तहँ कपि धाये॥

(लक्ष्मण का प्रवेश)

लक्ष्मण- दोहा॥

कहाँ छली सुग्रीव है, झूठो परम लबार।
हतौं मूढ़ कहँ निमिष महँ, जारि करौं पुर छार॥

(लक्ष्मण का कोप देखि अङ्गद का प्रवेश)

अङ्गद- दोहा॥

चूक परी छमिये प्रभू, अधम जाति हैं कीश।
मतिमलीन बुधिहीन हम, तुम समरथ जगदीश॥

लक्ष्मण-युवराज तुम डरो नहीं.

(सुग्रीव हनूमानादि बिराजमान हैं एक दूत का प्रवेश)

दूत-(हाथ जोरि) स्वामी लक्ष्मणजी घोर कोप किये आते हैं.

सुग्रीव-(चौंककर) हनूमान्‌जी बड़ा अनर्थ हुआ तुम ताराको संग लै शीघ्र जावो और लक्ष्मण जी को शान्त कर यहाँ ले आवो.

हनूमान्-जो आज्ञा.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

तारा सहित जाय हनुमाना। चरण बन्दि प्रभु सुयश बखाना॥

हनूमान्–(लक्ष्मण से हाथ जोरि)

दोहा ॥

लायक रघुनायक सबै, सुनहु गरीब निवाज।
दास जानि रक्षा करौ, बाँह गहे की लाज॥

तारा–(हाथ पकड़)

दोहा ॥

चलहु भवन करिके कृपा, क्षमहु मोर तकसीर।
अभय बाँह दीजै प्रभू, है कपिपति अति भीर॥

लक्ष्मण–अच्छा चलो.

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

करि बिनती मन्दिर लै आये। चरण पखारि पलँग बैठाये॥

(सुग्रीव का चरणों पर गिरना लक्ष्मणजी का उठाय हृदय से लगाना)

लक्ष्मण–सुग्रीव तुमको ऐसा न चाहिये था कि राज पाय स्वामी का कार्य बिसारो.

सुग्रीव–(हाथ जोरि)

चौपाई ॥

नाथ बिषय सम मद कछु नाहीं। मुनि मन मोहकरै क्षण माहीं॥

हे स्वामी ! बानरों को बोलाने चारों ओर दूत गये हैं.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लक्ष्मण–अच्छा डरो नहीं स्वामी के पास चलो.
सुग्रीव–बहुत अच्छा.

(सब का प्रस्थान)

प्रथमाङ्क * (दृश्य प्रवर्षण गिरि)

(रामचन्द्र बिराजमान हैं सुग्रीव आदि बानरों के साथ लक्ष्मण का प्रवेश सबका प्रणाम कर बैठना)

सुग्रीव– छन्द ॥

कौनसी खोरि है मोर यामें गुनी शोर चहुँ ओर तव जोर माया। नारि चख कोर जेहि फोरि नहिं पार भै क्रोध निशि घोर जो भोर पाया ॥ लोभ की डोर जेहि छोर ना कंठ में रूप सो तोर औ तोर दाया। देव शिरमौर मुनि काम में बोर हैं कीशमति थोरि मैं घोर काया ॥

चौपाई ॥

यह गुण साधन ते नहिं होई। तुम्हरी कृपा पाव कोइ कोई ॥

राम–(हँसिकर)

चौपाई ॥

डरहु नहीं त्यागहु कदराई। तुम प्रिय मोहिं भरत जिमि भाई ॥
अब सो यतन करहु मन लाई। जेहि बिधि सीता की सुधि पाई ॥

दोहा ॥ (नैपथ्य)

यहि बिधि होत बतकही, आये बानर यूथ।
नाना बरण सकल दिशि, देखिय कीश बरूथ ॥

चौपाई ॥

आय रामपद नावहिं माथा। निरखि बदन सब होहिं सनाथा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठाढ़े जहँ तहँ आयसु पाई। कह सुग्रीव सबहिं समुझाई॥

(सब बानरों का आय चरणों पर गिरना)

सुग्रीव–(बानरों से)

चौपाई॥

राम काज अरु मोर निहोरा। बानरयूथ जाहु चहुँ ओरा॥
जनकसुता कहँ खोजहु जाई। मास दिवस महँ आयहु भाई॥
अवधि मेटि जो बिन सुधि पाये। अवशि मरी सो मम कर आये॥

दोहा॥ (नैपथ्य)

बचन सुनत सब बानर, जहँ तहँ चले तुरन्त।
तब सुग्रीव बोलायऊ, अङ्गदादि हनुमन्त॥

सुग्रीव– चौपाई॥

सुनौ नील अङ्गद हनुमाना। जाम्बवन्त मति धीर सुजाना॥
सकल सुभट मिलि दक्षिणजाहू। सीता सुधि पूछेव सब काहू॥
मन क्रम बचन सुयतन बिचारेहु। रामचन्द्र को काज सँवारेहु॥
देह धरे कर यह फल भाई। भजिय राम सब काम बिहाई॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

आयसु माँगि चरण शिर नाई। चले सकल सुमिरत रघुराई॥
पाछे पवनतनय शिर नावा। जानिकाज प्रभु निकट बुलावा॥

(सब बानरों का प्रणाम करि जाना हनूमान्‌जी का सब से पीछे शिर झुकाना)

राम–(पास बैठा मुँदरी देकर)

कुण्डलिया॥

प्यारी से कहियो बचन कछू खोरि नहिं मोरि।
अब लौं मैं खोजत फिरेवँ सुधि नहिं पायों तोरि॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुधि नहिं पायों तोरि बहुत दुख संकट सहिके।
अब आवत हौं बेगि सयन मर्कट सँग लैके॥
लैके मर्कट सङ्ग फोरि गढ़ रावण मारी।
लै ऐहौं तोहिं शीघ्र धीर धारो मन प्यारी॥

चौपाई॥

बहुप्रकार सीतहि समुझायहु। कहि बलबेगि बीर तुम आयहु॥

(हनूमान् का प्रणामकर प्रस्थान)

प्रथमाङ्क * (दृश्य बन)

(सब बानरों का बन में पियासे दृश्य आना)

चौपाई॥ (नैपथ्य)

लागि तृषा अतिशय अकुलाने। मिलै न जल बन गहन भुलाने॥

जाम्बवन्त—पवनतनय यह बड़ा बीहड़ बन है और कहीं जल नहीं देखि पड़ता यदि जल न मिला तो सब के प्राण निकल जावेंगे.

हनूमान्—हाँ भाई सचहै पर मैं कोई उपाय करता हूं (हनूमान्जी का एक बृक्ष पर चढ़ कर नीचे उतर सब बानरों से कहिना) भाइयो! वह देखो एक कन्दरा देखाई देती है जिसमें से भीगे हुये पक्षी निकल रहे हैं इसमें चलने से अवश्य मिलेगा.

(सब का प्रसन्न होजाना)

चौपाई॥ (नैपथ्य)

आगे करि हनुमन्तहि लीन्हा। पैठे बिबर बिलम्ब न कीन्हा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दोहा॥

दीख जाय उपबन सुभग, सर बिकसित बहु कञ्ज।
मन्दिर एक रुचिर तहँ, बैठि नारि तपपुञ्ज॥

(हनूमान्‌जी को आगे कर सब बानरों का बिबर में जाना और वहाँ एक तपस्विनी का देखि पड़ना सबका प्रणाम कर बैठ जाना)

तपस्विनी— दोहा॥

कार्य कौन आये इतै, जात कहाँ कपिबीर।
कहौ धाम औ नाम निज, क्यों आये मम तीर॥

हनूमान्— सवैया॥

रामलला अवधेश के बालक मानिके बैन पिता बन आये। सङ्ग में नारि स्वरूप कि आगरि नाम सिया कोउ ताहि चुराये॥ ताही के दूत हैं मातु सबै हम खोजन को रघुनाथ पठाये। ढूँढ़ि फिरे कहुँ पाये नहीं अब आये इतै सब प्यास सताये॥

तपस्विनी— दोहा॥

करहु जाय जल पान सब, खाहु मधुर फल जौन।
श्रवण करहु मम कथा पुनि, आगे कीजो गौन॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

मज्जन कीन्ह मधुर फल खाये। तासु निकट पुनि सब चलि आये॥

(सब का जल पानकर तपस्विनी के पास आना)

तपस्विनी—(बानरों से)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौपाई॥

देवाङ्गना सो नाम हमारी। एक समय तप करन बिचारी॥
ब्रह्मा से माँगेवं बरदाना। दर्शन मैं पावों भगवाना॥
ब्रह्मा कह्यो रह्यो यहिथाना। आवहिं यहाँ कीश बलवाना॥
तिनसों राम खबर तुम पाई। पावहुगी दर्शन रघुराई॥
सो वह सत्य भई अब बानी। जाहुँ दरश हित शारँग पानी॥
मूँदहु नयन बिबर तजि जाहू। पैहहु सीतहि जनि कदराहू॥

(ऐसा कहि तपस्विनी का राम समीप जाना और दर्शन करि तपहेतु जाना सब बानरों का आँख मूंदे समुद्र किनारे दृश्य आना)

प्रथमाङ्क * (दृश्य समुद्रतट)

(सब बानर समुद्र तट आँख मूँदे बैठे हैं)

चौपाई॥ (नैपथ्य)

नयन मूँदि देखहिं कपि बीरा। ठाढ़े सकल सिन्धुके तीरा॥

(बानरों का आँख खोलना और समुद्रतट देख कहना)

सब बानर–भाइयो! देखो तो एक तपस्विनी ने हम को कितनी जल्दी यहाँ पहुँचा दिया धन्य हैं भगवत्भक्त, अब क्या करना चाहिये क्योंकि एक मास व्यतीत हो चला और महारागीजी की सुधि न मिली.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अङ्गद–(आँसू भरिकर)

चौपाई॥

सुनो सबै मैं कहत पुकारी। दुहुँ प्रकार भइ मृत्यु हमारी॥
यहाँ न सुधि सीता की पाई। वहाँ गये मारहिं कपिराई॥
पिता बधे पर मारत मोही। राखा राम निहोरन ओही॥
मैं अब सत्य कहूं सब पाहीं। मरण भयो कछु संशय नाहीं॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

अङ्गद बचन सुनत कपि बीरा। बोल न सकहिं नयन बह नीरा॥

सब–

हमसीताकी बिन सुधिलीने। नहिं जैहैं युवराज प्रबीने॥

(सब का सिन्धु के समीप बैठना)

चौपाई॥ (नैपथ्य)

जामवन्त अङ्गद दुख देखी। कही कथा उपदेश बिशेखी॥

जाम्बवन्त– चौपाई॥

तात रामकहँ नर जनि जानहु। निर्गुण ब्रह्म अजित अज मानहु॥
हमसब सेवक अति बड़भागी। सन्तत सगुण ब्रह्म अनुरागी॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

यहिबिध कथा कही बहु भाँती। गिरि कन्दरा सुना सम्पाती॥

प्रथमाङ्क * (दृश्य खोह)

(एक कन्दरा से सम्पाती गृद्ध का निकलना)

सम्पाती– ठेठर॥

मारे भूखों के मरते थे हम, हम पर हरि की हो

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गई दाया। यह बहुत कीश यकदम् हमने घर बैठेही पाया ॥ बंद ॥ आज तो खूब मिला। क्यों न खाऊँगा भला ॥ बहुत भूखों का जला। खाऊँ सब को धमा धम धम ॥ हम पर हरि की होगई दाया ॥ बन्द ॥ खूब सा पेट भरूँ। अब नहीं देर करूँ ॥ क्यों भला भूखों मरों। नहिं खाने को है कुछ कम ॥ हम पर हरि की हो गई दाया ॥

चौपाई ॥   (नैपथ्य)

डरपे गृद्धबचन सुनि काना। अब भा मरण सत्य हमजाना॥

सब बानर–भाइयो ! जब न मरे तो अब मरे.

अङ्गद–भाई ! धन्य है जटायु को जिन्होंने रघुनाथ जी को अपना जान अपने प्राण उनके हेतु लगाये और आप स्वर्ग को सिधाये अहो भाग्य जिनकी क्रिया श्रीरघुनाथ जी ने अपने हाथ किया.

चौपाई ॥   (नैपथ्य)

सुनि खग हर्षशोकयुत बानी।आवा निकट कपिन भयमानी॥

(सम्पाती का बानरों की ओर चलना सब का भागना)

सम्पाती–भाइयो ! डरो नहीं हम तुमको भक्षण न करेंगे तुमको रामचन्द्रकी शपथ जो भागो.

(सबका खड़े होजाना)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सम्पाती–भाइयो! जटायु का क्या समाचार कहतेथे.

जाम्बवन्त–गृद्धराज रघुनाथजी पिता की आज्ञा मान वन में आये रहे वहाँ कोई उनकी स्त्री छल कर हरे लिये जाता था जटायुने रोका और घोर युद्ध कर अपने प्राण गँवाये रघुनाथजी ने उनकी क्रिया अपने हाथ से किया हम लोग भी अब श्रीजानकीजी के खोजमें आये हैं.

सम्पाती–धन्य श्रीरघुनाथजी.

दोहा॥

मोहिं लै चलहु सिन्धु तट, देहुँ तिलाञ्जलि ताय।
वचन सहायक होब मैं, पैहहु खोजहु जाय॥

(सब बानरों का सम्पाती को सिन्धुतट ले जाना सम्पाती का जटायु की क्रिया करना)

चौपाई॥ (नैपथ्य)

अनुजक्रियाकरि सागरतीरा। कह निज कथा सुनहु कपिबीरा॥

सम्पाती– पद॥

भाई जटाई अरु हम दोनों रबि ढिग गगन उड़े प्यारे। तेज न सो सहिसक फिरि आयो मैं अभिमान रह्यों धारे॥ जबहिं गयों मैं भानु निकट तब मेरे पंख जरेसारे। भूमि परेवँ ब्याकुल तनु तलफों मुनी चन्द्रमा पगुधारे॥ दयालागि मोहिं ज्ञान बतायो सब अभि-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मान कियो न्यारे। रामदूत त्रेता तोहिं मिलिहैं आवहिं खोज सिया झारे॥ लङ्क बैठि सिय तिनहिं देखायो पंख जमैं तुम्हरे सारे। सो मैं दरश पाय कपि तुम्हरे तरुण भयो तनु हरियारे॥ शत योजन मर्याद सिन्धु की जो कोइ पार सकै जारे। सो रघुबरको कार्य सँवारै सुयश सकल जग बिस्तारे॥

चौपाई॥

मोहिं बिलोकि धरहु उर धीरा। राम कृपा कस भयो शरीरा॥
तासु दूत तुम तजि कदराई। राम हृदय धरि करहु उपाई॥

(गृद्ध का सबको समझाकर प्रस्थान)

(सब बानरों का बैठकरि बिचार करना)

चौपाई॥ (नैपथ्य)

निज २ बल सब काहू भाखा। पार जान कर संशय राखा॥

बिकट–भाई मैं तीस योजन जा सक्ता हूँ.

नील–पचास योजन तो मैं भी जा सक्ता हूँ.

नल–अस्सी योजन तक तो मुझ में भी बल है.

जाम्बवन्त–मैं तो अब बूढ़ा हुआ नहीं तो पारजाना कुछ कठिन न था क्योंकि–

दोहा॥

बलि बाँधत प्रभु बाढ़्यो, सो बपु बरणि न जाय।
उभय घरी महँ दीन्ह मैं, सात प्रदक्षिण धाय॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

और अब भी पंचानबे योजन जा सक्ता हूँ.

अङ्गद–मैं तो पार चला जाऊंगा परन्तु लौटने में शंका है.

जाम्बवन्त–युवराज ! तुम सब कुछ करसक्तेहो परन्तु तुम्हारा जाना अनुचित है. (हनूमान् से)

दोहा॥

मौन गहे बैठे कहा, बोलहु नहिं हनुमान।
कौन कार्य जग में कठिन, करि न सकहु बलवान॥

चौपाई॥

राम कार्यलगि तव औतारा। होहु सजग अब पवनकुमारा॥

हनूमान्–(गर्जिकर) जाम्बवन्त क्या आज्ञा होतीहै.

कबित्त॥

जाऊँ मैं पार मार रक्षक पुर द्वार जौन, जारिलङ्क राकस सँहार छार लाऊँ मैं। लाऊँ मैं सुन्न एक मुण्ड काटि दण्ड बीस, रुण्ड खण्ड २ गीध झुण्डन चुनाऊँ मैं॥ नाऊँ मैं बारिधमें कूटके त्रिकूट सबै, कहौ ऋच्छराज कौन कौतुक करि आऊँ मैं। आऊँ मैं गहे केश मय की वह सुता जौन, नेक सीख दीजे मोहिं बेगि लङ्क जाऊँ मैं॥

जाम्बवन्त– चौपाई॥

इतना करहु तात तुम जाई। सीतहि देखि कहौ सुधि आई॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तब निजभुजबल राजिवनैना। कौतुकलागि संगकपि सैना॥
मारि असुर भुवभार नशाई। लै ऐहैं सीतहिं सुन भाई॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

जाम्बवन्त के बचन सुहाये। सुनि हनुमान हृदय अतिभाये॥

हनूमान्- दोहा॥

तब लगि मोहिं परेखियो, कन्द मूल फल खाय।
जब लगि सियसुधि लायमैं, भेटौं तुमहिं न आय॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

अस कहि नाय सबन कहँ माथा। चले हर्षि हियधरि रघुनाथा॥

(हनूमान्जी का बिदा होजाना)

समुद्र-(अदृश्य मैनाक से) हे मैनाक! हनूमान्जी रामचन्द्र के कार्य को पार जाते हैं तुम मार्ग में ऊँचे होकर उनको बिश्राम दो.

मैनाक-बहुत अच्छा (ऊँचा होकर हनूमान् से)

दोहा॥

जान दूरि अबहीं बहुत, करहु बचन मम कान।
हरहु कछुक श्रम ठाढ़ ह्वै, मोपर श्रीहनुमान॥

हनूमान्- दोहा॥

सन्तजनन की रीति यह, कीन्ह्यो जो तुम काम।
रामकार्य कीन्हे बिना, मैं न करूँ बिश्राम॥

(हनूमान्जी का प्रस्थान)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रथमाङ्क * (दृश्य सुरसा)

चौपाई॥ (नैपथ्य)

सुरसानाम अहिन की माता। मगमहँ मिली कहिस असबाता॥

(हनूमान्‌जी चलेजाते हैं सुरसा का मार्ग रोकि)

सुरसा- चौपाई॥

भूख प्यास सहि बहुदिन टारा। आजु सुरन मोहिं दीन्ह अहारा॥

अहा हा हा आज तुमको खाकर पेट भरूंगी.

हनूमान्- पद॥

राम काज मैं जाता रि माता॥ सिय सुधि लाय कहूँ रघुबर सों पुनि तव बदन समाता रि माता। मारग छोड़ जानदे मोहीं सत्यकहूँ यह बाता रि माता॥ धन्य देह मम तव हित लागै काल काहि नहिं खाता रि माता। इतनिन छोह देखि सीता को मन अभिलाष मिटाता रि माता॥

सुरसा-वाह२ मैं न जाने दूंगी तुम फिर क्यों आवोगे.

चौपाई॥ (नैपथ्य)

कौनेहु यतन देहि नहिं जाना। बहुत प्रकार कह्यो हनुमाना॥

हनूमान्-माता मेरी बात सत्य मान मुझे जान दे.

सुरसा-(हूँ) मैं भूखी हूँ इनको सत्य झूठकी पड़ीहै.

हनूमान्-तो ले फिर भक्ष ले.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(सुरसा का बदन बढ़ाना और हनूमान्‌जी का
द्विगुणरूप होजाना सुरसा का बहुत बड़ा
रूप धरना हनूमान्‌जी का उसके बदन
में छोटे रूपसे प्रवेश कर बाहेर
निकल प्रणाम करना.)

हनूमान्–(सुरसा से) ले अबतो जानेकी आज्ञा दो.

सुरसा– चौपाई ॥

मोहिं सुरन जेहि लागि पठावा। बुधि बल मर्म तोर मैं पावा ॥

दोहा ॥

राम कार्य सब करिहौ, हौ बल बुद्धि निधान।
आशिष मोर अमोघ यह, लेहु जाहु हनुमान ॥

(सुरसा का प्रस्थान)

प्रथमाङ्क * (दृश्य लङ्का)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

पार जाय देखी बन शोभा। गुञ्जत चञ्चरीक मद लोभा ॥

हनूमान्–(लङ्का को देखि) वाह यह तो अति सुन्दर पुरीहै और बड़े २ घोर निशाचर रखवार हैं यदि मैं युद्धकरूँ तो ऐसा न हो कुछ कार्य में हानि हो मुझे इस समय छोटारूप धारि जाकर कार्य सवाँरना चाहिये.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

मशक समान रूप कपि धरी। लङ्का चले सुमिरि नर हरी ॥

(हनूमान्‌जी का छोटेरूप से लङ्का में प्रवेश एक राक्षसी का मिलना)

राक्षसी–(हनूमान् से) अरे तू छलकर कहाँ जाता है मुझे नहीं जानता कि मैं लङ्कद्वार पर चोरों की रखवार हूँ.

(हनूमान् का एक मुष्टिक लङ्किनी के मारना उसका गिर पड़ना)

राक्षसी–(उठकर) हे कपि! ब्रह्मा ने मुझ से कहा था कि जब तू कपि के मारने से बिकल होगी तब निश्चरकुल का नाश जानना सो हे कपि! आज ब्रह्मबाक्य सत्य हुई. अब

चौपाई ॥

प्रबिशि नगर कीजे सब काजा। हृदय राखि कोशलपुरराजा ॥

(लङ्किनी का प्रस्थान)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

अतिलघु रूप धरेव हनुमाना। पैठा सुमिरि नगर भगवाना ॥

(हनूमान्‌जी का चारों ओर घूम जानकीजी को खोजना और न मिलने से शोकित होजाना)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रथमाङ्क * (दृश्य बिभीषण भवन)

चौपाई॥ (नैपथ्य)

भुवन एक पुनि दीख स्वहावा। हरि मन्दिर तहँ भिन्न बनावा॥

(हनूमान् का एक मन्दिर देखि बिचारना)

हनूमान्-(स्वतः)

सवैया॥

ठौरहि ठौर लसै तुलसीदल बृन्द अनेक महाछबि छायो। अङ्कित राम को नाम सबै दिश सुन्दर शोभित धाम सुहायो॥ लङ्कपुरी अघखान भरी सब ज्ञान हरी जो घरी भर आयो। दुष्ट निशाचर बास करैं यहँ दास ने कैसे सुपास है पायो॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

मन महँ तर्क करन कपि लागे। ताही समय बिभीषण जागे॥

(बिभीषण का जाग कर भगवत् भजन करना)

बिभीषण- पद॥

मेरे मन राम नाम ताहि नहिं बिसारूँ। तामस तनु अधम देह, कौन यतन करूँ नेह, निश दिन नित भोर साँझ रामको पुकारूँ॥ मेरे॥ काम क्रोध लोभ मोह, रोग रारि दोष द्रोह, इनसे हित अष्टयाम नेकु ना निवारूँ॥ मेरे मन॥ चाहत मन मिलहुँ जाय, होहुँ सफल दरश पाय, जानूँ नहिं राम कहाँ कौन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दिश सिधारूँ ॥ हे बिधि करुणानिधान, मिलहिं कबहुँ दास जान, निशचर मति मोर थोरि कैसे धीर धारूँ ॥ मेरे मन राम नाम ताहि नहिं बिसारूँ ॥

हनूमान्–(स्वतः) वाह यह तो कोई परम भक्त मालूम होते हैं इनसे मिलने में अवश्य कार्य बन जायगा (प्रकट) ब्राह्मणरूपधरि.

पद ॥

हे भाइ ! मैं बिप्र दूरि से द्वारे तेरे आया हूँ ।
तेरे भवनको देखि सुखी ह्वै दर्शन आश लगाया हूँ ॥
सब रजनी नगरी में घूम्यों सन्त कहूँ नहिं पाया हूँ ।
करिनिहाल मोहिं दरश दिखादे कछू मनोरथ लाया हूँ॥

हे भाई जै सीताराम.

(बिभीषण का उठि कर प्रणाम कर हनूमान्जी को पास बैठाना)

बिभीषण–हे बिप्र अपनी कथा कहिये क्या आप कोई भगवत्भक्त हैं ? मुझे बड़ाई देने के हेतु आये हैं.

दोहा ॥ (नैपथ्य)

तव हनुमन्त कही सब, राम कथा निज नाम ।
सुनतयुगलतनपुलकमन, मगनसुमिरिगुणग्राम ॥

हनूमान्–हे भाई ! हमारा नाम हनूमान् है, कौशलेन्द्र

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कुमार श्रीरामचंद्र बन में सहित अपनी स्त्री श्रीजनकनन्दिनीजी के आये रहे, वहाँ से कोई राक्षस उनकी स्त्रीको चुरा लायाहै जिन के खोजने हेतु मेरे प्रभु ने मुझे पठाया है, हे सज्जन ! मैं बड़े परिश्रम से यहाँ आया और यथाशक्ति खोज लगाया परन्तु कहीं पता न पाया यदि आप जानतेहों तो कृपाकरि बताइये. और हे मित्र ! इन दुष्टजीवों के पास आप कैसे निवास करते हैं.

बिभीषण–हे बिप्र ! आप धैर्य धारण कर हमारे समाचार सुनिये.

चौपाई ॥

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी। जिमिदसननमहँजीहबिचारी ॥
तातकबहुँमोहिंजानिअनाथा। करिहहिं कृपा भानुकुलनाथा ॥
तामस तनु कछुसाधन नाहीं। प्रीति न पदसरोज मन माहीं ॥
अबमोहिं भा भरोसहनुमन्ता। बिनुहरिकृपामिलहिंनहिंसन्ता ॥
जो रघुबीर अनुग्रह कीन्हा। तब तुम मोहिं दरशहठ दीन्हा ॥

हे विप्र ! बिना रघुनाथजी की कृपा के सन्त नहीं मिलते हैं.

हनूमान्–

सवैया ॥

रीति यही करुणाकर की निज दास से प्रीति सदाही करैं। कौन कुलीन सबै बिधि हीन मैं देखिकै

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मोहू को मोद भरैं ॥ ऐसे कृपालु जो दीन दयालु भजैं नाहिं ते भवजाल परैं। ज्ञाननिधान धरो नित ध्यान तो काहे न आन के शोक हरैं ॥

हे सखे! अब धैर्य धरो तुम रघुनाथजीको अत्यन्त प्यारे हो.

चौपाई ॥

अब मम काज करहु कछु भ्राता। देखा चहहुँ जानकी माता ॥

बिभीषण— दोहा ॥

लायहु रावण जबहिं हर, मात सीय कहँ बीर।
बन अशोक राखत भयो, पहरो कियो गँभीर ॥
कनकभवन प्राची दिशा, सोई बाग लखाय।
तहँ बैठी शोचत सिया, हनुमत देखहु जाय ॥

(हनूमान् जी का प्रणाम करि प्रस्थान)

प्रथमाङ्क * (दृश्य अशोकबाटिका)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

करिसोइ रूपगयो पुनि तहवाँ। बन अशोक सीता रह जहवाँ ॥
तरु पल्लव महँ रहा लुकाई। करै बिचार करौं का भाई ॥

(जानकी जी अशोक बृक्ष के नीचे बिराजमान हैं हनूमान् जी का उसी बृक्ष पर छिप कर बैठना रावण का प्रबेश)

चौपाई ॥

बहुबिध खल सीतहिं समुझावा। साम दाम भय भेद देखावा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रावण–(जानकी से)

चौपाई ॥

सत्य कहूँ सुनु सुमुखि सयानी। मन्दोदरी आदि सब रानी॥
तव अनुचरी करौं प्रण मोरा। एक बार बिलोक मम ओरा॥

(जानकी जी का तृण ओट करि कहना)

जानकी–

कबित्त ॥

खोयके कान बढ़ो अभिमान न जानत श्रीभगवान भु-जानरे। ले अनुमान कहाँ बिकसान सरोज उये जुगनू बिन भानरे॥ बाज प्रमाण है राम को बाण तु आपन जान लवा सम मानरे। शून्यस्थान से चोर समान हमैं हरि आनि है लाज हेरानरे॥

दोहा ॥ (नैपथ्य)

आपहि सुनि खद्योत सम, रामहिं भानु समान।
परुष बचन सुनि काढ़ि असि, बोला अति रिसियान॥

रावण–(तलवार खींचकर)

सोरठ ॥

मम अपमान महान, सीता तैं कस करत हसि।
कहा मोर ले मान, न तो कृपाण यह तोर शिर॥

जानकी–(तलवार ओर देखि) अरे शठ! मैं तो चा-हतीही हूँ कि तू मेरा शिर काटिले और मैं श्रीरघुनाथजी की बिरहसे छूटि जाऊँ, और

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यह तो मैंने बिचारही रक्खाहै कि यातो मेरे गलेमें प्राणप्यारेके हाथ या तेरी तलवार.

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

सुनत बचन पुनि मारन धावा। मय तनया कहि नीति बुझावा॥

मन्दोदरी–स्वामी क्या आपने लाज धर्म्म के साथ नीति को भी त्याग दिया जो परस्त्री पर हथियार प्रहार का बिचार किया.

रावण–अच्छा प्यारी मैं तुम्हारे कहिने से इस्को छोड़े देता हूँ परन्तु जो एक मासमें मेरीबात न मानी तो अवश्य इसके जीवकी हानीहोगी (रक्षकों से) तुमलोग सीता को भय देखाकर मेरे बश करो नहीं तो इस्के साथ तुम्हारी भी कुशल नहीं है.

(रावण का प्रस्थान त्रिजटा का प्रवेश)

त्रिजटा–(रक्षकों से) हे सखियो ! मैंने रात्री को एक स्वप्न देखा है सो सुनो.

पद ॥

यक स्वपना मैंने देखारी ॥ दूतएक पठयो रघुबर को आयो कपिके भेखारी। बाग उजारि नगर सब जाख्यो राख्यो शूर न शेषारी ॥ खर आरूढ़ नगन तन रावण कटे शीश भुज पेखारी। बैठ बिभीषण दशमुख आसन लेत राजकर लेखारी ॥ सत्य बिचार चारि दिन बीते

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

करिहौ स्वप्न परेखारी। सीतहि सेइ करो हित आपन तजो कुमति मति बेषारी॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

तासु बचन सुनतै सब डरीं। जनकसुता के चरणन परीं॥

(सब रक्षकों का जानकीजी के निकट से प्रस्थान)

जानकी-(त्रिजटा से हाथ जोरि)

चौपाई॥

मात कहौं मैं दोउ कर जोरी। होहु बिपति महँ सङ्गिन मोरी॥
तजहुँ देह करि बेगि उपाई। दुसहबिरह अब नहिंसहिजाई॥
आनि काठरचि चिता बनाई। मातु अनल तुम देहु लगाई॥

हे माता अब मुझ से यह दुख नहीं सहाजाता मुझे बचा.

त्रिजटा-हे राजकुमारी! कुछ काल धैर्य्य धारो क्योंकि अब तुम्हारी बिपति का अन्त हो चुका और इस समय अग्नि नहीं मिलसक्ती.

(त्रिजटा का प्रस्थान)

जानकी-(शोकित हो)

ग़ज़ल॥

कैसी अभागिनी मैं सहिती हूँ दुःख भारी। पावक तलक न मिलती बिधना कि गति है न्यारी॥ देखूँ प्रकट गगन में तारों ने आग बारी। देते न नेक मोकों भगवत् बिमुख बिचारी॥ सुनिये अशोक मेरी बिनती करूँ पुकारी। निज नाम लाज रक्खो हरिये बिपति

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हमारी ॥ डालों में तेरे पत्ते अङ्गार सम निहारी। सो मुझको दान दीजै दासी हूँ मैं तुम्हारी ॥ कैसी अभागिनी ॥

(जानकी को शोकित देखि हनूमान जी का
मुँदरी डाल देना और जानकी जी
का अँगूठी उठाकर देखना)

जानकी-(स्वतः) अरे यह तो मेरे प्राणप्यारे के हाथ की अँगूठी है यहां कैसे आई क्या कोई जीतकर लाया या दूसरी बनाई नहीं २ ऐसा भी नहीं हो सक्ता न तो कोई ऐसी निर्माण कर सक्ता है और न कोई रघुनाथ जी को जीत सक्ताहै.

(जानकी का अधिक शोकित हो जाना)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

सीता मन बिचारि करि नाना। मधुर बचन बोले हनुमाना ॥

हनूमान- पद ॥

धनि २ श्रीअवधेशदुलारे । बधि मारीच ताड़का छण में मुनि की यज्ञ सँवारे ॥ धनि २ ॥ मग में तारि नारि गौतम की मिथिलापुर पगु धारे ॥ धनि धनि ॥ तोरि धनुष मद गंज्यो भृगुपति सीता शोक निवारे ॥ धनि २ श्री ॥ पिता बचन सुनि गवन कियो बन सँग सिय लक्षिमण प्यारे ॥ धनि २ श्रीअवधेशदुलारे ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जानकी–यह अमृतरूपी कथा सुनाकर मेरे प्राणों की रक्षा करनेवाला कौन है क्यों नहीं प्रकटहोता.

(हनूमान जी का जानकी जी के निकट जाना और जानकी जी का राक्षसी माया की शंका से मुहँ फेरि लेना)

हनूमान– चौपाई॥

रामदूत मैं मातु जानकी। सत्य शपथ करुणानिधानकी॥
यह मुद्रिका मातु मैं आनी। दीन्ह राम तुमकहँ सहिदानी॥

जानकी– दोहा॥

कौन रीति सों कहु भई, नर बानर से प्रीति।
कछु छल मोकहँ लखि परै, होत न मन परतीति॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

सुनत बचन सीता के ऐसे। कही कथा संगति भइ जैसे॥

हनूमान– सवैया॥

रामहिं राम पुकारि जबै, तुम डारि दियो पट मारग माहीं। लै कपिराज धस्यो हित सों जब खोजत तोहिं गये सुरसाईं॥ दै पट मीत सुकंठ बन्यो अरु खोजन कीश गये चहुँ घाहीं। ताहि में एक महूँ सुन मातु कहूँ सति बात कछू छल नाहीं॥

दोहा॥

मुँदरी मोकहँ दीन्ह प्रभु, आपनि बिथा बताय।
सफल जन्म मेरो भयो, लखि जननी तौ पाय॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दोहा ॥ (नैपथ्य)

कपि के बचन सप्रेम सुनि, उपजा मन बिश्वास।
जाना मन क्रम बचन यह, कृपासिन्धु कर दास॥

जानकी- चौपाई ॥

बूड़त बिरह जलधि हनुमाना। भयो तात मोकहँ जलजाना॥
अबकहुकुशलजाहुँ बलिहारी।अनुज सहित सुखभवन खरारी॥
कोमल चित कृपाल रघुराई। कपि केहि हेतु धरी निठुराई॥
कबहुँ नैन मम शीतल ताता। ह्वै हैं निरखि श्याम मृदुगाता॥

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

देखि परम बिरहाकुल सीता। बोला कपि मृदुबचन बिनीता॥

हनूमान-हे माता! रघुनाथजी सहित भ्राता कुशल से तो हैं परन्तु तेरे बियोग का उनको जो दुःख है वह कहा नहीं जाता.

चौपाई ॥

जो रघुबीर होत सुधि पाई। करते नहिं बिलम्ब रघुराई॥
कछुक दिवस जननी धरु धीरा। कपिन सहित ऐहैं रघुबीरा॥
निशिचर मारि तुम्हैं लै जैहैं। तिहुँ पुर नारदादि यश गैहैं॥

जानकी- चौपाई ॥

हैं सुतसब कपितुमहिं समाना। यातुधान भट अतिबलवाना॥
मोहिंसन्देहहोतकछुताता। होइहिकेहिबिधिनिशिचरघाता॥

हनूमान-(बिकटरूप धरि)

दोहा ॥

सुन माता शाखामृगहिं, नहिं बल बुद्धि बिशाल।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रभु प्रताप ते गरुड़ही, खाय परम लघु ब्याल॥

चौपाई॥

रामबाण रबि उदय जानकी। तम बरूथ कहँ जातुधानकी॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

मन सन्तोष सुनत कपि बानी। भक्त प्रताप तेज बल सानी॥

जानकी- दोहा॥

अजर अमर सुत होहु तुम, बुधिनिधान बलबीर॥
भक्त शिरोमणि जग यशी, करहिं छोह रघुबीर॥

हनूमान- चौपाई॥

अब कृतकृत्य भयों मैं माता। आशिष तव अमोघ बिख्याता॥

छन्द॥

मोहिं सुघर रूख। लखि लागि भूख॥

जानकी- छन्द॥

रखवार बीर। अतिही गँभीर॥

हनूमान- छन्द॥

का करहिं मोर। आयसु जो तोर॥

जानकी- छन्द॥

प्रभु सुमिरि जाहु। फल मधुर खाहु॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

चल्यो नाय शिर पैठ्यो बागा। फल खाये तरु तोरनलागा॥
रहे तहाँ बहु भट रखवारे। कछु मारे कछु जाय पुकारे॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(जानकी जी की आज्ञापाय हनूमान जी का बाटिका में जाय फलों को खाय वृक्षों का उखाड़ना और बाटिकारक्षकों के मना करने पर राक्षसों को मार एक वृक्ष पर बैठना)

प्रथमाङ्क * (दृश्य राजदर्बार)

(रावण मन्त्रियों युत बिराजमान है एक राक्षस का प्रबेश)

राक्षस-(रोकर)

चौपाई॥

नाथ एक आवा कपि भारी। सोइ अशोक बाटिका उजारी॥
खाये फल अरु बिटप उखारे। जहँ तहँ पटकि पटकि भट मारे॥

रावण-(अक्षयकुमार से)

दोहा॥

लखहु जाय सुत कीश कस, आयहु बाग मँझार।
बन उजार रखवार सब, किमि कीन्हिसि संहार॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

पिता बचन सुनि अछयकुमारा। चला सङ्ग लै सुभट अपारा॥

(अक्षयकुमार का प्रस्थान)

प्रथमाङ्क * (दृश्य अशोकबाटिका)

(हनूमान का एक वृक्ष पर देख पड़ना अक्षय-कुमार का प्रवेश)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अक्षयकुमार–अरे दुष्ट! तू कौन है जो मेरा बाग उजार रखवारों को मार निडर हो बैठा है.

(हनूमानजीका वृक्षपरसे कूद एक वृक्ष को उखाड़कर अक्षयकुमार को मारडालना फौज का भागना)

प्रथमाङ्क * (दृश्य राजसभा)

(रावण मेघनाद युत बिराजमान है एक राक्षस का प्रवेश)

राक्षस–(रोकर) महाराज! अजी आज राजमें ठेस लग गई. हाय बापरे.

रावण–अबे पागल सा क्या बक्ता है.

राक्षस–महाराज! वही दुष्ट बन्दर जो बाग़ के अन्दर आया है ना उसने चुने चुने भटों को मार अक्षयकुमार का संहार कर दिया हाय बापरे.

रावण–(शोचबश कुछ बिचार मेघनाद ओर निहार) पुत्र! देखोतो कैसा बानर है उस को जीता पकड़ लावो.

मेघनाद–पिता जी अभी लाता हूँ.

(मेघनाद का प्रस्थान)

प्रथमाङ्क * (दृश्य अशोकबाटिका)

चौपाई॥ (नैपथ्य)

चला इन्द्रजित अतुलित योधा। बन्धु बधन सुनि उपजा क्रोधा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कपि देखा दारुण भट आवा। कटकटाय गरजा अरु धावा॥

(हनूमान् जीका एक वृक्ष पर दृश्यआना मेघनाद का प्रवेश)

मेघनाद-(गरजकर) कहाँ है मेरे भाई के मारने वाला बन्दर.

(हनूमान् जीका गरजकर उतरना मेघनादका युद्ध करने के पश्चात् हनूमान् जी को नागास्त्रसे बाँध लेजाना)

प्रथमाङ्क * (दृश्यसभा)

(रावण मंत्रियोंयुत बिराजमान है मेघनाद का हनूमान्जी को बाँधेहुये सभा में प्रवेश)

रावण-(हनूमान्जीसे)

कवित्त॥

कौन तू लबार कीश,
हनूमान्-दूत राम जक्क ईश,
रावण-कौन राम,
हनूमान्-जौन तोर भग्नि कुगति कीन्ही है।
रावण-तोहिं शङ्क लङ्क नाहिं,
हनूमान्-लङ्क बीर नहिं लखाहिं,
रावण-मोकों नहिं सुने कान,
हनूमान्-बाल हाल दीन्ही है॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रावण–इत को क्यों गमन कीन्ह,
हनूमान्–सीय खोज चित्त दीन्ह,
रावण–कैसे बन खीश कीन्ह,
हनूमान्–कपिस्वभाव लीन्ही है।
रावण–यश न श्रवण सुनिस मोर,
हनूमान्–हाँ हाँ हाँ नारिचोर,
रावण–राकस बध कौन हेतु,
हनूमान्–अधम जाति चीन्ही है॥

दोहा॥

रावण–काकेबलकोपायशठ, मारे अक्षकुमार।
हनूमान्–जाकेबललवलेशते,तुमजीत्योसन्सार॥

चौपाई॥

सुन दशकण्ठ कहौं प्रण रोपी। रामबिमुख त्राता नहिं कोपी॥
शंकर सहस बिष्णु अज तोही। सकहिं न राखिरामकरद्रोही॥
बिनती करहुँ जोरि कर रावन। सुनहुमानतजिमोरसिखावन॥
देखौतुम निज कुलहि बिचारी। भ्रमतजिभजहुभक्तहितकारी॥
जाके डर अति काल डेराई। जो सुर असुर चराचर खाई॥
तासों बैर कबहुँ नहिं कीजै। मोरे कहे जानकी दीजै॥

दोहा॥

प्रणतपाल रघुबंशमणि, करुणासिंधु खरारि।
गये शरण प्रभु राखिहैं, सब अपराध बिसारि॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

यदपिकहीकपि अतिहितबानी। बोलाबिहँसमहाअभिमानी॥
रावण–(हँसकर)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दोहा॥

अधम जाति कपि नीच तैं, ज्ञान सिखावत मोहिं।
सन्नपात जिमि बकतरे, निकट मृत्यु अब तोहिं॥

हनूमान्– चौपाई॥

उलटी होय तोर यह बानी। मति भ्रम भई प्रकट मैं जानी॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

सुनि कपि बचन बहुत खिसियाना। हृदयमाहिंलागेजनुबाना॥

रावण–(सभा ओर)

छन्द॥

काटि लेहु कीश शीश देरि ना करो अबै। हाड़ मांस पीस २ बाँटि खाहु रे सबै॥ है बड़ो लबार दुष्ट फारडारि देहु रे। काटि २ कौर कौर थोर थोर लेहु रे॥

(सब राक्षसों का मारने को तलवार निकालना बिभीषण का प्रबेश)

बिभीषण–(रावण के दण्डवत कर बैठि)

दोहा॥

राजन् दूत न मारिये, राजनीति में हानि।
आन दण्ड दीजै कछू, करि मन्त्रिन अनुमानि॥

मन्त्री–वाह २ बिभीषण जीने क्या अच्छी सलाह बताई.

रावण–(हँसकर)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौपाई॥

सुनहु मोर मति सब रजनीचर। अङ्ग भङ्ग करि पठवहु बन्दर॥

सवैया॥

पूँछ प है ममता कपिके पट तेलमें बोरिकै ताहि सँवारो। आनन कारिखलाय सबै चहुँ ओर घुमायके अग्नि प्रचारो॥ अङ्ग बिहीन ह्वै कीश तबै निज नाथको जाय के लावै हँकारो। देखौं महूँ उनकी प्रभुता जिनको यश गान कियो बहुबारो॥

सब राक्षस—वाह वाह बड़ा अच्छा बिचार है.

हनूमान्—(स्वतः) वाह वाह क्या अच्छा बिचार है, या मेरी शारदा इनकी खोपड़ी पर सवार है.

(राक्षसों का हनूमान्युत प्रस्थान)

प्रथमाङ्क * (दृश्यनगर)

चौपाई॥ (नैपथ्य)

यातुधान सुनि रावण बचना। लागे रचन मूढ़ सोइ रचना॥

(राक्षसों का हनूमान जी की पूँछ में कपड़ा लपेटना)

एक राक्षस—अबे कपड़ा लाता नहीं—

२—मैं तो कहीं पाता नहीं—मुझे धमकाता है तू क्यों जाता नहीं.

१—बक बक लगाता है—तेल कपड़ा नहीं लाता है. क्या जाकर कहि दूँ.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

२–साला बेकार चिल्लाता है–कहीं पता नहीं बतलाता है–मैं कहाँ से देदूँ.

१–तो क्या लङ्का भर का चुक गया.

२–कहिता तो हूँ.

१–तो फिर जाने दो.

२–ले भी चलो, चलो फूँक ताप छुट्टी करैं.

(राक्षसोंका हनूमान्‌जी को चारों ओर घुमाय ढोल बजाय पूँछ में आग लगाय देना हनूमान्‌जी का झम से एक भवन से कूदि दूसरे पर इसी प्रकार लङ्का दाह करना राक्षसों का रोना)

सब राक्षस–

ग़ज़ल धुन ठेठर॥

यहि काल हमारा बानर तनुधरि आयाहै यह काल॥

एक–हा जरा नगर यह सारा,

दूसरा–नहिं देखैं कहीं उबारा,

तीसरा–जलता है भवन हमारा,

सब–हा लड़के बच्चे सबके जलते मिलते नहिं कछु हाल॥ १॥ यहि काल॥

एक–करि करि सबपर जुर्माना,

दूसरा–जिसमें था भरा ख़ज़ाना,

तीसरा–वह जला बुर्ज शाहाना,

सब–हा एक त्रिया के कारण राजन कर दीन्ह्यो जंजाल॥ २॥ यहि काल॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

एक–हा दौड़ो पानी लावो,
दूसरा–यह पावक तुरत बुझावो,
तीसरा–अरे हम को कहीं बचावो,
सब–वह रथख़ाना गजशाला जलता जलगईं सब
घुड़शाल ॥ ३ ॥ यहि काल ॥
एक–है दुष्ट निशाचर पापी,
दूसरा–यह विपति बुलाया आपी,
तीसरा–लङ्का में आपद सौंपी,
सब–हैं रामचन्द्र औतार मूढ़ ने किया नहीं कछु
ख़्याल ॥ ४ ॥ यहि काल ॥

(सब राक्षसियों का रोना)

सब राक्षसी–

ग़ज़ल धुनि ठेठर ॥

करतार दिया क्या तूने इस दम हम पर बिपदा
डार ॥
एक–हा कहाँ गये पति मेरे,
दूसरी–जलते हैं लड़के तेरे,
तीसरी–पावक चहुँ दिश ते घेरे,
सब–नहिं सूझ पड़ै कहिं हमैं उबारा जरा जाय घर
बार ॥ १ ॥ करतार ॥
एक–जल गये पिटारे भारी,

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दूसरी—वह मैकेवाली सारी,
तीसरी—भारी थी लगी किनारी,
सब—अरे जाव जाव कोइ जाव पुकारो रावण के
दर्बार ॥ २ ॥ करतार ॥
एक—वह देखो जली अटारी,
दूसरी—अरे भागो गिरी पहारी,
तीसरी—हम नारी सबै उघारी,
सब—अब गई लाजरी आज सूझ कछु करी नहीं
दहिजार ॥ ३ ॥ करतार ॥
एक—यह कैसी नारी लाया।
दूसरी—सब लङ्का भस्म कराया ॥
तीसरी—कोइ भवन बचा नहिं छाया।
सब—हा दुष्ट मदोदरि तूने भी नहिं समझाया भ-
र्तार ॥ ४ ॥ करतार ॥

(सबका प्रस्थान)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

उलटि पलटि कपि लङ्का जारी। कूदि पर्‍यो तब सिंधु मँझारी॥

प्रथमाङ्क * (दृश्य अशोकबाटिका)

दोहा ॥ (नैपथ्य)

पूँछ बुझाय खोय श्रम, धरि लघुरूप बहोरि।
जनकसुता के आगे, ठाढ़िभयो कर जोरि ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(जानकी जी का राम के बिरह में शीश झुकाये दृश्य आना हनूमान् का प्रवेश)

हनूमान्–(हाथ जोरि)

चौपाई॥

मातु मोहिं दीजिय कछु चीन्हा। जैसे मोहिं रघुनायक दीन्हा॥

(जानकी जी का चूड़ामणि देना)

जानकी– चौपाई॥

कह्यो तात अस मोर प्रणामा। सब प्रकार प्रभु पूरण कामा॥
दीनदयाल बिरद सम्भारी। हरौ नाथ मम संकट भारी॥
तात शक्रसुत कथा सुनायहु। बाणप्रतापप्रभुहि समुझायहु॥
मास दिवसमें प्रभु नहिं आवैं। तौ पुनि मोहिं जियत नहिंपावैं॥
कहुकपि केहि बिधि राखौं प्राना। तुमहू तात कहत हौ जाना॥
तुमहि देखि शीतल भइ छाती। पुनिमोकहँसोइदिनसोइराती॥

हनूमान्– सोरठ॥

जननि धरहु मन धीर, कछुक दिवस प्रभु पद सुमिर।
कपिन सहित रघुबीर, खल बधि लै जैहैं तुम्हैं॥

(प्रणाम कर हनूमान् जी का प्रस्थान)

प्रथमाङ्क * (दृश्य समुद्रतट)

(अंगदादि बानर बिराजमान हैं हनूमान् का प्रवेश सब का उठि मिलना)

जाम्बवंत–पवनतनय कहिये क्या करिआये.

हनूमान्–ऋक्षिराज आप की कृपा और रघुनाथ जी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

के चरणों के प्रताप से सकुशल सब कार्य्य ठीक होगया.

जाम्बवन्त–तो फिर रघुनाथजी के पास चलिये.

(सब का प्रस्थान)

प्रथमाङ्क * (दृश्य मधुबन)

(सब बानरों का मधुबन में प्रवेश)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

तब मधुबन भीतर सब आये। अङ्गद सहित मधुर फल खाये॥
रखवारे जब बर्जन लागे। मुष्टि प्रहार करत सब भागे॥

अङ्गद–भाइयो आज तो मधुबन के फल भलीभांति भोजन करि मार्ग की थकावट दूरि करो.

(सब बानरों का प्रसन्न हो फलखाना)

रखवारे–युवराज क्या आज बाग़ का उजाड़ करदोगे.

अङ्गद–चुप रहो यह फल खाने के वास्ते तो बनायेही गये हैं.

रखवारे–तो ख़बरदार अब बिना राजा की आज्ञा हाथ न लगाना.

(अङ्गदकाबाटिकारक्षकोंकोमारना सबकाप्रस्थान)

प्रथमाङ्क * (दृश्य सभा)

(सुग्रीव एक सिंहासन पर बिराजमान हैं रखवारों का प्रबेश)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रखवारे-(हाथ जोरि)

दोहा ॥

खाये फल तोरे बिटप, बधुबन के युवराज।
हमैं मारि ब्याकुल कियो, जब बरज्यो कपिराज ॥

सुग्रीव-(स्वतः)

चौपाई ॥

जो न होत सीता सुधि पाई। मधुबन के फल को सक खाई ॥

(प्रकट) जाव फल खाने दो.

(रखवारोंका प्रस्थान अङ्गदादि बानरों का प्रवेश सब का प्रणाम करि बैठना)

सुग्रीव-युवराज! कुशल तो है.

अङ्गद-आपकी कृपा से सकुशल कार्य्य होगया.

जाम्बवन्त-हे नाथ! इस कार्य्य को हनूमान्‌जी ने किया और हमारे सबके प्राण बचाये.

(सुग्रीव का प्रसन्न हो सबको साथ लेकर रामचन्द्र के पास जाना)

द्वितीयाङ्क * (दृश्य प्रबर्षणगिरि)

(राम लक्ष्मण बिराजमान हैं सुग्रीव का बानरों युत प्रबेश)

राम-कहो कपिराज कुशल तो है.

सुग्रीव-आपके चरणों की कृपा से कुशल सदैव हाथ बाँधे खड़ी है.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जाम्बवन्त-(हाथ जोरि)

चौपाई॥

प्रभु की कृपा भयो सब काजू। जन्म हमार सुफल भा आजू॥
नाथ पवनसुत कीन्ह जो करणी। सो लाखहुमुख जाय न बरणी॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

सुनत कृपानिधि मन अति भाये। पुनि हनुमानहर्ष उर लाये॥

राम-(हनूमान् जी को समीप बैठाय)

चौपाई॥

कहहु तात केहि भाँति जानकी। रहत करत रक्षा सो प्राणकी॥

हनूमान्- दोहा॥

नाम पाहरू दिवस निशि, ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पदजंत्रिका, प्राण जायँ केहि बाट॥

छन्द॥

भरि कै चख बारी जनकदुलारी नाथ कह्यो कछु बैना।
मैं चरणन चेरी औगुण हेरी कौन तज्यो सुखऐना॥
दूषण यक मोरा सो नहिं थोरा बिछुरत प्राण न त्यागी।
नयनन अपराधा करहिं सो बाधा दर्शन के अनुरागी॥

दोहा॥

तन सुखाय लकड़ी भयो, बिरह अनल तेहि माँय।
जरन चहत जब नयन तब, तुरत देत जल नाय॥

चौपाई॥

सीता की अति बिपति बिशाला। बिनहिं कहे भल दीनदयाला॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दोहा॥

निमिखि निमिखि करुणायतन, जात कल्प सम बीति।
बेगि चलिय प्रभु आनिये, भुजबल खलदल जीति॥

(चूणामणि सामने रख) चौपाई॥

चलत मोहिं चूड़ामणि दीन्हीं। अति बिलखाय बिदा मोहिं कीन्हीं॥

(रामचन्द्र का चूड़ामणि लै हृदय से लगाय नेत्रोंमें जल भरना)

राम- चौपाई॥

बचन काय मन मम गति जाही। स्वप्नेहु बिपति कि चाहिय ताही॥

हनूमान्- चौपाई॥

है जग माहिं बिपति प्रभु सोई। जब तव सुमिरन भजन न होई॥
केतिक बात प्रभु जातुधानकी। रिपुहि जीति आनिये जानकी॥

राम- चौपाई॥

सुनु कपि तोहिं समान उपकारी। नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी॥
प्रति उपकार करौं का तोरा। सन्मुख है न सकत मुख मोरा॥
सुनु कपि तोहिं उरिन मैं नाहीं। देख्यों करि बिचार मनमाहीं॥

दोहा॥ (नैपथ्य)

सुनि प्रभुबचन बिलोकि मुख, हृदय हर्ष हनुमन्त।
प्रेमाकुल चरणन पर्यो, त्राहि त्राहि भगवन्त॥

(हनूमान्‌जी का चरणों पर गिरना राम का उठाय हृदय से लगाना)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

राम- दोहा॥

अति अगाध गढ़ लङ्क को, नित पालत दशमाथ।
हनि रक्षक बधि अक्षय सुत, दह्यो नगर केहि भाँत॥

हनूमान्- दोहा॥

साखामृग केहि लेख में, कौन बड़ाई मोर।
नांघि सिंधु पुरगढ़ दह्यों, बल प्रताप प्रभु तोर॥

चौपाई॥

नाथ भक्ति तव अति सुखदायनि। देहु कृपा करि शिवमन भायनि॥

राम- एवमस्तु (सुग्रीव से)

चौपाई॥

अबबिलम्ब केहिकारणकीजे। तुरतकपिनकहँ आयसुदीजै॥

सुग्रीव-जय हो राजा रामचन्द्र की.

दोहा॥ (नैपथ्य)

कपिपति बेगि बुलायऊ, आये यूथप यूथ।
नानाबरण अतुलबल, बानर भालु बरूथ॥

(सेनापतियोंकासामनेआनासुग्रीवकासबसेकहना)

सुग्रीव-भाइयो अपनी २ सैन साजि तय्यारी करो लङ्का पर चढ़ाई है.

(सब का जय बोलि प्रस्थान)

जाम्बवन्त-(रामसे) स्वामी सब फ़ौज तय्यार है.

(राम का ससैन पयान करना)

दोहा॥ (नैपथ्य)

यहि बिधि जाय कृपानिधि, उतरे सागर तीर।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जहँ तहँ लागे खान फल, भालु बिपुल कपिबीर॥

द्वितीयाङ्क * (दृश्य रावण शयनागार)

(मन्दोदरी सहित रावण बिराजमान है राक्षसों का कोलाहल करना)

१ राक्षस— पद॥

हम सुना आजु है सिन्धु पार। आये निश्चरकुलबधनहार॥

२—जेहि एक दूत गा नगर जार। आये पुर तिनके नहिं उबार॥

३—दशशीश करै नहिं कछु बिचार। अब करहिं जाय केहि ढिग पुकार॥

४—चलो भागि चलैं तजि घर औ द्वार। चहै लङ्कपुरी सब परै भार॥

मन्दोदरी—(कोलाहल सुनि रावण से)

सवैया॥

हैं बलवन्त अनन्त महाभगवन्त से बैरकिये दुख पैहौ।
देखि लई करणी हनुमन्तकी नाहक लङ्कदिगन्तनसैहौ॥
जानकि खैर न जान पिया जो सियाकोतुरन्तनफेरिपठैहौ।
त्यागिकुमन्त्रसुमन्त्र सुनोनहिं अन्तमेंकन्तमनैपछितैहौ॥

चौपाई॥

सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हे। हित न तुम्हार शंभु अज कीन्हे॥

दोहा॥

राम बाण अहिगन सरिस, निकर निशाचर भेक।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जबलगि ग्रसै न तबहिं लगि, जतन करौ तजि टेक॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

श्रवणसुनतशठताकरबानी। बिहँसाजक्तबिदितिअभिमानी॥

रावण- चौपाई॥

सबहि सुभाव नारि कर साँचा। मंगल माहि अमंगल रांचा॥
कम्पहिं लोकपाल जेहि त्रासा। तासुनारिसभीतबड़िहाँसा॥

(रावण का मन्दोदरी को समझाकर प्रस्थान)

द्वितीयाङ्क * (दृश्य सभा)

(रावण मन्त्रियोंयुत बिराजमान है)

चौपाई॥ (नैपथ्य)

बैठेव सभा खबर अस पाई। सिन्धु पार सेना सब आई॥

(एक राक्षस का प्रबेश)

राक्षस- छन्द॥

महाराज मैं आज एक अचरज लखि आयों।
सिन्धु पार बहु सेन देखि अतिही घबरायों॥
द्वै नर तपसीरूप संग भल्लुक कपि सेना।
जो कपि लङ्का दह्यो छोट तासों कोइ है ना॥

दोहा॥

अचरज लखि आयों तुरत, खबर देन महराज।
जो भावै सो कीजिये, यतनशोधि सिरताज॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(दूत का प्रस्थान)

रावण–(मन्त्रियों से)

दोहा॥

मम भुज बल बिख्यात जग, जित्यों चराचर झारि।
कहहुसचिव सबउचित मति, निज २ हृदय बिचारि॥

प्रहस्त मंत्री– कवित्त॥

देश में बखान तेज जानि कै जड़ानु भानु आये बानरान हानि कौन धौं मनै लई। बिन्दु के समान शंभु शैल जो भुजानु सोह शक्रहू सकान औ जहान बीच जयठई॥ बिक्रमी महानु बीरता निधान बन्धु पुत्र हारि मानि जासु देवतान शस्त्र धै दई॥ बैर खान हार बैरठान आये प्राण देन खान को ठेकान ईश राक्षसानकै दई॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

औसर जानि बिभीषण आवा। भ्राता चरण शीश तेहिनावा॥

रावण–बिभीषण! रामदल समुद्रकिनारे आगया है तुम्हारी इस में क्या सम्मति है.

बिभीषण– ग़ज़ल॥

हमारी मति जो पूछो हो तजो सीता को ऐ भाई।
समर्पो राम को जाकर गिरो चरणों में शिर नाई॥

दोहा॥

क्षमयँ तात अपराध तव, राम दया की खान।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शरण गये नहिं मारिहैं, ऐसे कृपानिधान ॥
काम क्रोध मद लोभ सब, नाथ नरक कर पंथ।
सब परिहरि रघुबीर पद, भजहु भजहिं जेहि संत ॥
टूट—नहीं तो राज लङ्का की रसातल को चली जाई ॥ १ ॥ हमारी मति ॥

दोहा ॥

मन्त्रीगण जेते कहैं, ठकुरसोहाती बात।
धिकधिक ऐसी बुद्धि को, तनिक न मोहिं सोहात ॥
बार बार पद लागहूँ, बिनय करौं दशशीश।
परिहरि मान औ मोह मद, भजहुकोशलाधीश ॥
टूट—करो नहिं रारि रघुबर सों जो चाहो अपनी कुशलाई ॥ २ ॥ हमारी मति ॥

दोहा ॥

बेद धर्म रक्षक धरणि, जनरञ्जन रघुनाथ।
तासु नारि तजि नाइये, नाथ चरण में माथ ॥
तात चरण गहि माँगहूँ, राखहु मोर दुलार।
सीता देहु राम कहँ, अतिहितहोयतुम्हार ॥
टूट—न त्यागो नीति को राजन् कहैं यह बेद गोहराई ॥ ३ ॥ हमारी मति जो पूछोहो तजो सीताको ऐ भाई ॥

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

बुध पुराण श्रुति सम्मति बानी। कही बिभीषण नीति बखानी ॥
सुनत दशानन उठा रिसाई। कटुक बचन बहु कह्यो सुनाई ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रावण-(क्रोध करि) चौपाई॥

जियसि सदा शठ मोर जियावा। रिपुकरपक्ष सदा तोहिंभावा॥
ममपुर बसि तपासिनसोंप्रीती। शठ मिलिजाइताहिकहुनीती॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

असकहि कीन्हेसि चरण प्रहारा। अनुजगहे पद बारहिं बारा॥

(रावण का बिभीषण के लात मारना बिभीषण का पैर पकरि कहना)

बिभीषण- चौपाई॥

तुम पितु सरिस भले मोहिं मारा। राम भजे हित होय तुम्हारा॥

(आकाशमार्ग जाकर)

दोहा॥

राम सत्य संकल्प प्रभु, सभा काल बश तोरि।
मैं रघुनायक शरण अब, जाउँ देव जनि खोरि॥

(बिभीषण का प्रस्थान)

द्वितीयाङ्क * (दृश्यमार्ग)

चौपाई॥ (नैपथ्य)

चले हर्षि रघुनायक पाहीं। करत मनोरथ बहु मन माहीं॥

बिभीषण- पद॥

धनि धनि मैं धन्य भाग्य धन्य भाग्य मेरी।
अ०-देखिहौं जलजात चरण, जैसे प्रात भानु अरुण,
करुणा करिहैं कृपालु, मेरी ओर हेरी॥१॥ धनि॥
जो पद शिव उर अधार, ऋषीनारि तारहार,

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कपट मृगन जौन पदन, रहे नाथ घेरी ॥२॥ धनि ॥
जौन चरण पादुकान, भरतहि दिय दीन जान,
जलजा महिजा सदैव, जौन चरण चेरी॥३॥धनि॥
सोई पद कमल पाय, लखिहौं नैनन अघाय,
सन्त बेद श्रुतन मुखन, जौन हौं सुनेरी॥४॥धनि॥

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

यहि बिधि करत सप्रेम बिचारा। आये सपद सिंधु के पारा॥

द्वितीयाङ्क- * (दृश्य सिंधुतट)

(राम लक्ष्मण बानरोंयुत बिराजमान हैं एक बानर का प्रवेश)

बानर-(सुग्रीव से) कीशपति! बिभीषण रावण का भ्राता रघुनाथ जी से मिलने आता है परन्तु आने नहीं पाता है, क्या आज्ञा है.

सुग्रीव-(राम से) स्वामी! रावण का भाई बिभीषण आपसे मिलने आता है क्या आज्ञा होती है.

राम-सखा! इसमें तुम्हारा क्या बिचार है.

सुग्रीव- चौपाई ॥

जानि न जाय निशाचर माया। कामरूप केहि कारण आया॥
भेद हमार लेन शठ आवा। राखिय बाँधि मोहिं अस भावा॥

राम- चौपाई ॥

सखा नीति तुम नीक बिचारी। मम प्रण शरणागत हितकारी॥
भेद लेन पठवा दशशीशा। तदपि न कछु भय हानि कपीशा॥
जग महँ सखा निशाचर जेते। लक्ष्मण हनहिं निमिष महँ तेते॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जो सभीत आवा शरणाई। रखिहौं ताहि प्राण की नाई॥

दोहा॥

भय न करहु कछु मन सखा, उभय भाँति लै आव।
शरणागत बत्सल सदा, जानहु मोर सुभाव॥

सुग्रीव–बहुत अच्छा स्वामी.

(सुग्रीव का सहित बिभीषण रामसमीप प्रवेश)

बिभीषण–(हाथ जोरि)

दोहा॥

नाथ दशानन भ्रात मैं, निशिचर बंश कुजात।
सहज तामसी अधम तनु, नित प्रति पाप सुहात॥
सुयश श्रवणसुनिआयऊं, प्रभु भंजन भवभीर।
त्राहि त्राहि आरत हरण, शरण सुखद रघुबीर॥

(बिभीषण का प्रणाम करना राम का उठाय हृदय में लगाय अपने पास बैठाय कहना.)

राम– सवैया॥

लङ्कपती युवती परिवार कुठाहर बास में कौन गतीहै।
धर्मक्रियानिबहैकेहिभाँतिसुहातजहांनितहीं कुमतीहै॥
जानौंस्वभावतुम्हारसखानहिंभावैअनीतितोएकरतीहै।
नर्कको बास अहै भल तातपै दुष्टके साथनहीं निभतीहै॥

बिभीषण– चौपाई॥

तुम कृपालु जापर अनुकूला।ताहिनब्यापत्रिबिधिभवशूला॥
अब भइ कुशल मिटेभयभारे। देखि नाथ पदकमल तुम्हारे॥
मैं निशिचरअतिअधमसुभाऊ। शुभ आचरणकीन्ह नहिंकाऊ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दोहा ॥

अहो भाग्य मम अमितअति, रामकृपा सुख पुंज ।
देखेहुँ नैन बिरंचि शिव, सेब्य युगुल पदकंज ॥

राम— चौपाई ॥

सुनु लङ्केश भक्ति दृढ़ तोरे । ताते तुम अतिशय प्रिय मोरे ॥

बिभीषण—हे नाथ ! अब तक तो मुझे कुछ बिषय की इच्छारही परन्तु अब आप के दर्शन से वह कुमति जाती रही.

चौपाई ॥

अब कृपालु निजभक्ति पावनी । देहुकृपाकरि शिवलुभावनी ॥

राम—एवमस्तु.

चौपाई ॥

यदपि सखा तव इच्छा नाहीं । मम दर्शन अमोघ जग माहीं ॥

(हनूमान् से) हनूमान् जी समुद्रजल लावो.

(हनूमान् जी का जल लाना रामचन्द्र का बिभीषणके तिलक करना आकाश से पुष्पबृष्टि का होना.)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

बोले बचन नीति प्रतिपालक । कारणमनुज दनुजकुलघालक ॥

राम— चौपाई ॥

सुनु कपीश लङ्कापतिबीरा । केहिबिधिउतरियजलधिगँभीरा ॥

बिभीषण— दोहा ॥

कोटि सिन्धु शोषक यदपि, प्रभु तव बाण प्रताप ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पन्थ हेतु बिनती करिय, प्रथम सिन्धु सों आप॥
है तुम्हार कुलगुरु जलधि, कहिहि उपाय बिचारि।
बिनु प्रयास सागर तरहिं, सकल भालु कपि धारि॥

राम- चौपाई॥

सखा कह्यो तुम नीक उपाई। करब दैव जो होय सहाई॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

मन्त्र न यह लक्ष्मण मन भावा। रामबचनसुनिअतिदुखपावा॥

लक्ष्मण-(क्रोध से)

चौपाई॥

नाथ दैव कर कौन भरोसा। सोखिय सिंधु करिय मन रोसा॥
कादर मन कर एक अधारा। दैव दैव आलसी पुकारा॥

राम-(हँस कर) तात ऐसाही करेंगे.

चौपाई॥ (नैपथ्य)

अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई। सिन्धु समीप गये रघुराई॥

(रामका सिंधुतट कुशासनपर प्रणामकरि बैठना)

चौपाई॥

जबहिं बिभीषण प्रभु पहँ आये। पाछे रावण दूत पठाये॥

दोहा॥

सकल चरित तिन देखेऊ, धरे कपट कपि बेष।
प्रभु गुण हृदय सराहियत, शरणागत पर नेह॥

(रामदल में शुकसारण का बानररूप से प्रबेश)

चौपाई॥

रिपु के दूत कपिन जब जाने। सकल बाँधि कपीश पहँ आने॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नील–अरे! येतो दुष्टराक्षस हमारे दल में घूमते हैं (पकड़ कर सुग्रीव के पास ला) कपीश! ये दुष्ट राक्षस कपटरूप से हमारी सेना में भेद लेते फिरते हैं कहिये क्या किया जाय.

सुग्रीव–इनको बाँधि सैन देखावो और फिर नाक कान काट खेददो.

(बानर चारों ओर घुमाय नाक कान काटने लगे)

शुक–(चिल्लाकर) चौपाई॥

जो हमारि हर नासा काना। तेहि कौशलाधीश कर आना॥

लक्ष्मण–बानरो! अब इनकी नाक कान न काटो यहाँ लावो.

(बानरों का शुकसारण को लक्ष्मण जी के पास लाना)

लक्ष्मण–तुम कौन हो और यहाँ क्यों आये.

शुक–महाराज! हम रावण के भेजनेसे आप की फ़ौज देखने आये हैं.

लक्ष्मण–देख चुके.

शुक–जी हाँ.

लक्ष्मण–(एक चिठ्ठी देकर) अच्छा अब जाव और यह चिट्ठी उस कालबश रावण को देना और यह कहि देना.

दोहा॥

कह्यो मुखागर मूढ़ सों, प्रभु संदेश उदार।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सीता देहु मिलहु नतु, आवा काल तुम्हार॥

(शुकसारण का प्रस्थान)

द्वितीयाङ्क * (दृश्य सभा)

(रावण मंत्रियों सहित बिराजमान है शुक-सारण का प्रवेश)

रावण— दोहा॥

कस काँपत भाखत न कछु, कीशकटक कर हाल।
दुष्ट बिभीषण बन्धु दोउ, जिनके उर मम शाल॥
भई भेंट की फिरि गये, श्रवण सुनत यश मोर।
कहसि न रिपुदल तेजबल, कस चकृत चित तोर॥

शुक—महाराज मैं कहते डरताहूँ यदि अपराध क्षमा हो तो कहूं.

रावण—कहो.

शुक—सुनिये. पद॥

सरकार बताऊँ क्या मैं तुम सों, उन गति अपरम्पार॥ जब मिल्यो बिभीषण जाई, कहि लङ्कपती गोहराई, दियो तुरतहि तिलक चढ़ाई, हैं रूप उजागर नागर दोऊ पारब्रह्म औतार॥ १॥ सरकार॥ अब सुनो कटक बिस्तारा, हैं यूथप पद्म अठारा, बल बिक्रम को नहिं पारा, पुर दह्यो जौन सो कीश प्रथम वह सब में अहै उतार॥ २॥ सरकार॥ सब चहत लङ्कगढ़ ढावें, पै हुकुम न प्रभुको पावें, कर मल मलके पछितावें, वै

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कोटिन रावण जीतसकैं हैं बड़े शूर सरदार ॥ ३ ॥ सरकार ॥ सक शोष राम शत सागर, हैं बाण तेज अति आगर, पै नीतिमान नयनागर, माँगत सागर सों पन्थ कृपानिधि होन चहत हैं पार ॥ ४ ॥ सरकार॥

रावण-(हँसकर) बस मैंने उन के बल को जान लिया जब बिभीषण उन के मन्त्री हैं तो फिर और सेना का कामही क्या है.

शुक-(पत्री दे)लीजिये यह लक्ष्मण जीकी चिट्ठी है इसको बाँचिये.

रावण-(बायें हाथ में लेकर एक मन्त्री को दे) लो जी इसे पढ़ो तो.

मन्त्री-(चिट्ठी खोल) दोहा ॥

बातन मनहि रिझाव शठ, जनि घालसि कुलखीश।
रामबिरोध न उबरिहै, शरण बिष्णु अज ईश॥
होहु मान तजि अनुज इव, प्रभुपद पङ्कज भृंग।
होहि राम शर अनलखल, जनि कुलसहित पतंग॥

रावण-(सभा ओर देखि) जिस की मृत्यु आती है उसको ऐसाही सूझताहै.

मन्त्री-आप का कहना भी सत्य है.

(सब का प्रस्थान)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

द्वितीयाङ्क * (दृश्य सिन्धुतट)

(समुद्र किनारे कुशासन पर राम का बिराजमान होना)

राम- दोहा॥

विनय न मानत जलधि जड़, गये तीन दिन बीति।
मन्द जनन की रीति यह, बिन भय होत न प्रीति॥

सवैया॥

सत्य कही खल सों बिनती न दरिद्रन सों कहि नीति बखानै। ज्ञान कथा ममतारत सों जस कामी हृदय हरिभक्ति न आनै॥ जानि परै जबलौं खल को नहिं शोषहुँ बारिधि बाण कृशानै। मेरो शरासन आनिय तात ये लात को जीव है बात न मानै॥

चौपाई॥

लक्ष्मण बाण शरासन आनू। शोषौं बारिधि बिशिष कृशानू॥

(लक्ष्मणजीका धनुष बाण देना रामचन्द्र का बाण सन्धान करना समुद्र का बिप्ररूप से सुवर्णथार में मणियों की भेंट लिये प्रवेश)

समुद्र-स्वामी मेरा अपराध क्षमा कीजिये.

सवैया॥

आदिहि से मोहिं श्रेष्ठ कियो जड़ चैतनता तब कैसे को आवै। चूक परी है सही मोहिं से पर नाथ बिना कहो कौन क्षमावै॥ दण्ड दियो प्रभु नीकी करी पशु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ढोल गवाँरहि ताड़न भावै। जावँ सुखाय जो आयसु होय बिना श्रम पार चमू सब जावै॥

चौपाई॥

प्रभु भल कीन्ह मोहिंसिखदीन्ही। मर्यादासब तुम्हरीकीन्ही॥

राम—अच्छा फिर कोई उपाय आपही बतलावो जिस से कटक पार हो.

समुद्र— चौपाई॥

नाथ नील नल कपि दोउ भाई। लरिकाईं ऋषि आशिषपाई॥
तिनके परस किये गिरि भारे। तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे॥
मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई। करिहौं बल अनुमानसहाई॥

राम—और मैं इस बाण को सन्धान चुका हूँ क्या करूँ.

समुद्र— चौपाई॥

यहि शर मम उत्तरतटबासी। हतौ नाथ खल नर अघरासी॥

(राम का उत्तर ओर बाण छोड़ना देवतों का जय शब्द करना समुद्र का प्रस्थान)

द्वितीयाङ्क * (दृश्य समुद्रतट)

(रामचन्द्र ससैन्य बिराजमान हैं)

राम— चौपाई॥

हे कपीश अब बिलँब न कीजै। सेतु बँधन कहँ आयसु दीजै॥

जाम्बवन्त— सोरठ॥

सुनहु भानुकुलकेतु, कौन काज है सेतु कर।
नाथ नाम तव सेतु, नरचढ़ि भवसागरतरहिं॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(नल नील से) चौपाई ॥

रामप्रताप सुमिरि मनमाहीं। करौ सेतु प्रयास कछु नाहीं॥

(बानरों से)

रामचरण पंकज उर धरहू। कौतुक एक भालु कपि करहू॥
धावहु मर्कट बिकट बरूथा। आनहु बिटप गिरिनकेयूथा॥

(बानरों का चारों ओर जाना और पर्वत वृक्षादिलाना नल नील का सेतुबाँधना)

द्वितीयाङ्क * (दृश्य सेतु)

(राम का सेतु देखि प्रसन्न होना)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

देखिसेतु अतिसुन्दर रचना। बिहँसि कृपानिधि बोले बचना॥

राम– चौपाई ॥

करिहौं यहाँ शंभु थापना। मोरे हृदय परम कल्पना॥

(सब बानरों का पूजन सामग्री एकत्र करना रामचन्द्रका शिवलिङ्ग स्थापन करि पूजन करना)

राम–कपिराज! इन का नाम रामेश्वर है.

चौपाई ॥

जो रामेश्वर दरशन करिहैं। ते तनु तजि ममधाम सिधरिहैं॥
जो गङ्गाजल आनि चढ़ैहैं। सो सायुज्य मुक्ति फल पैहैं॥

दोहा ॥

शंकर प्रिय मम द्रोही, शिव द्रोही मम दास।
ते नर पावैं कल्प शत, घोर नरक में बास॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(ससैन्य रामचन्द्र का पार उतरना)

द्वितीयाङ्क * (दृश्य सुबेलपर्बत)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

सैन सहित उतरे रघुबीरा। कहि न जात कछु यूथ गँभीरा ॥
सिंधु पार प्रभु डेरा कीन्हा। सकलकपिनकहँआयसु दीन्हा ॥

राम- दोहा ॥

अति श्रम कीन्ह्यो भालु कपि, सतु बाँधि सब कोय।
खाहु जाय फल फूल अब, जो जाकी रुचि होय ॥

(सब का प्रस्थान)

इति श्रीरामरसामृतसागरनाटकेसकलकलिकलुषबिध्वंसने
श्रीरामवर्षावर्णनादौसेतुबन्धपर्यन्तअष्टमोभागः समाप्तः ॥
शुभम् ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

श्रीगणेशाय नमः ॥

रामरसामृतसागर नाटक ॥

नवाँ भाग ॥

प्रथमाङ्क * (दृश्य सुबेल)

दोहा ॥ (नैपथ्य)

श्रीरामेश्वर ईश जग, प्रथमहिं बन्दौं तोहिं ।
युद्धकाण्ड अति अगम है, कछु बुधि दीजै मोहिं ॥
कटक सहित सुग्रीव पद, बन्दौं बारम्बार ।
जाम्बवन्त अङ्गद हनू, कीजै कछु उपकार ॥
बन्दौं रघुपति पद पदुम, नील जलज तनु श्याम ।
बय किशोर सुन्दर सुखद, रामानुज बलधाम ॥
चरण शरण हौं नाथ मैं, कीन्ह चहौं गुण गाथ ।
धनुष बाण कर धारिये, बधन हेतु दशमाथ ॥
श्रीरघुबीर प्रताप ते, सिन्धु तरे पाषान ।
ते मतिमन्द जे राम तजि, भजैं जाय प्रभु आन ॥

(सब वानरों का चारौं ओर बनफल खाना एक राक्षस का प्रवेश)

गवाक्ष–(राक्षस को पकड़कर) युवराज इसफल को देखिये कैसा बना है भला इसे छीलकर खावैं या योंही.

गय–अरे यह तो राक्षस है.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अङ्गद–तो फिर इसकी नाक कान काटकर सीधे लङ्का भेजो.

(गवाक्ष का दांत से उसकी नाक कान काट रामकी जय कहलाय खेद देना)

प्रथमाङ्क * (दृश्य राजभवन)

(रावण मन्दोदरीयुत बिराजमान है एक राक्षस का रोतेहुये प्रवेश)

राक्षस– पद ॥

हरी श्रुति नासिका मेरी दुहाई है दुहाई है ॥ चमू कपि सिन्धु के तटपर उतर इस पार आई है ॥ १ ॥ बँधाया सेतु सागर में पषानों का मेरे राजन् । पराक्रम देख यह अद्भुत सहेम सबको समाई है ॥ २ ॥ हरी० ॥ प्रजा है आप की व्याकुल निकलकर उसकी सुधि लीजै । चतुर्दिशि घेर कर लङ्का उधम बहुतक मचाई है ॥ गया मैं देखने रिपुदल कि जाकर खोज लेआऊं। न पाया भेद कुछ उनका पै नाक अपनी कटाई है ॥२॥ हरी श्रुति नासिका मेरी दुहाई है दुहाई है ॥

रावण–अरे क्या है जो दोहाई तिहाई मचाई है.

राक्षस–महाराज रामकी फ़ौज सागर इस पार आई है जिसने मेरी यह दशा बनाई है, दोहाई है, दोहाई है.

रावण–अच्छा जा देखा जायगा.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(राक्षस का प्रस्थान)

मन्दोदरी-(हाथ जोरि) प्राणनाथ मैं कुछ बिनय करना चाहती हूँ.

रावण-प्यारी कहो.

मन्दोदरी- कबित्त ॥

जाको एक दूत आय लङ्क जारि छार कीन सोई राम आये टेक छोड़ो अभिमानकी । मान की न बान लेहु मानिजाहु शीख मोर बैर रार प्रीति कन्थ सोहती समान की ॥ जानकी को जानदेहु जाय रामशरण लेहु चूक को छमाव जौन आप अनजानकी । जानकी के रहे खैर जान की न जान पीय जानकी को लाय बात कीन्ह नाहिं जान की ॥

चौपाई ॥

तुमहिं रघुपतिहिं अन्तर कैसा। खल खद्योत दिवाकर जैसा॥
जेहि बलि बाँधि सहस भुज मारा। सोइऔतरेवहरणमहिभारा॥
तासु बिरोध न कीजिय नाथा। काल कर्म गुण जाके हाथा॥

दोहा ॥

रामहिं सौंपौ जानकी, नाय चरण निज माथ।
सुतै राजदे चल बिपिन, भजहु नाथ रघुनाथ॥

चौपाई ॥

मानहु कन्थ कही यह बाता। तौ रहिजात मोर अहिवाता॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(मन्दोदरी का चरणों पर गिर पड़ना रावण का उठाय हृदय से लगाना)

रावण- कवित्त ॥

कौन हेत होत भीरु मो समान कौन बीर लोक में बखान प्रिया बीरता भुजान की। जीत्यों इन्द्रलोक-पाल पवन भानु जम औ काल तोरेउँ क्षण माहिं बान बंधु अभिमान की॥ शम्भु सह अनेक बार रुद्र शैल लीन्ह धार ताकि नारि ह्वै सकात बात है लजान की। जानकी को लङ्क आनि जानि कै है रारि ठानि प्यारी यह निशानि जान मेरे तरजान की॥

प्यारी आप निःसंदेह रहैं कोई चिन्ता की बात नहीं है. चलो अखाड़े में चलैं आज हृदय नृत्य देखने को चाहता है.

(सबका प्रस्थान)

प्रथमाङ्क * (दृश्य सुबेल)

(राम लक्ष्मण सुग्रीव बिभीषणादि एक शिला पर बिराजमान हैं)

राम-(दक्षिण ओर देखि)

चौपाई ॥

देखु बिभीषण दक्षिण आसा। घन घमंड दामिनी बिलासा॥
मधुर मधुर गर्जत नभ घोरा। होहि बृष्टि जनु उपल कठोरा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बिभीषण- पद थेटर ॥

सुनिये सरकार यह तो बात है बतलाने वाली। बिजली ना कड़कानेवाली, मयतनया की चमकैं वाली, बदली ना बरसानेवाली, रावण का छत्र सोई दीसै घटा काली काली ॥ १ ॥ सुनिये० ॥ आई हैं सब गाने वाली, महिफिल को रीझानेवाली, पीटैं हैं वै झम झम ताली, सोई है शब्द स्वामी मेघ के झड़ लानेवाली॥२॥ सुनिये सरकार यह तो बात है बतलानेवाली ॥

(रामचन्द्र का हँसकर एक बाण छोड़ना)

प्रथमाङ्क * (दृश्य अखाड़ा)

(रावण सहित मन्दोदरी और मन्त्रियों के बिराजमान है नृत्य होरहा है राम के बाण का आकर रावण के मुकुट और छत्र गिराकर लौट जाना सभा का चकृत होना)

मन्त्री-(आपुस में) क्यों जी न तो भूकम्प हुआ न बायुबेग बड़े आश्चर्य की बात है कि महाराज के मुकुट और रानी साहेब के कर्णफूल आपही आप गिर पड़े. यह तो बड़ा असगुन हुआ.

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

दशमुख दीख सभा भय पाई। बिहँसि बचन कह युक्ति बनाई॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रावण— दोहा ॥

शिरहु गिरे शुभ होत जेहि, मुकुट गिरे कस हानि।
शैन करहु सब जाय अब, मन जनि करहु गलानि॥

(मन्त्रियों का प्रस्थान)

मन्दोदरी— चौपाई ॥

राम बिरोध कंत परिहरहू। जानि मनुज मन हठ जनि धरहू॥

दोहा ॥

बिश्व रूप रघुबंश मणि, करहु बचन बिश्वासु।
लोक कल्पना वेद कह, अङ्ग अङ्ग प्रति जासु॥
अस बिचारि सुनु प्राणपति, प्रभु सन बैर बिहाय।
प्रीति करहु रघुबीर पद, मम अहिवात न जाय॥

रावण—(हँसकर) चौपाई ॥

रिपु कर रूप सकल तैं गावा। अतिबिशालभयमोहिंसुनावा॥
सो सब प्रिया सहज बश मोरे। समुझि परा प्रभाव अब तोरे॥
जानेउँ प्रिया तोरि चतुराई। यहि मिसि कह्यो मोरि प्रभुताई॥

मन्दोदरी—कालबश आपकी मति भ्रष्ट होगई है.

द्वितीयाङ्क * (दृश्य सुबेल)

(मन्त्रियों युत राम लक्ष्मण बिराजमान हैं)

राम—(मन्त्रियों से) चौपाई ॥

कहहु बेगि का करिय उपाई। रिपु सन केहि बिधि होय लड़ाई॥

जाम्बवन्त—स्वामी मेरे बिचार से तो पहिले अङ्गद को भेजना चाहिये देखें उसका क्या बिचार है.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुग्रीव—बहुत ठीक है उसका भेद तो जान लेना अवश्य है.

राम—(अङ्गद से) चौपाई ॥

बालितनय बलबुधि गुणधामा। लङ्का जाहु तात मम कामा ॥
बहुत बुझाय तुमहिं का कहऊँ। परम चतुर मैं जानत अहऊँ ॥
काज हमार तासु हित होई। रिपुसन करेव बतकही सोई ॥

अङ्गद—नाथ मैं बानर की जात कौन भाँति चतुर हूँ हाँ एक आपकी कृपा चतुर है मैं स्वामी की आज्ञा के साथ उस दुष्ट के पास जाकर भली भाँति बार्तालाप करूँगा.

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

बन्दि चरण उर धरि प्रभुताई। अङ्गद चले सबहि शिर नाई ॥
पुर पैठत रावण कर बेटा। खेलत रहा सो होइ गइ भेंटा ॥

(अङ्गद का प्रणाम कर जाना और रावण के एक पुत्र से मार्ग में भेंट होना अङ्गद का उसको पृथ्वी पर पटक देना)

द्वितीयाङ्क * (दृश्य सभा)

(रावण मन्त्रियों युत बिराजमान है अङ्गद का द्वारपर प्रवेश)

अङ्गद—(द्वारपाल से) जा बे उस कालबश रावण से कहदे कि कौशलेन्द्र श्रीरामचन्द्र का एक दूत आया है.

द्वारपाल—(रावण से हाथ जोरि)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दोहा ॥

महाराज रिपुदूत यक, कीश महाभयकार।
सभा माँझ आवन चहत, क्या आज्ञा सरकार ॥

रावण–आने दो. (द्वारपाल का जाना अङ्गद का प्रवेश.)

(अङ्गद के आने से सभा का खड़े हो जाना रावण का सब को बैठाना)

रावण–(अङ्गद से) छन्द ॥

कौन है नाम औ धाम तव कौन है काम
कहु कौन याँ कीश तेरा।

अङ्गद–दूत हूँ राम को मोहिं अङ्गद कहैं काम हित
तोर मैं कीन्ह फेरा ॥ पाय बर कीन्ह आराम
तुम जीत जग बामको चोर अब नाम हेरा।
मूढ़ जो कीन्ह सो कीन्ह अबहूँ समुझि शरण
चल राम सिख मान मेरा ॥

चौपाई ॥

मम जनकहि तोहिं रही मिताई। तवहित कारण आयौं भाई ॥
दशन गहहु तृण कंठ कुठारी। पुरजनसंग सहित निजनारी ॥
सादर जनकसुता करि आगे। यहिबिधिचलहुसकलभयत्यागे ॥

दोहा ॥

प्रणतपाल रघुबंश मणि, त्राहि त्राहि अब मोहिं।
सुनतहिआरतबचनप्रभु, अभय करहिंगे तोहिं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रावण— दोहा॥

नहिं जानत मोहिं पोच कपि, जीति लिहौं सुरधाम।
केहि नाते मम हित करसि, कहुनिजपितुकरनाम॥

अङ्गद— दोहा॥

किष्किन्धा यक ईश कपि, रह्यो बालि बलधाम।
जो तुम कहँ षट मास लौं, दीन्ह्यो काँख अराम॥

रावण— सवैया॥

बालि को पूत ह्वै धूत बन्यो धिक जीवन तव खिसियात नहीं। अवधूत को दूत कहै मुखसों बल भाषत में शरमात नहीं॥ बोरि कुलै पितु मातु को नाम उचारत झूठ सकात नहीं। जनमी जननी जग नाहकही जल डूब के क्यों मरिजात नहीं॥

दोहा॥

मो कहँ हाल बताव अब, है बाली कुशलात।
जेहि सुत ह्वै तैं कुल दहे, नाम बोरि पितु मात॥

अङ्गद— सवैया॥

आवनदे रघुनंदन को मिलिबो कछु बालि सों बात नहीं। उर लाय तबै सब पूँछेउ सखै मुख और बनै बतरात नहीं॥ कुलपालक ह्वै तियचोर बन्यो सुत को बधवाय सकात नहीं। श्रीराम को दूत कपूत कहै मतिहीन हियो फटिजात नहीं॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दोहा ॥

हम कुलघालक सत्य तुम, कुलपालक दशशीश।
अंधौ बधिर न कहैं अस, श्रवण नयन तौ बीश ॥

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

सुनि कठोर बाणी कपि केरी। कहत दशानन नयन तरेरी॥

रावण— कबित्त ॥

बोलत सँभारि नाहिं ठानत शठ रारि कहा दूत मैं बिचारि तोहिं छांड़त न मारहूँ। वेदरीति जानत नित मानत हौं राजनीति तासे उर सहौं तोर धर्म को बिचारहूँ ॥ जानि कै गँवार कीश बालि को बिचारि पूत तेरी जड़ताई नेक उर में न धारहूँ। नाहिं तोर जीह तोरि पोर पोर अङ्ग फोरि कारिख मुहँ लाय तोहिं लङ्क से निकारहूँ ॥

अङ्गद—वाह आपतो धर्मधुरी हईहैं और जब से चोरी करना सीखा तबसे तो धर्मका पुल बाँधिदिया.

कबित्त ॥

काहतू बखानत है मोहू तो जानतहूँ धर्म शील तोर मैं सुन्यों अनेक बारहूँ। धर्म के बिचार में कराय दीन लङ्क छार धर्म की पहार तोर भगिनिहू निहारहूँ ॥ धर्महीके हेतु नारिचोर कर्म नीक लाग धर्म के धुरन्धर तुम कीश मैं लबारहूँ। धर्म को निशान फहरान फिरै जक्क बीच धन्य भाग्य मोर पाये दर्शन तुम्हारहूँ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रावण- दोहा ॥

जानि जल्पसि जड़ जन्तु कपि, शठ बिलोकु ममबाहु।
लोकपाल बल बिपुल शशि, ग्रसन हेतु जिमि राहु ॥

और यह तो बतला कि तेरे कटक में ऐसा कौन है जो मुझसे लड़ि सके क्योंकि

सवैया ॥

नारिबिहीन मलीन रहैं बलहीन हैं राम सबन्धु दुखारे। हौ तुम दीन सुकण्ठ अधीन अहैं अतिक्षीन तो बन्धु हमारे॥ आयु से खीन बिना जल मीन ज्यों कौन प्रबीन हैं ऋक्ष बिचारे। शिल्प को काम सदा नल कीन पै है कपि एक बड़ो बल धारे॥

चौपाई ॥

आवा प्रथम नगर जेहि जारा। बन उजारि रक्षक बहु मारा॥

अङ्गद- सवैया ॥

सत्य कहो पुर साँचो दह्यो कपि होत प्रतीति सुने न हमारे। धावन मोर नहीं कछु जोर सो घोर निशाचर कैसे सँहारे॥ जो अति भीरु बखानत बीर तो लाज नहीं दशकंध तुम्हारे। ऐसे तो कीश कपीश के कोटिन दौरनहार रहैं नित द्वारे॥

दोहा ॥

अब जाना पुर दह्यो कपि, बिन प्रभु आयसु पाय।
फिरि न गयो निजनाथपहँ, तेहि भय रह्यो लुकाय॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

और जो तुमने ये कहा कि तुम्हारे कटक में हमसे लड़ने वाला कोई नहीं है सो तो सत्यही प्रत्यक्ष है कि तुझसे लड़ने में हमारी सैना में कोई लड़कर शोभा नहीं पा सक्ता क्योंकि.

दोहा ॥

प्रीति बिरोध समान सन, करिय नीति असआहि।
जो मृगपति बध मेंढकहि, भलो कहै को ताहि॥
यद्यपि लघुता राम कहँ, तोहिं बधे बड़ दोष।
तदपिकठिनदशकंठ सुनु, क्षत्रि जाति कर रोष॥

रावण— सोरठ ॥

कपि कर गुण बड़ एक, जो प्रतिपालै तासु हित।
करै उपाय अनेक, नाचि कूदि अरु लाज हरि॥

चौपाई ॥

अङ्गद स्वामिभक्त तव जाती। प्रभुगुण कस न कहौ यहिभाँती॥
मैं गुणगाहक परम सुजाना। तव कटुबचन करौं नहिंकाना॥

अङ्गद—हाँ हाँ तुम्हारी गुणगाहकताई तो हनूमान जी ने हमसे भलभाँति बताई है, क्योंकि पवनसुत ने आपकी बड़ी हानि किया सुत मारि बन उजारि पुर जारिदिया परन्तु आपने उनका कुछ अपकार न किया यही तो सुन कर हमने भी तुमसे बात करने का बिचार किया और.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौपाई ॥

देखेउँ आय जो कछु कपि भाषा। तुम्हरे लाज न रोष न माषा॥

रावण-(क्रोध करि) जो ऐसी मति न होती तो अपन बाप को क्यों खालेते.

अङ्गद- दोहा॥

मैं खातेउँ दशकन्ध तोहिं, समुझि परा कछु मोहिं।
पितु यश भाजन जानिके, शठ छाँड़त हौं तोहिं॥

कबित्त॥

कहु तो संसार बीच रावण कै बार भये साँचही उचार की बताऊँ तोहिं खलरे। बलि पहँ सिधार एक रारि करन मन बिचार खायो शिशुमार तो बचायो जाय बलिरे॥ एक को निहारि जन्तु लीन्ह सहस बाहु धारि छाँड़ेव जब ऋषि पुलस्त्य बिनय कीन्ह भलरे। एक को पिता हमार राख्यो अपनी कँखारि अर्द्ध साल बीते पर त्याग्यो जानि मलरे॥

दोहा॥

यक परनारि चुराय कै, छार कीन्ह निज भौन।
इतने रावण मैं सुने, तिन महँ शठ तू कौन॥

रावण- कबित्त॥

क्योंरे गँवार कहा ठानत बक बार बार लीन्ह्यों कैलास धार अपने भुज बलरे। निजकर निज शिर उतार पूज्यों शिव अमित बार बीरता हमार जानि उमा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शम्भु भलरे ॥ मेरो बल अति अपार काँपत दिगपाल झार कीन्हे मुष्टिक प्रहार सकत नासँभलरे ॥ धरणी नहिं सहत भार रोकि लेहुँ सिन्धुधार सोई मैं रावण हूं सुनु लबार खलरे ॥

दोहा ॥

तेहि रावण कहँ लघु कहसि, नर कर करसिबखान।
रे कपि बरबर खर्ब खल, तब नजानअबजान ॥

अङ्गद-(क्रोध करि)

पद थेटर ॥

कैसे नरों में राम को अन्ध तू गनावही।
काहे को बैठे बैठे रे मौत को बोलावही ॥
छूटेंगे उनके बाण जब, कहु बचावै कौन तब,
राम के बिरोध में ठौर तू न पावही ॥ कैसे नरों० ॥
काटैंगे तेरे शीश जो, खेलैंगे गेंद कीश सो,
तब तो ये गाल मारना, तेरा न काम आवही ॥कैसे नरों०॥
तुझको बताया मूढ़रे, मैंने ये मन्त्र गूढ़रे,
तेरी तो मत में हैं उपल, नेक न सीख भावही ॥ कैसे नरों में राम को अन्ध तू गनावही ॥

रावण- थेटर ॥

मेरे समान को बली शठ क्यों न रे बतावही।
आई है तेरी मौत क्या ऐसी जो बक लगावही ॥
कुम्भकर्ण बन्धु मोर, पुत्र जोर है न थोर,
भुजबल मम अति अपार, कोउ न पार पावही ॥मेरे०॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जोर के कीश भालु को, बाँध्यो है सिन्धु जाल को,
ताही से बीर होगये, जिनका सुयश तु गावही॥मेरे०॥
बीस हैं सिन्धु मेरे कर, बल का अगाध नीर भर,
कौन जो करसकै समर, कैसे उबर के जावही ॥ मेरे
समान को बली शठ क्यों न रे बतावही ॥

दोहा ॥

शूर कौन रावण सरिस, शक्र काटि निज शीश।
हुते अनल महँ बार बहु, हर्षित साखि गिरीश ॥

चौपाई ॥

जरत बिलोक्यों जबहिं कपाला।बिधि के लिखे अङ्क निज भाला
नरके कर आपन बध बाँची।हँस्यों जानि बिधिगिरा असाँची॥
सो मन समुझि त्रास नहिं मोरे। लिखा बिरंचि जरठ के भोरे॥

और तू बारबार उनकी बड़ाई करता है क्या शूरों के यह काम हैं कि शत्रु से मिताई की प्रार्थना करें मुझे तो बीर नहीं भीरु जान पड़ते हैं.

अङ्गद–बस बस मुझे प्रकट होगया कि तुम्हारे सरीखा लाजवाला संसार में नहीं है और बीरता भी अच्छी पाई है जिसकी बड़ाई करते भी आपको लाज नहीं आई है भला यह भी कोई बहादुरी है, शिर काट डालना और पर्वतादि का उठाना तो नटों या बाज़ीगरों का काम है भला दीपक के पतङ्ग को भी बीर कहूँ क्योंकि वह तो अपना सकल शरीर अग्नि में भस्म करदेता है. और सुन.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

थेटर ॥

सुनिले बे अभिमानी निशिचर मैं न बसीठी आया हूँ ॥ अस बिचार रघुबीर पठायो, बार बार मोहिं कहि समुझायो, स्यार बधे यश सिंह न पायो, साइ बाणी मन लाया हूँ ॥ सुनिले० ॥ नाहिं तो करि मुखभंजन तेरा, केश पकरि मयतनया केरा, लै जात्यों सीतै यहि बेरा, प्रभु आज्ञा नहिं पाया हूँ ॥ सुनिले० ॥ जो न राम अपमानहि डरऊँ, तोहि देखत अस कौतुक करऊँ, गहि भुज बीस शीश दश हरहूँ, तौ बाली को जाया हूँ ॥ सुनिले० ॥ मुये बधे कछु यश नहिं होहीं, जीवित कौन कहै शठ तोहीं, अब जनि रिसि उपजावसि मोहीं, बहु बिधि तोहिं समुझाया हूँ ॥ सुनिले बे अभिमानी निशिचर मैं न बसीठी आया हूँ ॥

रावण— थेटर ॥

चुप रहुरे अज्ञानी बन्दर तेरी बहुत सहि आया हूँ ॥ रे रे पोच मरण क्यों ठानी, छोटे बदन कहै बड़ि बानी, जिन को बल बहु बार बखानी, उनको यश सुनि पाया हूँ ॥ चुप रहुरे० ॥ अगुण जानि पितु दीन्ह निकारी, तिय दुख तापै मम भय भारी, मेरो नाम सुने न सुरारी, जीत इन्द्र जम लाया हूँ ॥ चुप रहुरे० ॥ जिन बल गर्ब अहै तोहि पाहीं, नित अस मनुज निशाचर खाहीं, भालु कीश केहि लेखे माहीं, तिनसों क्या भय खाया हूँ ॥ चुप रहुरे० ॥ दुष्ट कीन्ह तैं बहुत ढिठाई, सीखे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

एती कहाँ झुठाई, बालि कीन्ह नहिं कबहु खुटाई, तेरे में जो पाया हूँ ॥ चुप रहुरे अज्ञानी बन्दर तेरी बहुत सहि आया हूँ ॥

अङ्गद–(क्रोध करि)

चौपाई ॥

सन्निपात जल्पसि दुर्बादा। भयसि कालबश खल मनुजादा॥
याको फल पावहुगे आगे। बानर भालु चपेटन लागे॥
राम मनुज बोलत अस बानी। गिरहि न तव रसना अभिमानी॥

सोरठ ॥

तव शोणित की प्यास, तृषित रामशायक निकर।
तजेउँ तोहिं तेहि आस, कटुजल्पसि निशिचरअधम॥

(ऐसा कहकर अङ्गद का पृथ्वीपर हाथ दै मारना रावण के मुकुटों का गिरपड़ना अङ्गद का चारिमुकुट उठाकर रामके पास फेंक देना)

रावण–(क्रोधकर)

थ्येटर ॥

लेहु भागि जावैना ये लबार कीशरे। अङ्ग २ तोरि फोरि काटि लेहु शीशरे॥ खाय खाय भालु कीश महि करो अकीशरे। बाँधि लावो जीवतै दोउ नर कपीश रे॥ लेहु भागि जावैना ये लबार कीशरे॥

अङ्गद–– चौपाई ॥

सांचहु मैं लबार दशशीशा। जो न उखारौं तव भुज बीशा॥
(पैर रोपि) जो मम चरण सकहु शठ टारी।
फिरहिं राम सीता मैं हारी॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रावण- दोहा ॥

मेरु हलावन घन गरज, बहु सोवन घननाद।
पद गहि पटकहु कीश कहँ, बकै बहुत दुर्बाद ॥

(बहुत से राक्षसोंका मिलकर अङ्गदका पैरउठाना
और अङ्गद का पैर न उठना क्रोधकरि
रावण का चरण उठाने को उठना
अङ्गद का पैर खींच लेना)

अङ्गद-अरे दुष्ट ! मेरे चरणों पर क्यों गिरता है रघुनाथजी के चरणों पर जाकर गिर जिसमें तेरे प्राण बचैं.

(रावण का लज्जित हो सिंहासन पर बैठना
अङ्गद का प्रस्थान)

द्वितीयाङ्क * (दृश्य सुबेलशैल)

(रामचन्द्र सहित सुग्रीवादि बिराजमान हैं
अङ्गद के फेंके हुये रावण के मुकुटों
का आते देखि पड़ना.)

नील-अरे यह क्या लूक उठा है कि दिन को आकाश से तारे टूट रहे हैं.

मयंद-नहीं यह तो दक्षिण ओर से आते हैं जानि पड़ता है रावण ने अग्निबाण हमलोगों पर फेंका है.

राम-(डरो नहीं)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौपाई ॥

ये किरीट दशकन्धर केरे। आवत बालितनय के प्रेरे ॥

(हनूमानजी का कूदकर किरीटों को पकड़ रघुनाथजी के पास ला धरना रघुनाथजी का उनको यत्न से धरा देना)

तृतीयाङ्क * (दृश्य राजभवन)

(मन्दोदरी बिराजमान है रावण का प्रवेश)

दोहा ॥ (नैपथ्य)

साँझ जानि दशकन्ध जब, भवन गयो बिलखाय।
मन्दोदरि निशिचरपतिहि, बहुरि कह्यो समुझाय ॥

मन्दोदरी— पद ॥

अपने मन में कंत बिचारो, कुमति आप क्यों धारे हैं। मनुज राम को किमि पिय जानो जिन बहु बीर संहारे हैं ॥ रेख लषण की लाँघि न पायो सकेहु न वा दिश जारे हैं। कौतुक लाँघि सिन्धु कपि आयो सभा तोरि मद गारे हैं ॥ रखवारे हति जारि नगर को अक्षय-कुमार बिदारे हैं। शिवको दण्ड कठिन उन भंज्यो तिलभरि तुम नहिं टारे हैं ॥ का तब बल न रहा प्रभु तुम्हरे बृथा गाल अब मारे हैं। शूर्पनखा की गति तुम देखी खर दूषण बधि डारे हैं ॥ ताको पुनि पुनि मनुज कहत हौ ये तो काल तुम्हारे हैं। अजहूँ समुझि पिया सिय दीजै तौ अहिवात हमारे हैं ॥

रावण—तुमको तो रोज यही डर लगा रहता है.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(रावण का प्रस्थान)

तृतीयाङ्क * (दृश्य सुबेलशैल)

(रामचन्द्र सैनायुत बिराजमान हैं अङ्गद का प्रवेश सबको प्रणामकर बैठना)

राम–तात रावण का बल त्रैलोक में बिख्यात है और उसके सैना भी बहुत है भला तुमने उसके मुकुट किस प्रकार पाये जो यहाँ पठाये.

अङ्गद–(हाथजोरि)

कबित्त ॥

सुनिये खरारी सब जीवन हितकारी ये क्रीट नाहिं भारी गुण भूपति के चारी हैं। साम दाम प्यारी दंड भेद अधिकारी नृप नीति धर्मधारी के बेदहू उचारी हैं॥ रावण ब्यभिचारी मद मांस को अहारी पद बिमुख बिचारी तब कीन्ह इत तयारी हैं। असुर रिपु निहारी आय चरण शीश डारी अब लीजिये उबारी नाथ शरण में तिहारी हैं॥

दोहा॥ (नैपथ्य)

परम चतुरता श्रवण सुनि, बिहँसे राम उदार।
समाचार तब सब कहे, गढ़ के बालिकुमार॥

राम–पुत्र लङ्का के समाचार तो बतावो.

अङ्गद– दोहा॥

जानि लई कछु बल नहीं, है दशकन्ध लबार।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रभु सेवक को एक पद, सकैव न कोऊ टार॥
चारि द्वार गढ़ लङ्क के, सुभट रहैं रखवार।
प्रभु प्रताप यक निमिष महँ, करैं कीश जरञ्जार॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

रिपु के समाचार जब पाये। राम सचिव सब निकट बुलाये॥

राम-(सेनायूथपों से)

चौपाई॥

लङ्का बङ्का चारि दुआरा। केहि विधि लाँघियकरौ विचारा॥

जाम्बवन्त-महाराज लङ्का में चार द्वार हैं तो हम अभी सब सेना से चारों द्वार घेरे लेते हैं. (अङ्गद से) युवराज आप अपनी सेना लेकर सहित मयंद और गयंद के दक्षिण द्वार पर जाइये.

(अङ्गद का सेना लेकर जाना)

जाम्बवन्त-(हनूमान से) बायुसुवन आप सेन सहित पश्चिम द्वार पर जाइये.

(हनूमान का सेना लेकर जाना)

जाम्बवन्त-(नल नील से) तुम दोनों भाई सेन सहित पूर्व ओर रहो.

नील-वहुत अच्छा.

जाम्बवन्त-अब रहा उत्तर द्वार.

राम-तो उत्तर द्वार पर हम रहैंगे.

सुग्रीव-और हम सब की सहायता करैंगे.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(सब बानरों का लङ्का को घेर लेना)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

गर्जहिं तर्जहिं भालु कपीशा। जय रघुबीर कोशलाधीशा ॥
लङ्का भयो कोलाहल भारी। सुनेहुदशाननअतिहिहुँकारी॥

तृतीयाङ्क * (दृश्य राजसभा)

रावण–(मन्त्रियों से) अरे यह क्या कोलाहल हो रहा है.

महोदर–महाराज बानरों ने लङ्का को चारों ओर से घेर लिया है अब लङ्का से निकलने का कोई रास्ता नहीं है आपभी कोई उपाय करैं.

रावण–(हँसकर) भला हम बानरों के वास्ते क्या उपाय करैं अरे

पद ॥

विधि घर बैठे भोजन दीन्हा भूखे निशिचर धावोरे।
चारिहु ओर जाय द्वारन पर भालु कीश सब खावोरे ॥

तृतीयाङ्क * (दृश्य रणभूमि)

(रावण की आज्ञा पाय भारी राक्षसों का लड़ने जाना और बानरों से लड़ाई होना बहुत से राक्षसों का मरना और बहुतों का भागना)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

चले तमीचर निकर पराई। प्रबल पवन जिमि घनसमुदाई॥
हाहाकार भयो पुर भारी। रोवहिं आरत बालक नारी ॥
सबमिलिदेहिं रावणहिंगारी। राज करत यहिं मृत्यु हँकारी ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(सब राक्षसों का रोना)

सब राक्षस- थेटर ॥

है कैसी बिपति बुलाया तूने अधम तोहिं नहिं लाज॥

१-हम पर इसने आफ़त डाला,
२-इसका करै ईश मुहँ काला,
३-मेरा सभी भाँति घर घाला, भाई चलो छोड़ यह राज ॥ है कैसी० ॥

१-राज करत येह मौत हँकारा,
२-हरि आनी रघुपति की दारा,
३-कीश भालु को दियो अहारा, हम सब को बे काज ॥ है कैसी० ॥

१-घर में बैठे खाते थे हम,
२-लड़ने कभी न जाते थे हम,
३-दूरि से युक्ति बताते थे हम, अब तो पड़ि गई गाज ॥
है कैसी बिपति बुलाया तूने अधम तोहिं नहिं लाज॥

तृतीयाङ्क * (दृश्य राजसभा)

रावण-(मन्त्रियों से) आज के युद्ध के समाचार क्या हैं और यह कोलाहल कैसा है.

महोदर-महाराज ! आज बहुत से राक्षस मारे गये हैं और बहुत भागि आये हैं.

रावण-क्या रण से पीठ देखाकर भागे हैं.

महोदर-हाँ.

रावण-अच्छा जाकर सब से मेरा हुक्म सुना आवो.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दोहा ॥

सर्बस खायो भोग करि, समर भज्यो लै प्राण।
जेहिरणबिमुखबिलोकिहौं, हतौं ताहि निजबाण ॥

(मेघनाद का रावण को क्रोधित देख खड़े होकर)

मेघनाद- सोरठ ॥

पितु कस करत खँभार, होत प्रात रण बेष करि।
करिहौं युद्ध अपार, कहत थोरि करिहौं बहुत ॥

रावण-पुत्र क्यों न हो, बीरों के यही काम हैं.

(सब का प्रस्थान)

तृतीयाङ्क * (दृश्य रणभूमि)

(रामदल का युद्ध के वास्ते तय्यार होना
मेघनाद का ससैन प्रवेश)

मेघनाद-(गर्जि कर)

दोहा ॥

कहाँ राम लछिमन कहाँ, कहँ सुग्रीव कपिन्द।
कहँ अङ्गद हनुमत छली, कहाँ बिभीषण मन्द ॥

(मेघनाद का रथारूढ़ बानरों से युद्ध करना
बानरों का बहुत राक्षसों को मारना
मेघनाद का आकाश में जाकर
बाणों की वृष्टि करना बानरों
का बिकल हो भागना.)

लक्ष्मण-(राम से)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दोहा ॥

खल मायाबी अति छली, आवत नहिं कपि हाथ ।
आयसु दीजै नाथ मोहिं, युद्ध करूँ यहि साथ ॥

राम—अच्छा जाउ.

(लक्ष्मणजी का धनुष बाण लै मेघनाद से युद्ध करना मेघनाद का मूर्च्छित होजाना बानरों का रामचन्द्र की जय बोलना मेघनाद का सचेत हो रथपर बैठि लक्ष्मणजी के शक्तिशूल मारना लक्ष्मणजी का मूर्च्छित हो पृथ्वीपर गिरपड़ना)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

मूर्च्छा भई साँग के लागे । पुनि उठिगयो निकट भयत्यागे ॥

(मेघनाद का लक्ष्मणजी को उठाना और न उठने से लज्जित हो प्रस्थान हनूमानजी का लक्ष्मण जी को उठाकर राम समीप लाना रामचन्द्र का लक्ष्मणजी को देखि बिकल होना जाम्बवन्त का समुझाना)

जाम्बवन्त— दोहा ॥

धरिय धीर रघुबीर मन, लखन कुशल भय नाहिं ।
लङ्का बैद्य सुखेन यक, बुलवाइय तेहि काहिं ॥

राम—(हनूमान से)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दोहा॥

सुनहु पवनसुत तुमहि बिन, कौन मोर हितकार।
आनिय बैद्य सुखेन को, तुरत तात यहि बार॥

हनूमान–जो आज्ञा.

(हनूमानजी का लङ्का जाय सुखेन को सहित भवन उठा लाना)

सुखेन–(नाड़ी देखि) महाराज कोई शंका की बात नहीं है शक्ति के प्रभाव से लक्ष्मणजी के मूर्च्छा आगई है हनूमानजी को भेजकर द्रोण पर्वत पर से संजीवनी मँगाना चाहिये परन्तु आज ही रात्रि में आना चाहिये नहीं फिर सूर्योदय होने से रोग असाध्य होजावैगा.

राम–(हनूमान से)

सवैया॥

मेरे तो एक तुम्हीं हनुमान हौ आन न और हितू जग माहीं। तव यश गान करौं केहि आनन शोधि सिया सब शोक मिटाहीं॥ बीर लखौ यहि बेर को कष्ट परे क्षिति बन्धु बिलोकि न जाहीं। आनि सजीवनि प्राण को दान दे भानु उदै सब कार्य नसाहीं॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

रामचरणसरसिज उर राखी। चल्यो प्रभंजनसुत बल भाखी॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हनूमान- कबित्त॥

आयसु जो पाऊँ एक पल माहिं जाऊँ नाथ कौतुक देखाऊँ सह शैल इति लाऊँ मैं। भानु को लुकाऊँ रैनि युग सों बनाऊँ कहो शशि को दबाऊँ सुधा खैंचि कै पियाऊँ मैं॥ यम खाय जाऊँ कैधौं मृत्युही बँधाऊँ लाय स्वर्ग नर्क ढाऊँ कहौ यमपुरै पटाऊँ मैं। सौहँ तोरि खाऊँ जो पै एतो ना देखाऊँ करि सामुहे न आऊँ बायुपूत ना कहाऊँ मैं॥

राम-बत्स! तुम्हारा पराक्रम ऐसाही है.

(हनूमानजी का प्रस्थान)

तृतीयाङ्क * (दृश्य राजदर्बार)

(रावण मन्त्रियोंयुत बिराजमान है एक दूत का प्रवेश)

दूत-(घबराया हुवा) महाराज आज के संग्राम में मेघनाद ने लक्ष्मण के शक्ति मार सम्पूर्ण बानरी सेना को पछाड़ दिया था और आशा थी कि हमारी जीत होजाती परन्तु सुखेन के बतलाने से वही दुष्ट बन्दर जिसने लङ्का जलाया था द्रोण पर्बत पर संजीवनी लेने जाता है.

रावण-अच्छा जावो मैं कोई उपाय करता हूँ.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(दूत का प्रस्थान)

तृतीयाङ्क * (दृश्य कालनेमिभवन)

(कालनेमि एक राक्षस बिराजमान है, रावण का प्रवेश)

रावण-(कालनेमि को प्रणाम कर) भाई कालनेमि आज के संग्राम में मेघनादने लक्ष्मण के शक्ति मारी है जिसके प्रभाव से प्रातःकाल वह मर जावैगा और लड़ाई का अन्त भी होजावैगा। परन्तु मैंने सुना है कि हनूमान् द्रोणपर्बत पर औषधि लेने जाता है यदि वह औषधि लै आवैगा तो फिर लक्ष्मण जी जायगा इस वास्ते मैं तुम्हारे पास आया हूँ कि तुम माया में श्रेष्ठ हो कोई ऐसा उपाय करो जिसमें आज रात्रि को हनूमान् औषधि न ला सकै.

कालनेमि- दोहा॥

का जल्पहु दशकन्ध तुम, हरिगइ बुद्धि तुम्हार।
तुम देखत जेहि पुर दह्यो, तेहि को रोकनहार॥
अहंकार ममता तजो, भजो जाय रघुनाथ।
सपनेहु समर न जीतिहो, उनसन तुमदशमाथ॥

रावण- दोहा॥

का समुझावत मूढ़ मोहिं, बहुतक गइस मोटाय।
आज्ञा मोरि न मानहीं, लेहौं शीश कटाय॥

कालनेमि-(डरकर) महाराज जाता हूँ.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(सब का प्रस्थान)

तृतीयाङ्क * (दृश्य मार्ग)

चौपाई॥ (नैपथ्य)

असकहि चला रचिसमग माया। सर मन्दिर बर बाग बनाया॥
मारुतसुतदेखातेहि आश्रम। मुनिहिबूझिजलपियोंजायश्रम॥

(कालनेमि एक सुन्दर बाटिका में सरोवर के निकट मुनिरूप से बिराजमान है, हनूमान् का प्रवेश)

हनूमान्-(स्वतः) यह तो कोई मुनि का स्थान है मैं जाकर दर्शन करूँ और प्यास भी लगी है थोड़ा जल भी पिऊँ (निकट जाय) मुनीश! प्रणाम.

कालनेमि-(नेत्र खोल) हनूमान तुम धन्य हो और रघुनाथजी धन्य हैं आज के युद्ध के समाचार मैं सब ज्ञानदृष्टि से जानता हूँ लक्ष्मण जी के मेघनाद ने शक्ति मारी है तुम औषधि लेने द्रोण पर्बत पर जाते हो कोई चिन्ता नहीं है राम की जीत होगी.

हनूमान्-(स्वतः) वाह यह तो बड़े अच्छे मुनि हैं इनसे तो ज्ञान सीखना चाहिये (प्रकट) मुनीश! मुझे भी चेला कर लीजिये.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कालनेमि–अच्छा तो है फिर तुमको एकही ठौर बैठे सम्पूर्ण पृथ्वी के समाचार मिला करेंगे.

हनूमान्–महाराज मुझे प्यास लगी है.

कालनेमि–लो कमंडल में जल है.

हनूमान्–इतने जल में मेरा पेट न भरैगा.

कालनेमि– दोहा ॥

सलिल पूरि सरवर लखहु, करहु जाय जल पान।
श्रम निवारि पुनि आवहू, तुमहिं सिखाऊँ ज्ञान॥

हनूमान्–बहुत अच्छा.

(हनूमान् का सरोवर में पैर रखना, मगरी का दिव्यरूप से आकाश में जाकर कहना)

मगरी– दोहा ॥

मैं निःपापिनि भइउँ कपि, पायों दरश तुम्हार।
मुनि न होय यह घोरखल, मृषा न बचन हमार॥

(मगरी का प्रस्थान)

हनूमान्–(मुनि समीप आय)

थेटर ॥

गुरुपूजा मुनि लेलो पहले पीछे देना ज्ञान। (गला दबाकर) रामदूत से छल करि बाबा क्यों खोता है जान-अपनी क्यों खोता है जान॥ गुरु० ॥ (पटक कर) एक पटकना और सम्हालो मिलै नहीं हर आन-बाबा मिलै नहीं हर आन॥ गुरु० ॥ जलदी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मर बे दूर है जाना क्यों करता हैरान-मुझको क्यों करता हैरान ॥ (तमाँचा मारि) मरता नहीं तमाँचे खाता कैसा है शैतान-अब तू कैसा है शैतान ॥ गुरु० ॥

(कालनेमि को मारकर हनूमान् का प्रस्थान)

तृतीयाङ्क * (दृश्य द्रोणपर्बत)

(हनूमान्जी का प्रबेश और औषधि ढूंढ़ना)

हनूमान्-(स्वतः) इस में तो औषधि नहीं मिलती इस दुष्ट को उखाड़ ले चलूँ.

(हनूमान् का पर्वत उखाड़ ले चलना)

तृतीयाङ्क. * (दृश्य नंदिग्राम)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

गहिगिर निशनभ धावत भयऊ। अवधपुरी ऊपर कपि गयऊ॥

(भरतजी कुशासन पर बिराजमान हैं, हनूमान् का पर्बत लिये प्रबेश)

भरत-(स्वतः) क्या यह कोई घोर राक्षस जारहा है रामचन्द्र के बन जाने से इस दुष्ट ने अयोध्या शून्य बिचारि कुछ उपद्रव का साहस कर तो नहीं आया है (हाथ में एक सींक लेकर मारना हनूमान् का मूर्च्छितहो राम २ कहि गिर पड़ना)

भरत-यह तो कोई रामभक्त जान पड़ता है मैंने बड़ा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पाप किया (निकट जाय) हे कपीश! मेरे अपराधों को क्षमा करि उठिये.

(हनूमान्जी का सचेत न होना)

भरत-(ब्याकुल हो.)

चौपाई॥

जेहिबिधिरामबिमुखमोहिंकीना।तेहिपुनियहदारुणदुखदीना।
जो मेरे मन बच अरु काया। प्रीति रामपद कमल अमाया॥
तौ कपिहोउ बिगत श्रमशूला। जो मोपर रघुपति अनुकूला॥

(हनूमान् का सचेत हो राम २ कहना, भरतजी का हृदय से लगाना)

भरत-कपिराज! आप कौन हैं और रात्री में इस पर्वत को कहाँ और किसहेतु लिये जाते हैं॥

हनूमान्-स्वामी मैं रामचन्द्रका किंकर हनूमान् हूँ.

भरत-(पुनः हृदय से लगाय)

चौपाई॥

तातकुशलकहुसुखनिधानकी। सहितअनुजअरुमातजानकी॥

हनूमान्- सवैया॥

नाथ बड़ी बिपदा रघुनाथपै या क्षण लङ्कमें आनिपरीहै।
पञ्चबटी से हठी दशकन्धर मातु सिया कहँ जाय हरीहै॥
ठानेउ महारण कारणसो घननादहि लक्ष्मण मूर्छिकरीहै।
होत प्रभात जियें नहिं तात सजीवन तो मम पासधरीहै॥

भरत-(बिकल हो)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौपाई ॥

अहह दैव मैं कत जग जायों। प्रभु के एकौ काज न आयों॥
तात गहरु होइहि तोहिं जाता। काज नसाइहि होत प्रभाता॥
चढु मम शायक शैल समेता। पठवौं तोहिं जहँ कृपानिकेता॥

हनूमान्–(स्वतः) आयँ क्या मेरे बोझ को बाण सहिसक्ता है (कुछ विचार) नहीं २ श्री रघुनाथजी का प्रताप बली है मैं क्या विचार करता हूँ (प्रकट)

चौपाई ॥

तव प्रताप उर राखि गुसाईं। जैहौं नाथ बाण की नाईं॥

(भरतजीके चरणोंपर गिरकर हनूमान्‌का प्रस्थान)

तृतीयाङ्क * (दृश्य रणभूमि)

(सुग्रीव, अङ्गद, नल नीलादि बानर बिराजमान हैं रामचन्द्र के गोद में लक्ष्मणजी पड़े हैं, सुखेन नाड़ी देखरहे हैं)

राम–(रात अधिक ब्यतीत देखि रोदनकर)

छन्द ॥

मोहिं कबहुँ दुखित न देखि सक तुम आज का मन आयहू। हित लागि मम तज मातु पितु बहु कष्ट कानन पायहू ॥ सुत नारि बित परिवार जग में होहिं बारम्बारहीं । पुनि बन्धु तुमसम मिलहि नहिं जेहि सुयश बेद उचारहीं ॥ जिमि फणिक मणिबिन मीन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जलबिन हीन जीवन जानिये। तिमि दीन तुम बिन भ्रातहूँ मैं उठि न मोहिं सनमानिये॥ नारि हितु प्रिय बन्धु खोयहुँ सुयश भा मोहिं बिध भली। अब सूझि कछु मोकहँ परत नहिं जाहुँ कहँ कौनी गली॥ निज मातु के मैं एक सुत तुम ताके प्राण अधार हो। गहि बाहँ मोकहँ तुमहिं प्यारे सौंपि बारम्बार सो॥ अब काह उत्तर देब ताकहँ अवध में मैं जायके। कुशल सों हौं लौटि आयहुँ नारि बन्धु गवाँय के॥

दोहा॥

कौन भाँति धीरज धरूँ, आये नहिं हनुमान।
हूक उठत हियमें अधिक, जस जस निश औसान॥

(सहित सैन्य रामचन्द्रका ब्याकुल होजाना हनूमान्‌जी का प्रबेश रामचन्द्रका उठकर हनूमान् को गले से लगाना, सुखेन का औषधि ढूंढ़ लक्ष्मणजी को देना, लक्ष्मणजी का चैतन्य होना, सबका जय बोलना, देवतों का पुष्पबृष्टि कर नगाड़े बजाना)

लक्ष्मण—(उठिकर) कहाँ है मेघनाद अभी दुष्ट को यमपुर भेजूं.

(रामका समीप बैठालेना)

चतुर्थाङ्क * (दृश्य राजदर्बार)

(रावण बिराजमान है इधर उधर मन्त्रियों के समूह बैठे हैं, नगाड़ेका शब्द सुनकर)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रावण—(मन्त्रियों से) क्या यह मेरी जय के नगाड़े बजते हैं.

मन्त्री—महाराज! यह नगाड़े तो लक्ष्मण के सजीव होने के उत्साह में देवतों ने बजाये हैं.

रावण—तो क्या लक्ष्मण जीउठा.

मन्त्री—जीहाँ उसी कपिकी सहायता से संजीवनी आगई.

रावण—(माथेपर हाथधरि स्वतः) मुझे क्या करना चाहिये और किसे युद्धको भेजूं जो इन दुष्टोंको मारे (कुछ शोचि) अच्छा मैं कुम्भकर्ण को जगाऊं तो कार्य ठीकहो.

चतुर्थाङ्क * (दृश्य शयनागार)

(कुम्भकर्ण का सैनकरते देखाई देना, बहुत से राक्षसों युत रावणका कुम्भकर्ण को जगाने का उपाय करना, कुम्भकर्ण का अँगड़ाई लेकर उठना, रावणका उसके मुख में अनेकों घट मदिरा डालना)

रावण—भाई उठो अब सोचुके.

कुम्भकर्ण—भाई साहेब आप कुछ मलीन देखि पड़ते हैं.

रावण—कुम्भकर्ण क्या कहैं इस समय जो विपत्ति लङ्का में है उसके कहने से हृदय बिदीर्ण होता है.

कुम्भकर्ण—बिपत्ति कैसी.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रावण- कबित्त॥

कोई राम सहित बाम बन्धु तासु लषण नाम द-
एडक कीन्हो मुकाम अवध धाम जाये हैं। सूर्पनखा
पुष्पहेत गवनी सोई निकेत बिनाहेत सेंतमेत नासिका
कटाये हैं॥ दूखन खर गे गुहार कीन्ह्यो तिनको सँ-
हार पुनि हम सुनि तेहि पुकार छीन नारि लाये हैं।
आये लै सो कीश भालु मम भटभे कौरकाल देखि
भ्रात लङ्कहाल बिपति जाल छाये हैं॥

दोहा॥

अब योधा नहिं लखि परै, कोई लङ्क मँझार।
मोहि भरोसा है बड़ो, भ्राता एक तुम्हार॥

दोहा॥ (नैपथ्य)

दशकन्धर के बचन सुनि, कुम्भकरण बिलखान।
राम रूप गुण बीरता, बहुबिध कीन्ह बखान॥

कुम्भकरण- कवित्त॥

हरिके तुम जक्कमात चाहत कुशलात भ्रात
कीन्ह्यो नहिं नीकबात कौनधौं सिखाये हैं। कैसे नर
रामजानि दूत जासु हनूमान जाहिर यश सब जहान
शिव विरंचि गाये हैं॥ नारद मोहिं दीन्ह ज्ञान तुमसे
कहत्यों बखान करिके सब बंशहानि मोहिं क्यों ज-
गाये हैं। भेंट अंक तात आय राम शरण जाहुँ धाय
देखों पद कमलजाय लोचन ललचाये हैं॥

चौपाई॥

तुमहुँ तात त्यागहु अभिमाना। भजहु राम होइहि कल्याना॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(कुम्भकर्ण का ध्यान में होजाना रावण का मदिरा पिलाकर उसकी बुद्धि भ्रष्ट कर देना)

कुम्भकर्ण–कार्य तो आपने अच्छा नहीं किया परन्तु क्या करूं अब बिना युद्ध में गये आपकी इच्छा कैसे पूरी होगी मैं जाताहूँ.

(कुम्भकर्णका अकेले युद्धको जाना)

चौपाई॥ (नैपथ्य)

कुम्भकरण दुर्मद रण रङ्गा। चला दुर्ग ताजि सैन न सङ्गा॥

चतुर्थाङ्क * (दृश्य रणभूमि)

चौपाई॥ (नैपथ्य)

देखि बिभीषण आगे आवा। भ्राताचरण शीश तेहि नावा॥

(सुग्रीव राम लक्ष्मणादि बिराजमान हैं कुम्भकर्णका प्रवेश बिभीषणका आगे आय प्रणाम करना)

कुम्भकर्ण–तुम कौन हो.

बिभीषण–मैं बिभीषणहूँ रावण ने लातमार कर निकाल दिया मैंने तो उसके हितकी बात कही थी अब रघुनाथजी की शरण में हूँ.

कुम्भकर्ण–धन्य हो बिभीषण तुमने राक्षसकुल का उबार किया, रावण कालबश है इससे उस की मति भ्रष्ट है.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दोहा ॥

मन बच कर्म कपट तजि, भजौ तात रघुबीर।
जाहु न निज पर सूझि कछु, भयों काल बश बीर ॥

(बिभीषण का राम के निकट आय)

बिभीषण- चौपाई ॥

नाथ भूधरा कार शरीरा। कुम्भकर्ण आवत रणधीरा।

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

इतना कपिन सुना जब काना। किलकिलाय धाये हनुमाना॥

(बानरों का हूहा शब्द करि चारों ओर से वृक्ष पर्वतादि बरसाना अनेकों बानरोंका कुम्भकर्ण के अङ्ग में लिपट जाना कुम्भकर्ण का बानरों को पटकना सुग्रीवका कुम्भकर्ण के नासिका द्वारा प्रवेश करना कुम्भकर्ण का जोरसे छींक के साथ सुग्रीव को लङ्का की ओर फेंकदेना सुग्रीव का भाग कर राम के निकट आना)

कुम्भकर्ण-(चिल्लाकर)

दोहा ॥

रे कपि पति छल करि भजे, आयों मैं तव काल।
कहाँ राम लछिमन कहाँ, जिनके उर मम शाल ॥

राम-(बानरों को बिकल देखि)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दोहा॥

सुनहु बिभीषण लखन सह, सकल सँभारहु सैन।
मैं देखहुँ खलबल दलहिं, बोलत बढ़ि २ बैन॥

(रामचन्द्र का धनुष टंकार कर घोर युद्ध करना कुम्भकर्ण का राम के ऊपर गदा प्रहार करना रामका एक बाण से गदा के दो टुकुड़े कर देना कुम्भकर्ण का एक पर्बत रामचन्द्रको मारने के हेत उठाना रामका उसकी भुजा काटदेना और एक बाण से शीश काटि लङ्का की ओर फेंक देना देवतोंका जय शब्द करना)

पञ्चमाङ्क * दृश्य राजभवन

(रावण दर्बार में बिराजमान है कुम्भकर्ण का कटा शीश रावण के आगे गिरना)

रावण-(शीश देखि)

ग़ज़ल॥

कित को सिधारे बन्धु तुम मुझको अकेला छोड़कर।
छाई बिपति लङ्का में है तुम चलदिये मुँह मोड़कर॥
लखि तुम्हारे बलको प्यारे काँपते थे सुर असुर।
आज सोइ सुख सेज सोवैं भय हमारा तोड़ कर॥
हाय भ्रात बताव मोकहँ काकरूँ मैं यहि समय।
बीर नहिं कोउ अब रहा जो रण करै दल जोड़ कर॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तोहिं कुसमय में जगायों सुधि न की बिधि बानि की।
भगवान की माया प्रबल मम मतिहरी भ्रम तोड़कर॥

(रावण का रोदन सुनि मेघनाद का प्रवेश)

मेघनाद–पिताजी आप इतना बिलाप क्यों करते हैं अब तो समर होही रहाहै प्रातःकाल मेरी बीरता देखियेगा जो बरदान मैंने ब्रह्माजी से पाया था और अबतक आप से नहीं बताया था जिससे चौदहों भवन को एक क्षण में नाश कर सक्ताहूँ यह नर बानर किस लेख में हैं इनको एक एक करके मारूँगा और आपका शोक निवारूँगा.

रावण–(प्रसन्नहो) वाह पुत्र क्यों न हो तुम्हारेही बलपर तो यह ठान ठना है.

(सबका प्रस्थान)

इति श्रीरामरसामृतसागरनाटके सकलकलिकलुषविध्वंसने श्रीरामेश्वरस्थापनाद्यो कुम्भकर्णबधपर्य्यन्त नाम नवमो भाग समाप्तः॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

श्रीगणेशाय नमः ॥

रामरसामृतसागर नाटक ॥

दशम भाग ॥

दोहा ॥ (नैपथ्य)

श्री संसारा ईश जग, बन्दौं बारम्बार ।
रामरसामृत पूर्ण करि, जगमें करों पसार ॥
बन्दौं श्री जलजा चरण, गिरिजा सहित महेश ।
लषण शत्रुसूदन भरत, बन्दौं श्री अवधेश ॥
कथा शक्रजित बधनकी, करन चहौं मैं गान ।
रक्षा कीजे शेषजी, श्री करलै धनु बान ॥

प्रथमाङ्क * (दृश्य रणभूमि)

मेघनाद का वानरों से युद्ध करते देखि पड़ना वानरों का मेघनादको मूर्च्छित करदेना मेघ-नाद का भागकर यज्ञस्थल में जाना)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

तुरतगयोसोगिरिवरकन्दर । करनअजयमखअसमनहठधर ॥

प्रथमाङ्क * (दृश्य सुबेल शैल)

(राम लक्ष्मण सुग्रीवादि विराजमान हैं बिभीषण का राम निकट आय)

बिभीषण- छन्द ॥

महाराज घननाद आज ठान्यो मख सोई ।
सिद्धि होय जो कहूँ जीति पावै नहिं कोई ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तीन लोक दशचार भुवन को दुष्ट सतावै।
ताते कीजे यतन यज्ञ यह होन न पावै॥

दोहा॥

जो मख पूरण होगई, तव सुनिये सर्कार।
सुर मुनि महिकपि भालुकहँ, ह्वैहै कठिन उबार॥

राम—(वानरों से)

दोहा॥

अङ्गद औ नलनील तुम, सह कपीश हनुमान।
लक्ष्मण सँग लै ऋक्षपति, कीजै वेग पयान॥
सखा बिभीषण आपहू, सहित सेन सँग जाय।
शठ की यज्ञ विध्वंस में, कीजे लखन सहाय॥

चौपाई॥

तुम लक्ष्मण रण मार्यो ओही। देखि सभय सुर अतिडरमोही॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

जब रघुवीर दीन्ह अनुशासन। कटिनिषंगकरबाणशरासन॥
प्रभु प्रताप उर धरि रणधीरा। बोले घन इव गिरा गँभीरा॥

लक्ष्मण— कवित्त॥

सुनिये रघुवंश हंस वंश अवतंस आज दुष्ट की विध्वंस यज्ञ दूसरी रचाऊँ मैं। बाणन सों काटि जात धानन को अस्थि चाम मखबल बनाय काग स्वानन खिलाऊँ मैं॥ मेघनाद शीश मीस करिहौं जगदीश कुण्ड कीश शब्द मन्त्र पूर्ण आहुति दिलाऊँ मैं। शङ्कर अज आय जो सहाय करैं धाय धाय कहूँ शपथ खाय ताहि यमपुर पठाऊँ मैं॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दोहा ॥

प्रण मेरो रघुनाथ यह, जो न बधौं घननाद।
तौ रघुवर किंकर न मैं, कर धनु शर है बाद ॥

(लक्ष्मण का सहित सैन प्रस्थान)

प्रथमाङ्क * (दृश्य यज्ञस्थान)

(मेघनाद का यज्ञ करना राक्षसों का चारों ओर खड़ा होना लक्ष्मण का सहित सेनप्रवेश हनूमान् का यज्ञ की सामग्री भाजन सहित फैंक देना मेघनादका क्रोधकर हथियार लै दौड़ना लक्ष्मण का घोरयुद्धकरना इन्द्रका वानररूपसे लक्ष्मण को ब्रह्मास्त्र देना लक्ष्मणजीका ब्रह्मास्त्रसे मेघ-नाद का शीश काट देना देवतों का जय के नगाड़ेबजाना हनूमान् जीका मेघनादका शिर उठाय सहित लक्ष्मण के जाना)

प्रथमाङ्क * (दृश्य सुबेल शैल)

(रामचन्द्र विराजमान हैं लक्ष्मण सहित हनूमान् मेघनाद का शिर लिये प्रवेश)

राम-(सब से मिलकर) लक्ष्मणजी आपके समान दूसरा भाई नहीं है जो आप नींद भूख और प्यास का व्रत न करते तो यह दुष्ट कैसे मारा जाता.

हनूमान्-स्वामी यह मेघनाद का शिर है.

राम-यह तो अति अद्भुत है इसे यत्न से रखदो.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रथमाङ्क * (दृश्य राजमंदिर)

(रावण विराजमान है एक दूत का प्रवेश)

दूत-(रोकर) दोहा॥

बीरन सों सूनी भई, लङ्क पुरी सरकार।
मेघनाद जूझे समर, लक्ष्मण बाण प्रहार॥

(रावण का हा शब्द कर सिंहासन से गिर पड़ना राक्षसोंका सचेत करना रावणका मन्दोदरी के समीप जाय रोदन करना)

रावण- छन्द॥

हाय सुत का गयहु कहि रण का सँदेश सुनायहू।

मन्दोदरी- छन्द॥

पुत्र काहे अन्त में नहिं मात मुख देखरायहू॥

रावण- छन्द॥

हाय प्यारे कौन बिधि अब राखों मन को धीर दै।

मन्दोदरी- छन्द॥

कौन लोक कहाँ गयो सुत का मनै रिस लायहू॥

रावण- छन्द॥

हा बिभीषण जगत् दूषण भल न तैं कीन्हे कछू।

मन्दोदरी- छन्द॥

लङ्कराज के लोभ बश ह्वै कुल सकल बधवायहू॥

रावण- छन्द॥

अब न मोकहँ लखिपरै कोउ लङ्क महँ तो सम बली।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मन्दोदरी- छन्द ॥

नारि के हित नारि सम घर बैठ बंश नशायहू ॥

(रावण का मूर्च्छित होजाना राक्षसों का सचेत कर दरबार को लेजाना)

प्रथमाङ्क * (दृश्य मेघनादभवन)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

अब सो सुनहु भुजा तेहि केरी। खगजिमिगई लङ्क शरप्रेरी ॥
मेघनाद आँगन महँ परी। बाण बेधि शोणिततन भरी ॥

(सुलोचना विराजमान है दासी समीप में खड़ी हैं एक अन्य दासी का प्रवेश)

दासी-महारानी साहेब! आँगन में एक भुजा बाण से बिधी हुई पड़ी है मुझको तो अपने स्वामीकी जान पड़ती है.

सुलोचना-(सहमकर) चल देखूँ तो (भुज समीप आय पति भुज पहिचान खरिया मिट्टी देकर कहना) यदि मैं सच्ची पतिव्रता हूं तो हे भुजा! तुम अपना हाल इस खरियासे लिखो.

(भुजा का लिखना सुलोचना का पढ़ना)

कवित्त ॥

कौन और रामके समान जग माहिं अहै ठौर२ की-रति बटोर यश छायो है। कालहु के काल शेष शारदा बखान करैं पालब सँहारब ये कौतुक सुहायो है ॥ दोऊ अबिनाशी दोऊ अलख अखंड बीर अतुल प्रभाव बेद

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पार नाहिं पायो है। तासु लघु भ्रात जासु लखन सो लाल नाम तीव्र शर मार मोहिं पाप सों छुड़ायो है॥

चौपाई॥

मम शिर गयो जहाँ रघुराई। तव प्रतीत लगि भुजा पठाई॥

सुलोचना-(पृथ्वी पर गिर)

ग़ज़ल॥

मुझको अकेली तजिके कितको बलम सिधारे।
अब होगई मैं दुखिया किसके रहूँ सहारे॥
जम इन्द्रकाल सुर सब डरते थे तुमको स्वामी।
क्यों आज रण में सोते नर वानरों के मारे॥
कैसी कठोर छाती तेरी हुई बिभीषण।
नहिं नेक तर्स खाया सब बंश को कटारे॥
सुखसे उवो शशी रबि अब त्रास किसकि करते।
बन्दी छुटीं सभी की सुर गण हुये सुखारे॥
नदियो बहो धरणि में जिस बेग से हो इच्छा।
जो रोकते थे तुम को वह राम घर पधारे॥
पावक प्रचंड हूजे बहिये समीर सुख सों।
अब वह नहीं हैं जग में जिनका था डर तुम्हारे॥

(सुलोचना का अचेत होजाना दासियों का सचेत करना)

दासी-महारानी जो कुछ होना था वह तो हुआ अब धैर्य्य धरो.

सुलोचना-दासियो शिविका लावो.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(दासियों का डोली लाना सुलोचना का सवार हो प्रस्थान)

प्रथमाङ्क * (दृश्य रावणसभा)

(रावण मन्त्रियोंयुत विराजमान है सुलोचना का प्रवेश)

सुलोचना-(रावण से)

चौपाई॥

तुमहिंजियतअसदशा हमारी। सुखतजिभईशोकअधिकारी॥

दोहा॥

आई पतिभुज मम भवन, शीश जहाँ रघुनाथ।
मैं उन सँग ह्वै हौं सती, आनि देव दशमाथ॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

सुनत कुलिशसम गिरा बधूकी। जीवनआसदशाननमूकी॥
यदपिबयनसुनिअतिखिसियाना।तदपिधीरधरिकरतबखाना॥

रावण- दोहा॥

राम लषन सुग्रीव नल, नील द्विविद हनुमन्त।
साथ बिभीषण ऋषभकर, आनब मारि तुरन्त॥

चौपाई॥

अब लगि रह्यो भरोसा भारी। कुम्भकरण घननाद सुरारी॥
तजहु शोक कुल बधू पतोहू। उन समान जनि मानहु मोहू॥
आनि शीश तव शत्रुन केरा। बिन प्रयास नहिं लाउब बेरा॥

दोहा॥ (नैपथ्य)

तुरतहि उठी सुलोचना, गइ मयतनया पास।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पद गहि रोवत सकल कहि, प्रकट शोक इतिहास॥

प्रथमाङ्क * (दृश्य राजभवन)

(मन्दोदरी विराजमान हैं सुलोचना का प्रवेश)

सुलोचना-(चरणों पर गिरि)

पद॥

मातु मोपै परे दुख भारे। नाथ मेरे गये रण में मारे॥
मम जीवन धिक संसारा। रह्यो मेरो न प्राण अधारा॥
गयो शीश जहाँ रघुराई। भुज मेरे भवन चलि आई॥
दशकन्धर कीन्ह न काना। बोलै अबहूँ बचन अभिमाना॥
मोहिं दीजिय शीशमँगाई। देहौं पति सँग प्राण गँवाई॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

सुनि निजपुत्र बधू की बानी। बोली दुखित मँदोदरि रानी॥

मन्दोदरी- चौपाई॥

अब पुत्री परिहरि सब शोका। पति सँग बेगि साधुपरलोका॥
जाहु राम पहँ पति शिरलागी। तजिसङ्कोच आनिकिन माँगी॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

बार बार चरणन शिर नाई। चली जहाँ लछिमन रघुराई॥

प्रथमाङ्क * (दृश्य सुवेल शैल)

(राम लक्ष्मण सहित सुग्रीवादि विराजमान हैं)

नल-(डोली देखि वानरों से) भाइयो! लङ्का की ओर से एक डोली आ रही है.

नील-जान पड़ता है मेघनाद के मरने से रावण के कान हुये जानकी जी को भेज दिया.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

द्विविद–अच्छा हुआ लड़ाई भी मिट गई और बिना परिश्रम ही जीत होगई.

(डोली का राम के निकट उतरना सुलोचना का राम रूप देखि हाथ जोड़ि खड़ी होना)

विभीषण–(राम से)

दोहा॥

पुत्र बधू दशकन्ध की, मेघनाद की नार।
पतिव्रता यह सम नहीं, आई शरण पुकार॥

राम–क्यों आई हो और क्या चाहती हो.

सुलोचना– दोहा॥

मुये जानि पति भुजहि तब, लिखि समुझाई मोहिं।
महाराज रघुबंश मणि, जाँचन आई तोहिं॥
तुम त्रिभुवन त्रय लोक के, दूसर और न कोय।
काहि पुकारूँ छाँड़ तोहिं, सत्य नाम प्रभु होय॥

सवैया॥

जाऊँ कहाँ तजि रावरे पाँय बिथा अपनी कहो काहि सुनाऊँ। नाऊँ न माथ जो मैं जगनाथ के नात कहो केहि साथ लगाऊँ॥ गाऊँ कहाँ लौं कथा दुख की औ कहाँ लौं हिये में दवारि छिपाऊँ। पाऊँ जो शीश सुनो जगदीश तौ ह्वै कै सती मैं पती पहँ जाऊँ॥

चौपाई॥ (नैपथ्य)

करुणा वचन सुनत रघुवीरा। पुलकि राम भे शिथिल शरीरा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

राम- चौपाई ॥

देहुँ जियाय तोर पति आजू। लङ्का करहु कल्प शत राजू ॥
छाँड़ि सोच अत्र मन हरषाहू। तुरत भवन अपने फिरि जाहू ॥

सुलोचना-हे नाथ! मैं पतिका जीवन अब नहीं चाहती केवल शीश पाऊँ तो सती होकर इस संसार से छूटि जाऊँ.

राम-(सुग्रीव से) कपिराज मेघनाद का शिर मँगवा दो.

सुग्रीव-(शिर सामने धरि) नाथ! भुज का लिखना आश्चर्य जान पड़ता है इसमें कुछ भेद है यदि यह शिर हँसै तो ठीक है नहीं तो राक्षसी माया है.

(सुलोचना का शिर से विनय करना शिर का हँसना सुलोचना का शिर लै चिता रचि सती हो जाना)

द्वितीयाङ्क * (दृश्य शिवमन्दिर)

(रावण अकेला शिवमन्दिर में विराजमान हैं)

चौपाई ॥ (नैपथ्य)

मन्त्राकर्षण जपि दश भाला। अहिरावण चित डोल पताला ॥

(रावण का कुछ शोचि आकर्षण मन्त्र जपना अहिरावण का प्रवेश)

अहिरावण-(प्रणाम कर) लङ्केश कुशल तो है क्यों याद किया.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रावण–कुशल तो पूछिये नहीं.

अहिरावण–क्यों क्या हुवा जो आप अधीर वचन बोलते हैं.

रावण–अधीर होने का कारण सुनिये कोई अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र राम लक्ष्मण सहित जानकी वन में आये हैं उन्होंने शूर्पणखा की नाक कान काट खरदूषण का वध करदिया तब मैं उनकी स्त्री हरिलाया फिर हनूमान् वानरने आकर लङ्का फूंक दिया कुम्भकर्ण मेघनादादि सब वीरों का नाश होगया अब ऐसा उपाय करो जिसमें शत्रु का नाश हो तो मेरा क्लेश दूर हो.

अहिरावण– सवैया॥

ठीक कहूं नहिं नीक किहौ तुम नीति को त्याग अ-नीति गहे हौ। ठानि के रार बिचार बिना परिवार को नाश कराय रहे हौ॥ जान्यो प्रभाव न राघव को सब ते बड़ ते नर कैसे कहे हौ। वै हनुमान अबौं लघु जानत देखत तौ जेहि लङ्क दहे हौ॥

चौपाई॥

यदपिनयोगमोहिंअसबाता। तदपिहरहुँ तवलगि दोउभ्राता॥
लै पताल देविहि बलि देहौं। यश पूरण निश्चरकुल लेहौं॥
लै जैहौं तुम जानेउ तबहीं। रविसमतेज होय निशिजबहीं॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दोहा ॥ (नैपथ्य)

कहि अस वचन प्रबोध करि, शीश नाय बलभाखि।
आयो रघुपति कटक तब, निजदेविहि उरराखि ॥

(अहिरावण का प्रस्थान)

द्वितीयाङ्क * (दृश्य रणभूमि)

(हनूमान्‌जी का अपनी पूंछ का कोट बनाय खड़े होना राम लक्ष्मण का वानरोंयुत शयन करना विभीषण का कोट के बाहर पहरा देना अहिरावण का आकाश मार्ग आय सब को देख विभीषण रूप धारि हनूमान्‌जी के निकट आना)

अहिरावण विभीषण रूप से–हे हनुमान्‌जी ! मुझे भीतर जाने दो.

हनूमान्–विभीषण तुम इस समय कहां गये थे.

अहिरावण विभीषणरूप–मैं सन्ध्या करने गया था वहां पूजन में देर होगई बड़ी देर से राम लक्ष्मण को नहीं देखा चित्त घबड़ाता है और हे हनूमान् जी ! अँधियारी बहुत है तुम सजग रहना.

हनूमान्–(मार्ग दै) जाइये ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(अहिरावण का भीतर जाय मोहनमन्त्र पढ़ि सब वानरों को अचेत कर राम लक्ष्मण को सोते से उठा कन्धे पर चढ़ाकर आकाश में प्रकाश करतेहुये पाताल को ले जाना सब वानरों का उठना और राम लक्ष्मण को न देखि परस्पर पूछना)

सुग्रीव–क्यों भाई श्रीरघुनाथजी सहित लक्ष्मणजी कहां गये.

नीलादि–महाराज हम तो सो गये थे नहीं मालूम कहां गये.

(राम लक्ष्मण के पता न लगने पर सबका विकल हो जाना विभीषण का प्रवेश सबको सचेत कर हनूमान्जी से पूछना.)

विभीषण–हनूमान्जी ! कोई आया तो नहीं था.

हनूमान्–विभीषणजी सिवाय आपके और कोई नहीं आया.

विभीषण–मैं कब आया हूँ.

हनूमान्–अभी १ घंटा हुआ जब आप सन्ध्या करके तो आये थे.

विभीषण–अरे बड़ा धोखा हुआ अहिरावण श्रीरघुनाथजी को लेगया रावणने उसे भेजा होगा क्योंकि मेरा रूप सिवाय उसके और कोई नहीं बनासक्ता और वह पातालमें रहताहै.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौपाई॥

जेहि बल होय तहां सो जाई। ताहि जीति आनै दोउ भाई॥

जाम्बवन्त—(हनूमान् से)

दोहा॥

बल तुम्हार विख्यात जग, पवनतनय बलवान।
करिउपाय प्रभुलाइये, राखिय सबके प्रान॥

सुग्रीव— दोहा॥

तव माया अति प्रबल है, सुनु मारुतसुत तात।
बिनरघुनायक जन्म धिक, पलयुग सरिसबिहात॥

हनूमान—हे महाराज! धैर्य्य धरिये मैं जाता हूं आप यहाँ सब कार्य्य सँभारियेगा.

(हनूमान् का प्रणामकर प्रस्थान)

द्वितीयाङ्क * (दृश्य वन)

(एक वृक्षपर गृद्ध गृद्धिनी बैठे हैं हनूमान्का श्रमित हो उसी वृक्ष के नीचे प्रवेश)

गृद्धिनी—(गृद्धसे) मेरी इच्छा मनुष्यके मांस खाने की है कहीं से लादो.

गृद्ध—मैं तुमको आज बहुत स्वादिष्ठ मनुष्य का मांस लादूँगा अरे अहिरावण आज दो राजकुमार अति कोमल जिनका नाम राम लक्ष्मण है लाया है

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(अहिरा[illegible]
[illegible] यह देवी को बलि देगा मैं किसी यत्न से तुम्हें थोड़ा मांस ला दूँगा.

हनूमान्-(स्वतः) अब तो मुझे ठीक समाचार मिल गये जल्दी जाना चाहिये.

(हनूमान् का प्रस्थान)

द्वितीयाङ्क * (दृश्य राजद्वार)

(मकरध्वज गदा लिये द्वार पर खड़ा है हनूमान् का प्रवेश.)

मकरध्वज-(हनूमान् से)

चौपाई ॥

निदर जात मोहिं तोहिं डर नाहीं। दीपहिं जिमि न पतङ्ग डेराहीं ॥
जानेसि मोहिं न मरुतसुत बालक। स्वामि भक्त भंजन मुख कालक ॥

हनूमान्-अरे दुष्ट तू मेरा पुत्र बनकर मुझे झूठा कलंक क्यों लगाता है मेरी मति तो कभी काम वश नहीं हुई और न मेरा विवाह ही हुवा तू कहां से हुवा.

मकरध्वज-जब आपने लङ्का दाह करि समुद्र में पूँछ बुझाई थी तब आपका स्वेद मेरी माता ने जो एक मछली है पीलिया था उसी से मेरी उत्पत्ति है.

हनूमान्-तो पुत्र बतावो तुम्हारा राजा हमारे स्वामी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

राम लक्ष्मण को हरलायाहै सो क्या
और कहांहै.

मकरध्वज–पिताजी ! हमारे राजा इस समय देवी की पूजा करते हैं अब दोनों बालकों को बलि देंगे.

(हनूमान्‌जी का भीतर चलना)

मकरध्वज–पिताजी जाते कहां हो हम विना अपने स्वामी की आज्ञा पाये भीतर न जाने देंगे.

(दोनोंसे युद्ध होना हनूमान्‌जीका मकरध्वज को उसकी पूँछमें बांध देना एक मालिनका प्रवेश)

मालिन–(शिरपर फूल की डाली लिये)

पद ॥

राजन घर जाउँ मैं तो पताल की मालिनियां। राजन ॥
फुलवा लै आऊँसबैकुछपाऊँमोरामोहनियां नावँ॥ राजन॥
मैं अलबेलीसजीलीरँगीलीखसमौकोनाहींडेरावँ॥राजन॥
पूजा करै नित राव हमारो मैं फुलवा चुनि लावँ ॥ राजन ॥

(हनूमान् जीका मसकरूप से मालिन की डाली में बैठ प्रवेश)

द्वितीयाङ्क * (दृश्य देवीमण्डप)

(सिंहासन पर देवी विराजमानहै पूजन सामग्री एकत्रहै अहिरावण का आकर देवी की पूजा करना और फूल चढ़ाना हनूमान्‌जी का देवी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(अहिरा
व ऊपर चढ़ि लातसे देवी को नीचे दाब
देना और आप देवीरूप धार देवीके स्थान
में बैठ सब पूजन की सामग्री भक्षणकरना)

अहिरावण-(राक्षसोंसे) आज देवी ने अपना प्रकट
रूप दिखाया है.

राक्षस-हां महाराज आज देवी बहुत प्रसन्न है देखिये
सब पूजनकी सामग्री प्रत्यक्ष ही भोजनकरतीहै.

अहिरावण-(राम लक्ष्मण से) राजकुमार तुम्हें जिसे
स्मरण करना हो करलो.

राम-(देवी को देखि)

दोहा॥

काल कौर तुम हो रहे, सुमिरहु कालहि काल।
रक्षक तव देवी भई, भक्षक सकल पताल॥

अहिरावण-(हाथ में खड्ग लेकर) राजकुमार देवी
के प्रणाम करो.

राम-हम क्षत्री हैं प्रणाम करना नहीं जानते तुम प्रणाम
करि हमको बतलावो तो हम प्रणाम करैंगे.

(अहिरावण का प्रणाम को शिर झुकाना हनूमान्
जीका प्रकटहो अहिरावण की खड्ग छीन उस
का शिर काट कुण्डमें डाल देना और राक्षसों
का हनूमान्जीसे युद्ध करना हनूमान्का सबको

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मार राम लक्ष्मण को कंधेपर चढ़ाल
द्वारपर मकरध्वज का मिलना उसको छोड़
पाताल का राजतिलककर जाना)

द्वितीयाङ्क * (दृश्य रणभूमि)

(सुग्रीवादि सब विकल बैठेहैं राम लक्ष्मणयुत हनूमान् का प्रवेश सबका उठि राम लक्ष्मण के चरणों पर गिरना रामका सबको हृदय से लगाना सबका जय शब्द करना)

इति श्रीरामरसामृतसागरनाटके सकलकालिकलुष-
विध्वंसने मेघनादयुद्धआदौ अहिरावणवध-
पर्यन्तनाम दशमो भागः समाप्तः

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor